संवाद ही लोकतंत्र की आत्मा है

हरियाणा संवाद

नवंबर -जनवरी 2018 www.haryanasamvad.gov.in मूल्यः 15 रुपए, वार्षिक 150 रुपए पृष्ठ 1-52

गीता पूरे विश्व के लिए आध्यात्मिक दीप स्तंभ

चर्चा में है इन दिनों 'राखीगढ़ी'

जब मानुषी ने जीता विश्व सुंदरी का खिताब

एशिया कप में महिला व पुरुष वर्ग की शानदार जीत

साल तीन बेहतरीन

वर्तमान सरकार की जन-कल्याणकारी नीतियों की बदौलत आज हरियाणा विकास की नई बुलन्दियों को छू रहा है। प्रदेश को अग्रिम पंक्ति में बनाए रखने के लिए 'शासन कम-सुशासन अधिकतम' की भावना पर कार्य किया जा रहा है। 'सबका साथ-सबका विकास' की भावना के साथ सभी वर्गों के हित के लिए नित नई योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं। विकास एवं जन कल्याण द्वारा हरियाणा प्रदेश को देश के मानचित्र पर प्रथम पंक्ति में लाना ही हमारा ध्येय है।

मनोहर लाल, मुख्यमंत्री, हरियाणा

शासन कम-से-कम सुशासन अधिकतम

सीएम विंडो पर 3,73,139 शिकायतों व सुझावों में से 3,21,729 का समाधान

सेवा का अधिकार अधिनियम-2014 के तहत 273 सेवाएं अधिसूचित

ई-दिशा एवं अटल सेवा केन्द्रों के माध्यम से 281 ई-सर्विसिज़

9984 स्थापित सांझा सेवा केन्द्रों में से 4979 में सेवाएं शुरू

ज़मीन की ऑनलाइन खरीद-फरोख्त हेतु 'ई-भूमि' वेब पोर्टल

पुलिस विभाग में सिटीज़न पोर्टल हरसमय 24x7

व्यापारियों के लिए ई-रिफंड की ऑनलाइन सुविधा शुरू

समस्त राज्य पहली अप्रैल, 2017 से कैरोसिन मुक्त घोषित

अध्यापकों के लिए ऑनलाइन नई स्थानांतरण नीति लागू

नई पहल - नई दिशाएं

वर्तमान सरकार के कार्यकाल की उपलब्धियों की एक झलक

2017

हरियाणा पूर्णतया खुले में शौच मुक्त
सार्वजनिक वितरण प्रणाली
स्वर्ण जयंती स्वच्छता पुरस्कार
स्वर्ण जयंती ग्रामीण विकास निधि योजना
दीनबंधु हरियाणा ग्राम उदय योजना
ई-भूमि वेबपोर्टल
मोटरसाइकिल एम्बुलेंस आरोग्य सेवा
गोल्डन जुबली खेल नर्सरियां

2016

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
राष्ट्रीय कृषि बाजार पोर्टल कार्यक्रम
प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना
स्वर्ण जयंती महाग्राम विकास योजना
स्वर्ण जयंती गुरु दर्शन यात्रा योजना
स्वर्ण जयंती ऋषि दर्शन यात्रा योजना
ऑनलाइन अध्यापक स्थानान्तरण नीति
बिजली बिल जुर्माना माफी योजना
मुख्यमंत्री सामाजिक सुरक्षा योजना
ई-बिज़ पोर्टल
दीन-दयाल जन आवास योजना

2015

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम
सुकन्या समृद्धि खाता योजना
आपकी बेटी-हमारी बेटी योजना
ग्रवित ग्रामीण विकास तरुण योजना
हरियाणा खेल एवं शारीरिक उपयुक्तता नीति
सम्पत्ति का ई-रजिस्ट्रेशन
नई आबकारी नीति
ई-दिशा सेवाएं
प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना
प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना
प्रधानमंत्री आवास योजना
प्रधानमंत्री मुद्रा योजना
अटल पेंशन योजना
म्हारा गांव-जगमग गांव
आप्रेशन मुस्कान
हर घर हरियाली योजना
किसायक आदर्श ग्राम योजना
हरियाणा कौशल विकास मिशन
राष्ट्रीय गोकुल मिशन
निवेश एवं उद्यम विकास नीति
थारी पेंशन-थारे पास योजना
गौ-वंश संरक्षण व गौ संवर्द्धन अधिनियम
ई-डैश बोर्ड
स्वदेश दर्शन योजना
एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना

2014

सांसद आदर्श ग्राम योजना
स्वच्छ हरियाणा स्वच्छ भारत अभियान
ई-पेंशन स्कीम
नई खनन नीति
सी.एम. विंडो व सी.एम. वेबपोर्टल

वरिष्ठ नागरिकों को सम्मान

- वृद्धावस्था में आय सुनिश्चित करने व असंगठित क्षेत्र के लोगों के लिए अटल पेंशन योजना

कमज़ोर वर्ग का उत्थान

- अनुसूचित जाति के कल्याणार्थ सराहनीय कार्य करने वाली पंचायतों को 50,000 रुपये की प्रोत्साहन राशि
- अनुसूचित जाति व पिछड़े वर्ग के उम्मीदवारों को विभिन्न उच्च प्रतियोगी/प्रवेश परीक्षाओं हेतु मुफ्त प्रशिक्षण
- हरियाणा विमुक्त घुमन्तु जाति विकास बोर्ड का गठन
- सभी श्रेणी के दिव्यांगों को जिला स्तर पर कृत्रिम अंग प्रदान

विवाह शगुन योजना

- मुख्यमंत्री विवाह शगुन योजना के तहत अनुसूचित/विमुक्त/टपरीवास/बीपीएल परिवार तथा सभी वर्ग की विधवाओं को उनकी लड़की की शादी हेतु 51,000 रुपये तक की वित्तीय सहायता
- मुख्यमंत्री सामाजिक समरसता अन्तर्जातीय विवाह योजना के तहत प्रोत्साहन राशि बढ़ाकर की 1,01,000 रुपये

शहीदों का मान

- युद्ध में शहीद सैनिकों व अर्द्धसैनिकों के आश्रितों को अनुग्रह राशि बढ़ाकर 50 लाख रुपये

आर्थिक-सामाजिक सुरक्षा

- सभी प्रकार की सामाजिक पेंशन बढ़ाकर 1600 रुपये मासिक
- 18 वर्ष तक के स्कूल न जा सकने वाले निःशक्त बच्चों को 1,000 रुपये मासिक वित्तीय सहायता
- डीबीटी के माध्यम से शत-प्रतिशत पेंशन सीधे लाभार्थियों के खाते में
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत गरीब परिवारों की महिलाओं को गैस कनैक्शन हेतु 1600 रुपये की वित्तीय सहायता

सभी के लिए घर

- आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों के लिए 11,259 ई. डब्ल्यू.एस. फ्लैट्स के निर्माण की मंजूरी
- प्रधानमंत्री आवास योजना 'मिशन सभी के लिए घर 2022' के तहत शहरी गरीबों के आवासीय ऋणों पर ब्याज दरों में 6.5 प्रतिशत रियायत

श्रमिक कल्याण

- वेबसाइट hrylabour.gov.in के माध्यम से योजनाओं का लाभ अधिक से अधिक श्रमिकों तक
- भवन एवं सन्निर्माण कल्याण बोर्ड में अपंजीकृत मजदूर की कार्यस्थल पर दुर्घटना में मृत्यु होने पर सहायता राशि बढ़ाकर 2.5 लाख रुपये
- निःशक्त श्रमिक पेंशन बढ़ाकर 3,000 रुपये मासिक करने की घोषणा

www.haryanacmoffice.gov.in https://twitter.com/cmohry
https://www.facebook.com/HaryanaCMO

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा

मनोहर सरकार - असरदार सरकार

हरियाणा संवाद

विकास एवं चेतना की मासिक पत्रिका
नवंबर-जनवरी 2018
वर्ष : 50, अंक 1
सूचना, जन संपर्क एवं भाषा विभाग की मासिक पत्रिका

सलाहकार संपादक

डॉ चंद्र त्रिखा

संपादकीय टीम

संगीता शर्मा
मोनिका गौतम
सुरेन्द्र सिंह मलिक

संपादन सहायक एवं फोटो पत्रकार

सुरेन्द्र बांसल

चित्रांकन एवं डिजाइनर

गुरप्रीत सिंह

डिजिटल सपोर्ट

विकास डांगी

फोटोग्राफर

विनय मलिक

समीर पाल सरो, भा.प्र.से. निदेशक, सूचना, जन संपर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा द्वारा हरियाणा सरकार के लिए कमरा नं. 314, दूसरी मंजिल, लघु सचिवालय, सेक्टर-1, पंचकूला से प्रकाशित।

कार्यालय : संवाद सोसायटी
एससीओ 23, पहली मंजिल, सेक्टर 7, चंडीगढ़
फोन : 0172-5055975, 5055979
email : editorsamvad@gmail.com
www. haryanasamvad.gov.in

मुद्रक : न्यू प्रिंट इंडिया प्रा. लि.
इंडस्ट्रियल एरिया, साहिबाबाद (गाजियाबाद)

'संवाद' पत्रिका का नियमित ग्राहक बनने के लिए अपने नाम एवं पते के साथ इसकी वार्षिक सदस्यता राशि 150 रुपये बैंक ड्राफ्ट के जरिए Joint Director Magazine के नाम निम्न पते पर भेजें: पीडब्ल्यूडी (बी एंड आर) बिल्डिंग, सेक्टर-19, चंडीगढ़।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: 0172-2722018, 2722019

संपादकीय

मिलकर चलें, कुछ कदम

कला,साहित्य व संस्कृति के क्षेत्र में हरियाणा का अपना वैशिष्ट्य रहा है। लगभग 51 वर्ष पूर्व इस प्रदेश का जब गठन हुआ था तब भी इन क्षेत्रों में ,पूर्ण सक्रियता बनी हुई थी, लेकिन उसे क्षेत्रीय पहचान नहीं मिल पाई थी।

अब स्थिति बदल चुकी है। प्रदेश ने सभी क्षेत्रों में अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित की है। कला संस्कृति व साहित्य के क्षेत्रों में यहां के कलाकारों व लेखकों ने राष्ट्रीय स्तर पर सृजन का एक नया संसार बुना है। इतिहास लेखन के क्षेत्र में भी हाशिए से मुख्यधारा तक की यात्रा तय हुई है। रोहतक, अम्बाला, कुरुक्षेत्र, जींद, रेवाड़ी, हिसार महेन्द्रगढ़, सिरसा, करनाल व पानीपत में विस्मृति को अविस्मरणीय कतार में शुमार किया गया है। भिति चित्रों, हवेलियों विध्वंस दुर्गों और पुरातात्विक खोज- अभियानों को शब्द मिले हैं।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी नए अभिनव प्रयोग सामने आए हैं। इन सबके साथ-साथ लोक कलाओं व लोक साहित्य के क्षेत्र में भी अभिनव संकलन सामने आए हैं।

ढेरों उपलब्धियां अब दर्ज हो रही हैं और स्थितियों के सही मूल्यांकन का सिलसिला भी चल निकला है। दरअसल कला संस्कृति व साहित्य मात्र बौद्धिक कवायद नहीं है। समाज को इनसे ऊर्जा भी मिलती है और दिशा भी। जब भी इस देश के अतीत पर दृष्टि जाती है तो ऐ अजब एहसास कुनमुनाने लगता है। महाभारत को ही लें। महर्षि वेद व्यास ने जब लगभग एक लाख श्लोकों पर आधारित इस ग्रंथ की रचना की तो सृजन का यह एक अनूठा प्रयोग था। यहां पूरे कथानक में स्वपिता स्वयं भी एक पात्र था। अपनी सक्रिय भूमिका के इलावा उसे तटस्थ होकर समूचे घटनाक्रम का लेखा-जोखा भी देना था। वह एक विकट स्थिति थी, जिसमें रचनाकार को अपनी भूमिका व अपने परिवेश की भूमिका पर तटस्थ भाव से विवरण को शब्द देने थे। चुनौती मात्र शब्द देने की नही साथ ही दार्शनिक व्याख्या भी दरकार थी।

ऐसी सृजनशीलता वाले प्रदेश की पहचान को पूरी गरिमा के साथ प्रस्तुत करना एक गंभीर चुनौती है। ढेरों संभावनाएं सामने हैं। संवाद के माध्यम से हम लोग इन संभावनाओं को मात्र जुगली व जुमलों तक सीमित नहीं रखेंगे। प्रयास करेंगे कि कुछ नए आयामों पर काम हो। यह प्रयास सामूहिक ही होगा और आपकी सक्रिय शिरकत के साथ ही कुछ कदम आगे बढ़ पाएंगे व आपसी सूझबूझ से उपलब्धियां दर्ज करेंगे हम सब, इसी उम्मीद के साथ।

संपादन, कला तथा मुद्रण व्यवस्था : संवाद सोसायटी के सौजन्य से

कृषि संवाद में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, विभाग का उनसे सहमत होना जरूरी नहीं है।
सभी न्यायिक विवादों का क्षेत्र पंचकूला न्यायालय होगा।

अनुक्रम

06

सरस्वती नदी का उद्गम स्थल- आदि बद्री

हरियाणा राज्य के उत्तर में जिला यमुनानगर में स्थित है आदि बद्री, जिसे मिथकीय नदी सरस्वती का उद्गम स्थल भी माना जाता है। लगभग 12 वर्ष पूर्व 'सरस्वती पुत्र' कहलाने वाले साहित्यकारों के एक दल .....

14

मनोहर प्रस्तुति के साथ संपन्न हुआ गीता महोत्सव

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने किया महोत्सव का आगाज

चर्चा में है इन दिनों 'राखीगढ़ी'	9
स्वतंत्रता आंदोलन में हरियाणा का योगदान	12
अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में प्रदर्शित हुई नायाब कलाकृतियां	17
कला ओर समाज एक दूसरे के बिना अधुरे:	19
मानुषी ने जीता विश्व सुंदरी का खिताब	21
एशिया कप में महिला व पुरुष वर्ग की शानदार जीत	36
लाखों की नौकरी छोड़, लगाया ठेला	39
भनकपुर गांव में राष्ट्रीय गान की गूंज	40
हमारा संविधान : क्या, क्यों और कैसे	43
वह बूढ़ा देवता	44

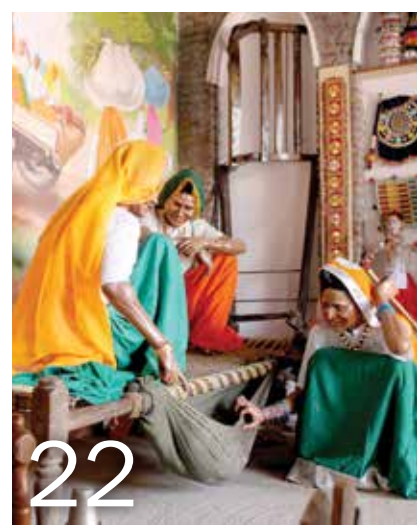

22

सांस्कृतिक विरासत को संजोता संग्राहलय

संग्राहलय के आकर्षण का केंद्र विश्व का सबसे बड़ा हुक्का

24

परिवेश की अनूठी पहचान छोड़ते राजकिशन नैन

बेहतर लेखन व छायांकन के लिए मिला सम्मान

> हमारी नैतिक प्रकृति जितनी उन्नत होती है, उतना ही उच्च हमारा प्रत्यक्ष अनुभव होता है, और उतनी ही हमारी इच्छा शक्ति अधिक बलवती होती है।
>
> स्वामी विवेकानंद

तीन साल में हुए क्रांतिकारी बदलाव

अधिकारियों के लिए हुआ मोटिवेशन सेशन

हरियाणा की खुशहाली से देश परिचित

हिंदी के बिना संभव नहीं हिन्दुस्तान का विकासःउप राष्ट्रपति एम.वेंकैया नायड

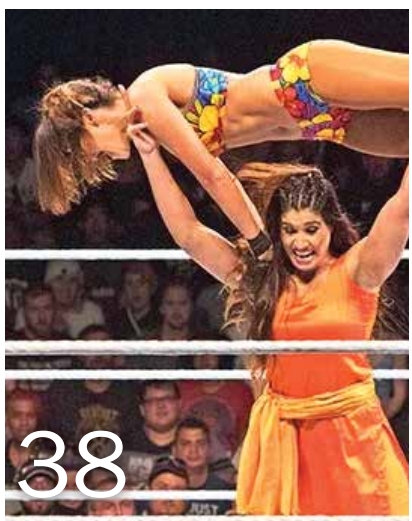

डब्ल्यूडब्ल्यूई में दाव-पेंच दिखाएगी म्हारी छोरी

डब्ल्यूडब्ल्यूई में प्रतिनिधित्व करने वाली देश की पहली महिला

पर्यटन विकास में हरियाणा को अवार्ड

इंडिया टुडे स्टेट ऑफ स्टेट्स कन्क्लेव-2017

हरियाणा विकास एवं चेतना की मासिक पत्रिका
संवाद

सरस्वती नदी का उद्गम स्थल- आदि बद्री

हरियाणा राज्य के उत्तर में जिला यमुनानगर में स्थित है आदि बद्री, जिसे मिथकीय नदी सरस्वती का उद्गम स्थल भी माना जाता है। लगभग 12 वर्ष पूर्व 'सरस्वती पुत्र' कहलाने वाले साहित्यकारों के एक दल के साथ मैं उस स्थान पर गया था, जहां तब का 'सरस्वती कुंड' अब सरस्वती सरोवर बन चुका है।

जगाधरी से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर शिवालिक की तलहटी में स्थित यह सरोवर अब, श्रद्धालुओं के इलावा, पुरातत्वविदों, शोधार्थियों, पर्यटकों व सरकारी विभागों की सक्रियता का प्रमुख केन्द्र बन चुका है। फिलहाल यह सरोवर 80×82 मीटर का ही है, लेकिन अब यहां स्नान घाट बन चुके हैं। ऊपर ही थोड़ी दूरी पर स्थित हैं आदिनारायण, केदारनाथ और शक्ति-मंत्रा देवी के भव्य मंदिर।

'त्रिवेणी' का अस्तित्व

यह सरोवर उन तीन पुरातात्विक स्थलों के करीब है, जहां भारतीय पुरातत्व विभाग और खुदाई एवं सर्वेक्षण का कार्य पूरे जोरों से चल हा है। इस खुदाई में 'सरस्वती-सभ्यता' के अनेक अवेशेषों के अलावा एक भव्य 'शिवलिंग' भी मिला है, जिसकी आयु चार से पांच हज़ार वर्ष पुरानी आंकी गई है। अब तक के शोध के आधार पर प्राथमिक रूप से यह निष्कर्ष तो निकाला ही गया है कि लगभग चार हजार वर्ष पूर्व आए ग्लेशियर-बदलावों में सतलुज और यमुना नदियों ने, पांवटा साहब (हिमाचल) के समीप सरस्वती नदी की जलधाराओं को भी अपनी जलधाराओं में विलीन कर लिया और बाद में यमुना की वही, सरस्वती-समाहित जलधाराएं प्रयाग की ओर बहने लगीं, जहां बाद में गंगा के साथ मिलन की

'त्रिवेणी' अस्तित्व में आई।

अनेकों कथाओं का केन्द्र

इस चर्चित सरस्वती-घाटी में लगभग 2000 पुरातात्विक स्थल ऐसे हैं, जहां उत्खनन हो रहा है या हो चुका है। आदि बद्री को 'श्री सरस्वती उद्गम-स्थल' तीर्थ के नाम से भी जाना जाता है। आदि बद्री ने बिल्कुल पड़ौस में ही लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है गांव काठगढ़, जो 'सरस्वती-सभ्यता' से जुड़ी अनेकों कथाओं का भी केन्द्र है। एक प्रचलित मान्यता यह भी है कि सतलुज में यह स्थल भगवान बद्रीनाथ अर्थात् भगवान विष्णु का निवास था और त्रेता व द्वापर में भी भगवान यहीं पर विराजते रहे। कलियुग के प्रारंभ होते हुए ही वह अपने नए श्रमण स्थल पर चले गए।

सृजनशीलता का स्रोत

सांब नदी के उत्तरी किनारे पर जगत गुरु शंकाराचार्य ने भगवान बद्रीनारायण अर्थात् भगवान विष्णु को समर्पित एक मंदिर का निर्माण कराया था, जो आज भी विद्यमान है। इसके समीप ही सम्राट विराट की सबसे छोटी बेटी, माता मन्त्रा देवी का मंदिर है। धार्मिक मान्यता यही है कि सरस्वती नदी, लापता होने से पूर्व यहीं से प्रकट हुई थी। पौराणिक आख्यान बताते हैं कि महर्षि उतथ्य के एक शाप के परिणाम स्वरूप नदी सूखने लगी थी। इससे पूर्व मान्यता यही थी कि यह नदी यश, कीर्ति, धन धान्य और सृजनशीलता का भी स्रोत था।

सरोवरों की प्रचुरता

महाभारत में ही प्राप्त विवरण के अनुसार सरस्वती नदी, वर्तमान यमुनानगर से थोड़ा ऊपर व शिवालिक पर्वत श्रृंखला से कुछ नीचे आदि बद्री नामक स्थान से बहती थी। अब इसी स्थल को एक तीर्थ का रूप

सूरजकुंड : हरियाणा का प्रमुख पर्यटन केंद्र

इसी फ़रीदाबाद का एक भाग है हरियाणा का प्रमुख पर्यटन केंद्र 'सूरजकुंड'। अब 'सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय हस्तशिल्प मेला' स्थल इसकी विशिष्ट पहचान बन गया है। गत वर्ष इस मेले को देखने आने वालों की संख्या 12 लाख का आंकड़ा पार कर गई थी। अरावली पर्वत श्रृंखला की पृष्ठभूमि के आगे स्थित सूरजकुंड का जलाशय 10वीं शताब्दी से जुड़ा है। 10वीं शताब्दी से इसे तोमरवंश के गुर्जर राजा सूरजपाल ने बनवाया था। वस्तुतः तोमर, सूर्य-भक्त था। इसी आस्था के चलते इस 'सूर्य-कुंड' जो आज सूरजकुंड के नाम से प्रचलित है, का निर्माण हुआ था। ऐसा ही एक 'सूरजकुंड' पंजाब के शहर सुनाम में था। इसे महमूद ग़ज़नवी ने तोड़-फोड़ डाला था। अब भी वहां सूर्य मंदिर के भग्नावशेष मौजूद हैं। दिल्ली से सूरजकुंड तक 43 प्राचीन स्थलों में हुई खुदाई ने यह तथ्य प्रमाणित किया है कि इस क्षेत्र का संबंध पाषाण-युग में भी रहा है। पुरातत्वविदों की मान्यता है कि प्रागैतिहासिक काल में यहां का पर्यावरण पाषाण युग की मानव सभ्यता के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना गया था। तोमर वंश के शासक पहले अरावली पर्वत श्रृंखला में बसे हुए थे। सूरजकुंड में आने के बाद उन्होंने सूर्यकुंड के निर्माण के साथ ही लालकोट में अपना किला भी बनाया। बाद में इसी किले को किला-राय पिथौरा कहा जाने लगा। फ़िरोज़शाह तुग़लक के शासन में यहां प्राचीन सूर्य मंदिर के समीप ही एक गढ़ी का भी निर्माण हुआ। यही गढ़ी सरोवर के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। कुछ इतिहासज्ञ यह भी दावा करते हैं कि इस सरोवर ने वर्ष 686 ईस्वी में कराया था। तोमर वंश तुग़लक वंश सब अतीत के गर्त में चले गए मगर सूरजकुंड आज भी मौजूद है। यहां पर्यटक भी आते हैं और आस्थावान श्रद्धालु भी।

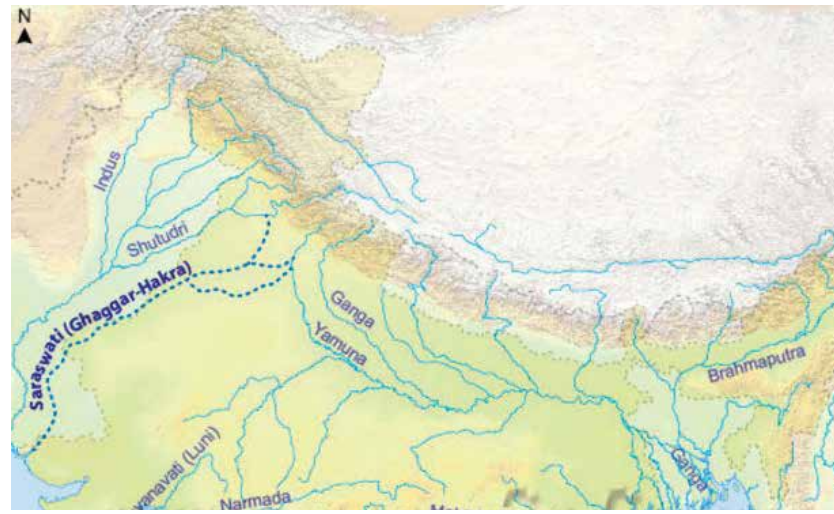

मिलने लगा है। मगर तथ्य यह भी है कि इस स्थल से बहने वाली पतली धाराएं ज़्यादा दूर तक नहीं जातीं। यदि महाभारत कालीन व वैदिक विवरणों को प्रामाणिक मानें तो कुरुक्षेत्र एवं ब्रह्मवर्त इसी नदी के किनारे स्थित था। भूगर्भवेताओं का कहना है कि नदी के सूखने पर, जिन स्थानों पर पानी गहरा रहा होता है, वहां जलाशय या सरोवर बन जाते हैं। इस क्षेत्र में व समीपस्थ पिहोवा क्षेत्र में अर्द्ध-चन्द्राकार तालाबों एवं सरोवरों की प्रचुरता है। ये सरोवर इस बात की पुष्टि तो करते ही हैं कि उस क्षेत्र में कभी एक विशाल नदी बहती थी।

रूपण ग्लेशियर, अब सरस्वती ग्लेशियर

भारतीय पुरातत्व परिषद के अनुसार सरस्वती का उद्गम उत्तरांचल में रूपण नाम के हिमनद (ग्लेशियर) से होता था। रूपण ग्लेशियर को अब सरस्वती ग्लेशियर भी कहा जाने लगा है। नैतवार में आकार यह हिमनद जल में परिवर्तित हो जाता था, फिर जलधारा के रूप में आदि बद्री तक सरस्वती बहकर आती थी और आगे चली जाती थी। वैज्ञानिक और भूगर्भीय खोजों से पता चला है कि किसी समय इस क्षेत्र में भीषण भूचाल आए, जिसके कारण जमीन के नीचे के पहाड़ ऊपर उठ गए और सरस्वती नदी का जल पीछे की ओर चला गया।

सरस्वती नदी की सहायक नदी

वैदिक काल में एक और नदी दृषद्वती का वर्णन भी आता है। यह सरस्वती नदी की सहायक नदी थी। यह भी हरियाणा से होकर बहती थी। कालांतर में जब भीषण भूकम्प आए और हरियाणा तथा राजस्थान की धरती के नीचे पहाड़ ऊपर उठे, तो नदियों के बहाव की दिशा बदल गई। दृषद्वती नदी, जो सरस्वती

वैज्ञानिक और भूगर्भवेताओं के शोध कार्यों ने कुछ अन्य निष्कर्ष

इस समूचे अंचल में लगभग 2000 स्थल ऐसे चिन्हित किए गए, जहां खुदाई का कार्य संपन्न हुआ। इस सारे शोध की विशद चर्चा, देश के प्रख्यात हिमनद-विशेषज्ञ (ग्लेशियोलिस्ट) डॉ. वी.एम.के. पुरी अपने निष्कर्षों में दी है। विभिन्न वैज्ञानिक और भूगर्भवेताओं के शोध कार्यों ने कुछ अन्य निष्कर्ष भी दिए हैं, जिनका संक्षिप्त रूप इस प्रकार है।

- लगभग 10 हज़ार वर्ष पूर्व यह जनपद, वैदिक सभ्यता का एक प्रमुख केन्द्र था।
- 19वीं व 20वीं शती में जितने भी शोध संपन्न हुए उन सभी में सरस्वती नदी के अस्तित्व को मान्यता दी गई।
- इन प्रमुख शोधार्थियों में राखाल बैनर्जी व दयाराम साहनी के इलावा मैक्समूलर, मार्क स्टीन, सी.एफ. ओल्डहम, जे. मैकेनतोश, क्रिस्टीट लैस्सन, अलेक्ज़ैन्डर कनिंघम व टैसीटोरी के नाम विशेष रूप में शामिल हैं।
- एक इतिहासकार राजेश कोचर ने 'सरस्वती' के चर्चित अतीत को अफ़गानिस्तान में बहने वाली हेलमंड नदी के साथ जोड़ दिया है। उसके निष्कर्षों के अनुसार यही नदी ही अतीत में 'सरस्वती' कहलाती थी।
- एक अन्य निष्कर्ष यह भी है कि उत्तराखंड के पश्चिमी गढ़वाल में नैतवार स्थित सरस्वती-रूपिन ग्लेशियर के बंदा पूंछ स्रोत से यह नदी निकलती थी जो आदि बद्री, भवानीपुर, बालचापुर आदि स्थलों से होती हुई, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान व गुजरात के मैदानी क्षेत्रों से गुज़र कर कच्छ के रन के समीप अरब सागर में समाहित होती थी। इस निष्कर्ष की गवाही के रूप में राजस्थान के थार मरुस्थल में अरावली पर्वत शृंखला के समानांतर ही ज़मीन में दबी मिली जल-निकासी प्रणाली का उल्लेख किया जाता है।
- वैसे 1870 में एक भूगर्भ-विशेषज्ञ अलैक्स रोजर्स ने भी एक अज्ञात नदी के अस्तित्व को स्वीकारा था और उसी के कुछेक निष्कर्षों को 1886 में ब्रिटिश अधिकारी एवं पुरातत्व विशेषज्ञ ओल्डहम ने, आधार बनाया और कुछ नए तथ्यों का खुलासा किया। ओल्डहम ने एक मौसमी व सूख चुकी नदी के, घग्घर में विस्तार का पता लगाया था।
- पिछली शताब्दी के 9वें दशक की शुरुआत में इस क्षेत्र में 'भाभा एटामिक रिसर्च केन्द्र' के कुछ वैज्ञानिकों ने 'कार्बन डेटिंग तकनीक' के माध्यम से कुछ ऐसे तथ्यों का पता लगाया, जिनके लगभग 35 हज़ार वर्ष इस क्षेत्र में एक नदी की विद्यमानता के प्रमाण मिले।
- लगभग चार दशक पूर्व, 1972 के आसपास उपग्रह से प्राप्त सूचनाओं व साक्ष्यों के आधार पर एक विलुप्त नदी के प्रमाण मिले।
- सन् 2001 में भी गुजरात-भूकंप के मध्य कच्छ के रन में अनेक सरोवरों के अस्तित्व में आने से भी 'सरस्वती' संबंधी बहस के मुद्दे उठे। इसरो ने भी 2013 में 'सैटेलाइट-डाटा' के आधार पर कुछ नए निष्कर्ष दिए। सभी निष्कर्षों में 'सरस्वती' के विलोप होने के कारणों की भी निशानदेही हुई।
- एक सर्वसहमत कारण यह भी है कि राजस्थान पंजाब व हरियाणा में अनेक भूकंप व भूगर्भ बदलावों के कारण ज़मीनें कहीं-कहीं टीलों व छोटी-छोटी पहाड़ियों में बदल गई। सरस्वती की धाराएं कुछ स्थानों पर पीछे की ओर खिसक गईं तो कुछ स्थानों पर दूसरी नदियों में मिल गईं।
- सरस्वती में यमुना की जो धाराएं मिलती थीं, उनके बहाव की दिशा उत्तर से पूर्व की ओर बदल गई। पहले वह चम्बल की सहायक नदी के रूप में सामने आई, बाद में प्रयाग में गंगा में जाकर मिल गई।
- एक सार्थक निष्कर्ष यह भी है कि ऐसी किसी भी शोध परियोजना से यदि छिपे जल भंडारों का सत्य उजागर होता है तो इससे न केवल पेयजल संकट से कुछ हद तक मुक्ति मिल सकती है बल्कि निरंतर गिरते जल स्तर के संकट से मुक्ति का नया रास्ता भी प्रशस्त हो सकता है। 1999 में गंगा बेसिन के उत्तरी इलाकों में तेल की खोज के लिए लगाए गए ड्रिलिंग-कुएं ऐसे प्रमाण दे चुके हैं और उनके वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर लाल कुआं (यूपी-काशीपुर), पीलीभीत तथा रक्सौल-गनौली (बिहार) आदि की निशानेदही भी हुई है।
- वैसे भी इस तरह के अभियान से पुरातत्व व पर्यटन के क्षेत्र में भी अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियां दर्ज हो सकती हैं।

नदी की सहायक नदी थी, उत्तर और पूर्व की ओर बहने लगी। इसी दृषद्वती को अब यमुना कहा जाता है, इसका इतिहास 4,000 वर्ष पूर्व माना जाता है।

यमुना चम्बल की सहायक नदी

यमुना पहले चम्बल की सहायक नदी थी। बहुत बाद में यह इलाहाबाद में गंगा से जाकर मिली। यही वह काल था जब सरस्वती का जल भी यमुना में मिल गया। ऋग्वेद काल में सरस्वती समुद्र में गिरती थी। प्रयाग में सरस्वती कभी नहीं पहुंची। भूचाल आने के कारण जब जमीन ऊपर उठी तो सरस्वती का पानी यमुना में गिर गया। इसलिए यमुना में यमुना के साथ ही सरस्वती का जल भी प्रवाहित होने लगा। सिर्फ इसीलिए प्रयाग में तीन नदियों का संगम माना गया जबकि यथार्थ में वहां तीन नदियों का संगम नहीं है। वहां केवल दो नदियां हैं। सरस्वती कभी भी इलाहाबाद तक नहीं पहुंची।

ऋषियों ने ऋग्वेद की लिखी ऋचनाएं

पौराणिक आख्यानों व धार्मिक मान्यताओं को यद्यपि सत्यान्वेषण का आधार नहीं माना जा सकता, फिर भी यह एक तथ्य है कि इस स्थल के आसपास ऐसा कुछ है जो सुखद अनुभूतियों के इलावा सृजन की भी देता है। यह एहसास ही भीतर की सृजनशीलता को रोमांच से भर देता है कि इसी स्थल की किन्ही पाषाण शिलाओं पर बैठकर अनेक ऋषियों ने ऋग्वेद की ऋचनाएं लिखीं।

जलधाराओं को किया समाहित

'जियोलौजिकल सोसायटी ऑफ़ इंडिया' ने ये निष्कर्ष भी दिए हैं कि लगभग चार हज़ार वर्ष पूर्व आए भूगर्भ-बदलावों, जिनमें एक भूकंप की भी चर्चा है, यह नदी, अनेक छोटी-छोटी जलधाराओं में बंट गई। पांवटा साहिब (हिमाचल) के समीप यमुना नदी ने इनमें से अधिकांश जलधाराओं को अपने में समाहित किया और इसकी जलधाराएं पूर्व दिशा की ओर मुड़ीं, जहां प्रयाग के समीप 'त्रिवेणी' का संगम अस्तित्व में आया। उन्हीं बदलावों के मध्य ऋग्वेद की शतद्रु नदी अर्थात सतलुज ने रोपड़ (पंजाब) के समीप 90 कोण का एक मोड़ लिया और शतद्रु, सिन्धु महानदी की ओर दिशा में बहने लगी।

संपादकीय कलम से

चर्चा में हैं इन दिनों 'राखीगढ़ी'

विलुप्त सरस्वती की तलाश का क्रम इन दिनों जोरों पर हैं, मगर पुरातत्व वैज्ञानिक अब इस निष्कर्ष पर लगभग पहुंच गए हैं कि सिंधु-घाटी सभ्यता की राजधानी हरियाणा के ज़िला हिसार में स्थित गांव राखीगढ़ी में थी। डक्कन कॉलेज पुणे के खुदाई व पुरातत्व विशेषज्ञ प्रो. वसंत शिंदे और हरियाणा के पुरातत्व विभाग द्वारा किए गए अब तक के शोध व खुदाई के अनुसार लगभग 5500 हैक्टेयर में फैला यह शहर ईसा से लगभग 3300 वर्ष पूर्व सक्रिय स्वरूप में मौजूद था। इन प्रमाणों के आधार पर यह तो तय हो ही गया है कि राखीगढ़ी की स्थापना उससे भी सैकड़ों वर्ष पूर्व हो चुकी थी। प्रो. शिंदे के अनुसार खुदाई के मध्य पाए गए नर कंकालों से लिए गए डीएनए नमूनों का अध्ययन जारी है और अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राखीगढ़ी के अवशेषों का विश्लेषण किया जा रहा है। अब तक यही माना जाता रहा है कि इस समय पाकिस्तान में स्थित हड़प्पा व मोहनजोदड़ो ही सिंधुकालीन सभ्यता के मुख्य नगर थे। इस गांव में खुदाई व शोध का काम पिछले तीन वर्षों से चल रहा है।

5000 वर्ष पुराने मिले अवशेष

ज़िला हिसार का यह गांव दिल्ली से 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गांव में शोध व उत्खनन का कार्य 1963 में पहली बार शुरू हुआ और तब इसे सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर माना गया। उस समय के शोधार्थियों ने सप्रमाण घोषणाएं की थी कि अतीत में यह लापता शहर, मोहनजोदड़ो दाड़ो और हड़प्पा से भी बड़ा था। अब लापता हो चुकी सरस्वती नदी के किनारों पर ही स्थित था यह शहर। पुरातत्व विदों का मानना है कि हड़प्पा सभ्यता का प्रारंभ इसी राखीगढ़ी से माना जा सकता है। 1997 में यहां से, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग को जो कुछ भी उत्खनन के मध्य मिला, उससे पहला तथ्य यह उभरा कि 'राखीगढ़ी' शहर लगभग साढ़े तीन किलोमीटर की परिधि में फैला हुआ था। यहां से जो भी पुराने अवशेष मिले उनकी उम्र 5000 वर्ष से भी अधिक है। राखीगढ़ी में कुल नौ टीले हैं। उनका नामकरण, शोध की सूक्ष्मता के मद्देनज़र आरजीआर-1 से आरजीआर-9 तक किया गया है। आरजीआर-5 का उत्खनन बताता है कि इस क्षेत्र में सर्वाधिक घनी आबादी थी। वैसे भी इस समय यहां पर आबादी घनी है इसलिए आरजीआर-5 में ज़्यादा उत्खनन संभव नहीं है। लेकिन आरजीआर-4 के कुछ भागों में उत्खनन संभव है।

सोने व चांदी की परतों से ढका मिला बर्तन

2014 में राखीगढ़ी की खुदाई से प्राप्त वस्तुओं की 'रेडियो-कार्बन डेटिंग' के अनुसार इन अवशेषों का संबंध हड़प्पा-पूर्व और प्रौढ़-हड़प्पा काल के

अलावा उससे भी हज़ारों वर्ष पूर्व की सभ्यता से भी है। आरजीआर-6 से प्राप्त अवशेष इस सभ्यता को लगभग 6500 वर्ष पूर्व (6420+100) तक ले जाते हैं।5

अब सभी शोध विशेषज्ञ इस बात पर सहमत हैं कि राखीगढ़ी, भारत, पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान का, आकार व आबादी की दृष्टि से सबसे बड़ा शहर था। इस क्षेत्र में विकास की तीन-तीन परतें मिलीं हैं। लेकिन अभी भी इस क्षेत्र का विस्तृत उत्खनन बकाया है। प्राप्त विवरणों के अनुसार इस समुचित रूप से नियोजित शहर की सभी सड़कें 1.92 मीटर चौड़ी थीं। यह चौड़ाई काली बंगा की सड़कों से भी ज़्यादा है। कुछ चारदीवारियों के मध्य कुछ गड्ढे भी मिले हैं, जो संभवतः किन्हीं धार्मिक आस्थाओं से जुड़ी बलि-प्रथा के लिए प्रयुक्त होते थे। एक ऐसा बर्तन भी मिला है, जो सोने और चांदी की परतों से ढका है। इसी स्थल पर एक 'फाउंड्री' के भी चिह्न मिले हैं, जहां संभवतः सोना ढाला जाता होगा। इसके अतिरिक्त टैराकोटा से बनी असंख्य प्रतिमाएं तांबे के बर्तन व कुछ प्रतिमाएं और एक 'फर्नेस' के अवशेष भी मिले हैं। एक श्मशान-गृह व कब्रगाह के अवशेष भी मिले हैं, जहां आठ कंकाल भी पाए गए हैं। उन कंकालों का सिर उत्तर दिशा की ओर था। उनके साथ कुछ बर्तनों के अवशेष भी हैं। संभवतः यह उन लोगों की कब्रगाह थी, जो मुर्दों को दफ़नाते थे।

खुदाई में मिले चार नर कंकाल

अप्रैल 2015 में आरजीआर-7 की खुदाई के मध्य चार नर कंकाल भी मिले। इनमें से तीन की पहचान पुरुषों व एक की स्त्री के रूप में की जा सकी। इनके पास से भी कुछ बर्तन व कुछ खाद्य-अवशेष मिले। इस सारी खुदाई के मध्य नवीनतम टेक्नोलॉजी का प्रयोग किया गया ताकि संभव हो तो इन अवशेषों का डीएनए टैस्ट भी हो सके। इससे यह भी पता चल पाएगा कि लगभग 4500 वर्ष हड़प्पन लोगों के शारीरिक संरचना कैसी थी। राखीगढ़ी में 'हाकड़ा वेयर' नाम से चिह्नित ऐसे अवशेष भी मिले हैं, जिनका निर्माण काल सिंधु घाटी सभ्यता और सूख

उस युग की मानव - संरचना

हड़प्पा काल के मानव के शरीर की संरचना पर विद्वान लेखक टी.एस सुब्रह्मण्यम का एक लेख मई वर्ष 2015 (फ्रंटलाइन) में प्रकाशित हुआ था, जिसमें लेखक ने इस प्रश्न का समुचित उत्तर तलाशने का प्रयास किया है। वह लिखते हैं, राखीगढ़ी का उत्खनन से अनेक प्रश्न जन्मे हैं। पहला प्रश्न यही है कि हड़प्पा कालीन मानव कैसा दिखता होगा ? क्या वह बलिष्ठ व हृष्ट-पुष्ट रहा होगा ? उस काल में मानवों का औसत कद क्या था ? उनके नैन नक्श कैसे थे ? शरीर की रंगत कैसी थी, आंखें, कान व बाल कैसे थे ? उनसे लोगों का खान-पान कैसा था ?' राखीगढ़ी से प्राप्त चार कंकालों के डीएनए टैस्ट से ऐसे अनेक प्रश्नों का उत्तर मिले हैं। ये परीक्षण डक्कन कालेन एवं शोध संस्थान पुणे और दक्षिण कोरिया की सियोल स्थित फॉरेंसिक प्रयोगशाला द्वारा संयुक्त रूप में किए गए हैं। इनमें से दो कंकालों का समय ईसा से 1900 से लेकर 2600 वर्ष तक पुराना पाया गया है।

खुदाई के मध्य कुछ नर कंकाल

राखीगढ़ी में उत्खनन को सही स्वरूप देने के लिए 21 खन्दकों की सिलसिलेवार खुदाई हुई। इस बात का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा गया कि खुदाई मध्य, प्राप्त अवशेषों का मूल स्वरूप बचा रहे। इसके लिए 'सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी' द्वारा तैयार सॉफ्टवेयर प्रयुक्त किए गए और एक कंकाल को आधार बना कर हड़प्पा काल के मनुष्य के औसत कद, नैन नक्स व चेहरे की बनावट का यथांसभव प्रामाणिक अनुमान लगाने का प्रयास भी किया गया। अभी भी यह परीक्षण जारी है और इन्ही के द्वारा उस काल के मनुष्य के शाकाहारी या मांसाहारी होने का सही-सही अनुमान लगाने का प्रयास भी हो रहे हैं। दूसरी ओर भारतीय पुरातत्व विभाग की ओर पुरातत्व विशेषज्ञ ए.के पांडे के नेतृत्व में एक टीम ने पश्चिमी उत्तरप्रदेश के जिला बागपत के एक गांव चंदायन में भी एक खुदाई के मध्य कुछ नर कंकाल पाए। यह सब प्राप्तियां नवंबर 2014 की हैं। लेकिन पुरातत्व विशेषज्ञ को आश्चर्य तब हुआ जब हरियाणा के फरमाणा नामक गांव में एक कब्रिस्तान पाया, जिसमें 70 व्यक्तियों का दफनाएं जाने के प्रमाण मिले। यह कब्रिस्तान लगभग 3.5 हैक्टेयर भूमि में है। इन 70 कंकालों के बारे में एक तथ्य यह भी माने आया कि कई शव निचले भाग में दफ़न थे। अनुमान यह भी लगा कि संभवतः ये दफ़न कुछ काल पहले के थे।

कुल मिलाकर भारत, पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान में हड़प्पा कालीन चिह्नित स्थलों या क्षेत्रों की संख्या लगभग 2000 है। भारत में यह स्थल, जम्मू कश्मीर, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात और हरियाणा में स्थित है। अकेले हरियाणा में ही इनकी संख्या 100 के आस-पास है और ये आदि बद्री, बालू, बनावाली, भगवानपुरा, दौलतपुर फरमाणा, गिरावाढ़, मिर्ज़ापुर, राखीगढ़ी और शामलो कला क्षेत्रों में मौजूद हैं। ये सभी स्थल उस घग्घर नदी के किनारों पर स्थित हैं, जिन्हें अब सरस्वती नदी क्षेत्र माना जाता है। राखीगढ़ी का उत्खनन व उसका अध्ययन सर्वाधिक चुनौती भरा है। यह क्षेत्र घग्घर और दृशाद्वति नदियों के मध्य में स्थित है और अत्यंत उपजाऊ है।

चुकी सरस्वती नदी घाटी के काल से मेल खाता है। इस क्षेत्र में आठ ऐसी समाधियां व कब्रें भी मिली हैं, जिनका निर्माण काल लगभग 5000 वर्ष पूर्व तक तो ले ही जाता है। एक कंकाल तो लकड़ी के भुर-भुरे हो चुके ताबूत में मिला। कुछ विशिष्ट समाधियों एवं कब्रों पर छतरियां बनाने की प्रथा भी थी। अब राखीगढ़ी में दो वर्षों से उत्खनन बंद है, क्योंकि इस क्षेत्र में राजकीय अनुदानों का दुरुपयोग संबंधी आरोपों की जांच इन दिनों सीबीआई कर रही है।

विरासत स्थलों की सूची में शामिल

मई 2012 में 'ग्लोबल हैरिटेज फंड' ने इसे, एशिया के 10 ऐसे 'विरासत-स्थलों' की सूची में शामिल किया है, जिनके नष्ट हो जाने का ख़तरा है। 'संडे-टाइम्स' की एक विशेष रिपोर्ट के अनुसार इस क्षेत्र में कुछ ग्रामीणों व कुछ पुरातत्व-तस्करों ने अवैध रूप से कुछ क्षेत्रों में खुदाई की थी और यहां से कुछ दुर्लभ अवशेष अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में भी बेचे गए हैं। आस-पास के कुछ क्षेत्रों में नए निजी निर्माण भी देखे जा सकते हैं। वैसे 1997 से लेकर अब तक सर्दियों के मौसम में तीन बार अधिकृत रूप में भी खुदाइयां हो चुकी हैं और जो कुछ भी मिला है, वह सिंधु-सरस्वती सभ्यता की एक खुली एवं विस्तृत दृष्टि से देखने पर विवश करता है।

उत्खनन का काम अभी अधूरा

राखीगढ़ी का पुरातात्विक महत्त्व विशिष्ट है। इस समय यह क्षेत्र पूरे विश्व के पुरातत्व-विशेषज्ञों की दिलचस्पी व जिज्ञासा का केंद्र है। यहां बहुत से काम बकाया हैं। जो अवशेष मिले हैं, उनका समुचित अध्ययन अभी शेष है। उत्खनन का काम अभी भी अधूरा है। अब तक का मूल्यांकन व शोध इस बात की गारंटी देता है कि अगले वर्ष तक सिंधु-सरस्वती घाटी की सबसे बड़े केंद्र के रूप में राखीगढ़ी को यूनेस्को की विश्व-धरोहर-सूची में यकीनन स्थान मिल जाएगा। राखीगढ़ी के शोध, मूल्यांकन व उसके प्रकाश में हो रहे अध्ययन के आधार पर अब यह दावा भी किया जा रहा है कि हड़प्पा सभ्यता और सिंधु घाटी सभ्यता में ही लोकतंत्र और कल्याणकारी राज्य (वैलफ़ेयर स्टेट) की अवधारणा जन्मी थी।

सिविल इंजीनियरिंग थी काफी विकसित

हरियाणा पुरातत्व विभाग, डक्कन कॉलेज पुणे और कुछ अन्य शोधार्थियों ने इस क्षेत्र की 550 हैक्टेयर से भी ज़्यादा भूमि को खंगाला है। यहां से प्रागैतिहासिक काल के अवशेष भी मिले हैं मगर कहीं से भी ऐसे अवशेष नहीं मिले जिनसे यहां की तत्कालीन ज़िंदगी में किसी राजतंत्र के अस्तित्व की गवाही मिलती हो। मैसोपोटिनिया, मिश्र, यूनान व कई अन्य स्थानों पर पुरातत्व विशेषज्ञों को ऐसे कई अवशेष मिले हैं जो किसी न किसी पुराने राजतंत्र से

जुड़ जाते हैं। डक्कन कॉलेज पुणे के उपकुलपति प्रो. वसन्त शिंदे के अनुसार उस काल यानि लगभग चार हज़ार वर्ष पूर्व की इस क्षेत्र की ज़िंदगी में से लोकतंत्र की सुगंध आती है। वैसे भी राखीगढ़ी का परिवेश इस बात की भी गवाही देता है कि हम हड़प्पा काल के किसी नगर के अवशेषों को देख रहे हैं। अब तक की खुदाई में किसी राजमहल या राजदरबार के अवशेष नहीं मिल पाए। ऐसे भी आभास मिलता है कि उस काल के नेताओं (उनका जो भी स्वरूप उस समय था) ने पिरामिडों या किन्हीं दुर्गों के निर्माण में अपने संसाधनों व मानव-श्रम शक्ति को नहीं झोंका। वे लोग केवल निर्माण, शिल्पकला एवं धातुकला के विकास में ही व्यस्त रहे।

राखीगढ़ी व अन्य हड़प्पाकालीन स्थलों से अब तक प्राप्त अवशेषों के आधार पर यह निष्कर्ष भी निकाला गया है कि उस समय की सिविल-इंजीनियरिंग काफ़ी विकसित थी और उसका प्रसार व प्रचार ईरान, अफ़गानिस्तान व मैसोपोटानिया तक होता था। इस बात के साक्ष्य तो राखीगढ़ी की खुदाई से ही मिल गए हैं कि इस क्षेत्र में लोगों अथवा गणतंत्रों के व्यापारिक संबंध मिश्र, ईरान व मैसोपोटामिया से भी थे।

निर्माण के लिए 'क्रास-टेक्नीक' का प्रयोग

अब तो पुरातत्व विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता का विशेष विकास सरस्वती-नदी घाटी में सिंधु नदी घाटी की अपेक्षा अधिक हुआ था। सिंधु घाटी एवं सरस्वती नदी क्षेत्र में ईंटों को 'क्रास-टेक्नीक' से निर्माण में प्रयुक्त करने की तकनीक एवं विधि तत्कालीन ईसा से लगभग 3000 वर्ष पूर्व मिस्र में मिलती थी। जबकि सिंधु घाटी में यह तकनीक ईसा से लगभग पांच हज़ार वर्ष पूर्व भी प्रयुक्त होती थी। अब हड़प्पा सभ्यता, सिंधु घाटी सभ्यता एवं सरस्वती नदी घाटी सभ्यता के अवशेषों के डीएनए नमूने दक्षिण कोरिया के 'सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ़ मैडीसिन' में जांच व मूल्यांकन के लिए भेजे गए हैं। इनकी जांच साथ ही साथ हैदराबाद के 'सैंटर फ़ौर सैल्युलर एंड मोलक्यूलर बायोलॉजी' में भी हो रही है। वैसे ऐसा ही शोध कार्य कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी और डेनमार्क की कोपेनहेगन यूनिवर्सिटी में भी चल रहा है। इन निष्कर्षों पर आधारित कुछ अनूठी सामग्री 'नेचर' और 'साइंस' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में भी शीघ्र ही दिखाई दे जाएगी।

संपादकीय की कलम से

महिलाएं पहनती थी शंख की चूड़ियां

कभी दिल्ली स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय जाने का अवसर मिले तो वहां देख आइएगा, हज़ारों वर्ष पुराना एक स्त्री कंकाल, जो जिला हिसार के राखीगढ़ी गांव की खुदाई में मिला है। यह कंकाल इस बात की पुष्टि करता है कि हड़प्पा व मोहनजोदाड़ो से भी हज़ारों वर्ष पूर्व यहां एक सम्पन्न सभ्यता मौजूद थी। पुरातत्वविदों का एक वर्ग इसे सिंधु-सरस्वती सभ्यता के नाम से जानता है। कंकाल के बाएं हाथ में मौजूद हैं शंख की चूड़ियां, जो बताती हैं कि उस काल में चूड़ियों की खनखनाहट मौजूद थी। यदि हज़ारों साल पहले के इस स्त्री कंकाल की बात करें तो इस कंकाल के पीछे मिट्टी की कुछ बर्तननुमा चीजें रखी हुई हैं। खुदाई के समय भी ये बर्तन इस कंकाल के साथ ही मिले थे। इसका एक मतलब यही है कि मृत्यु के बाद जीवन की भारतीय अवधारणा हजारों साल पुरानी है। नेशनल म्यूजियम में हड़प्पा गैलरी के इंचार्ज श्री अरविंद के अनुसार ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि किसी के मर जाने के बाद उसे मिट्टी के नीचे दबा दिया जाता था और उसके पीछे मिट्टी के इन बर्तनों में उसके ज़रूरत की कुछ चीजें भी इस विश्वास के साथ रख दी जाती थीं कि उसे आगे की यात्रा के लिए इन चीजों की ज़रूरत पड़ सकती है। मिट्टी के घड़े यह बताने के लिए काफी हैं कि मानव जाति हजारों साल के मिट्टी के घड़ों व अन्य बर्तनों का प्रयोग करती आ रही है। दूसरी बात यह है कि इनकी सुंदर बनावट और इन पर उकेरे गए चित्रों से भी यह झलकता है कि तब का मानव भी सौंदर्य व शृंगार को लेकर कम सजग नहीं था।

स्वतंत्रता आंदोलन में हरियाणा का योगदान

माधव कौशिक

वैदिक काल से ही हरियाणा प्रदेश न केवल बौद्धिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र रहा है अपितु शौर्य एवं साहस की भी अतुलनीय गाथाएं इसके दैनिक जीवन का अभिन्न अंग रही हैं। इतिहास गवाह है कि प्राचीन काल से लेकर अब तक इस क्षेत्र में निवासियों ने अपने राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान दिये हैं। इसी वीर-परंपरा के दर्शन मौर्य काल से लेकर मुगल काल तक हर स्थान, हर समय तथा इतिहास की हर बड़ी घटना के साथ होते हैं। पानीपत की ऐतिहासिक लड़ाइयां हमारी देशभक्ति तथा शौर्य की अद्भुत मिसाले हैं।

संघर्ष का बिगुल 1857 में

मुगल काल के पश्चात ईस्ट इंडिया कंपनी ने अंग्रेजी साम्राज्य का विस्तार करना प्रारंभ किया। अंग्रेजों से मुक्ति के लिये संघर्ष का सबसे बड़ा बिगुल 1857 में फूंका गया। 1857 की यह क्रांति जिसे इतिहास में आजादी की पहली लड़ाई के रूप में स्वीकार किया जाता है, वास्तव में अंबाला छावनी से शुरू हुई थी। मेरठ में मंगल पांडे के आह्वान से आठ घंटे पहले। अंबाला की 60वीं तथा पांचवीं इंफेंटरी के जवानों ने खुला विद्रोह कर दिया था। किंतु दुर्भाग्य से यह विद्रोह इसलिये सफल नहीं हो पाया क्योंकि इस योजनाएं समय से पहले की अंग्रेजों के सामने खुल चुकी थीं।

विद्रोह पर उतरी हरियाणा की जनता

फिर भी मेरठ से प्रज्जवलित क्रांति यह आग 11 मई को देहली पहुंची। बहादुरशाह जफर को क्रांतिकारियों ने अपना नेता स्वीकार किया। उसी समय राणिया के नवाब नूर मुहम्मद खां, झज्जर के समद खां, रेवाड़ी के राव तुलाराम, मेवात के सदरूदीन तथा हिसार के मुहम्मद आनिम ने इकट्ठे होकर अंग्रेजी राज्य की समाप्ति की घोषणा कर दी। देखते ही देखते हरियाणा की जनता पूरी तरह से विद्रोह पर उतर आई और मई के अंतिम दिनों तक अंबाला तथा थानेसर के कुछ हिस्सों का छोड़ कर पूरा हरियाणा स्वतंत्र हो गया। इस स्वतंत्रता संग्राम में झज्जर के अंदुर्रहमान, बल्लभगढ़ के नाहर सिंह, दुजाना के हसन अली और लोहारू के नवाब अमीनुद्दीन का योगदान भी कम नहीं रहा। 16 नवंबर 1857 को नारनौल के पास नसीबपुर में क्रांति की आखिरी लड़ाई हुई। इस युद्ध में हरियाणा के रण बांकुरों ने जो वीरता दिखाई उसकी अंग्रेज इतिहासकारों ने भी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

सैंकड़ों लोग गए जेल

क्रांति की विफलता के पश्चात हरियाणा में भंयकर दमन-चक्र चला। कितने ही गांवों में जला कर राख कर दिया गया। सैंकड़ों लोगों को जेल में ठूंस दिया गया। सम्पतियां जब्त कर ली गई। हजारों लोगों को फांसी पर चढ़ा दिया गया अथवा गोली से उड़वा दिया गया। यहां तक कि 1858 में हरियाणा प्रदेश को उत्तर पश्चिम प्रांत से अलग कर पंजाब में मिला दिया गया। 19वीं शताब्दी के प्रथम चरण तक हरियाणावासियों को प्रताड़ित तथा वंचित किया जाता रहा। हर तरह के विकास कार्य से वंचित होने के कारण यह क्षेत्र बुरी तरह से पिछड़ता चला गया।

लाला लाजपतराय की भूमिका

19वीं शती के अंतिम चरण में देश में नवचेतना तथा जागरण की लहर दृष्टिगोचर हुई। इस काल खंड में थोड़ा-सा प्रकाश इस प्रदेश में भी आने लगा। सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के योगदान से इस प्रदेश में भी नव जागरण का सूत्रपात हुआ। आर्य-समाज तथा सनातन धर्म संस्थाओं ने सुधारवादी आंदोलनों के माध्यम से सामाजिक जड़ता तथा अशिक्षा के अंधेरो को दूर करना प्रारंभ किया। आर्य समाज के संचालन में लाला लाजपतराय की ऐतिहासिक भूमिका सदा अविस्मरणीय रहेगी। झज्जर निवासी दीनदयाल शर्मा ने भी सामाजिक कुरुतियों को दूर करने में अग्रणी योगदान दिया।

स्वदेशी का खूब प्रसार

इसी दौरान 1885 में कांग्रेस की स्थापना बम्बई में ए.ओ.ह्यमू के नेतृत्व में हुई। यह तथ्य बहुत ही कम लोगों को ज्ञात है कि जिन 72 नेताओं ने कांग्रेस की नींव डाली थी उनमें से एक महत्त्वपूर्ण नेता हरियाणा के अंबाला निवासी लाला मुरलीधर भी थे। लाला मुरलीधर के प्रयासों से ही हरियाणा के विभिन्न स्थानों पर कांग्रेस की सक्रियता बढ़ती गई। 1885 के कलकत्ता अधिवेशन में प्रख्यात पत्रकार एवं लेखक बाबू बालमुकंद गुप्त तथा लाला मुरलीधर की ओजस्विता ने सभी पर अपनी छाप छोड़ी। हरियाणा में पहला सार्वजनिक आंदोलन 1905 में स्वदेशी आंदोलन के रूप में चला। अंबाला में लाला मुरलीधर, बेनी प्रसाद तथा लाला द्वारका दास ने इस आंदोलन के जरिये स्वदेशी का खूब प्रसार किया जिसमें अंग्रेजी साम्राज्यवाद को भारी आर्थिक क्षति हुई। इस आंदोलन की लोकप्रियता ने 1907 तक पूरे प्रदेश में कांग्रेस का वर्चस्व स्थापित कर दिया।

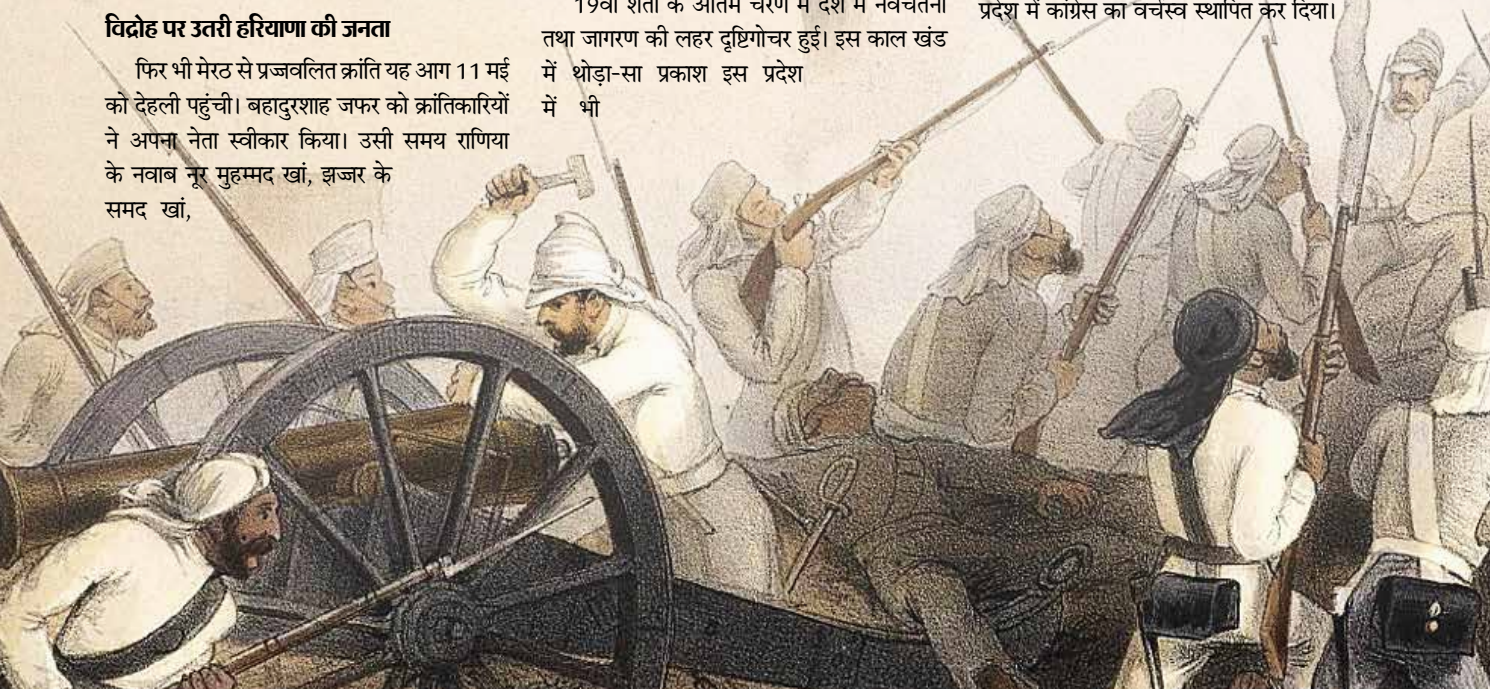

युवक निकले क्रांति की राह

1907 में कांग्रेस विभाजन के कारण नर्म और गर्म दल के नेताओं के बीच खाई पड़नी आरंभ हो गई। हरियाणा के युवक पुनः क्रांति की राह पर निकल पड़े। 10 नवंबर 1907 को जाट पलटन के हरियाणावासी सैनिकों ने बंगाल के क्रांतिकारियों के साथ मिलकर सरकारी खजाने को लूटने का प्रयास किया। मगर यह योजना फलीभूत नहीं हो पाई तथा कई जाट सैनिकों को लंबी सजाएं भुगतनी पड़ी। विश्व युद्ध के दौरान लाला हरदयाल के साथ मिलकर हरियाणा के नवयुवक काशी राम जोरी ने गदर पार्टी का गठन अमेरिका में किया। 1914 में जोशी भारत आये तथा क्रांतिकारी आंदोलन का संचालन करने लगे। अंतः इस महान क्रांतिकारी को 17 मार्च 1915 को फांसी पर लटका दिया गया। आज भी श्री काशी राम जोशी का नाम भारतीय इतिहास में जांबाज क्रांतिकारियों के साथ बड़े सम्मान से लिया जाता है।

कुछ स्थानों पर भड़की हिंसा

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रीय आंदोलन पूरी गति से चलने लगा। रोलेट एक्ट के विरोध में पूरा हरियाणा उठ खड़ा हुआ। श्री नेकी राम शर्म (भिवानी) तथा रोहतक के श्री राम शर्मा ने जनता के हृदय में अग्नि प्रज्जवलित की। बलदेव सिंह के.ए. देसाई, मुरलीधर, श्याम लाल, ठाकुरदास भार्गव, गोपी चंद भार्गव तथा राव मंगलीराम उस समय के जान-माने स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने इस आंदोलन में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। जब गांधी जी बम्बई से लाहौर जा रहे थे तब 10 अप्रैल 1919 को उन्हें पलवल स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया गया। इससे पूरे हरियाणा में आक्रोश की ज्वाला भड़क उठी। हड़ताल, जलसे-जुलूस के अतिरिक्त कुछ स्थानों पर हिंसा भी भड़क उठी तथा उत्तेजित भीड़ ने सरकारी सम्पत्ति को नष्ट कर दिया।

असहयोग आंदोलन में लिया भाग

तत्पश्चात गांधी जी ने असहयोग आंदोलन आरंभ किया। हरियाणा के सैकड़ों लोगों ने इसमें भाग लिया तथा लगभग 300 लोग जेल गये। अक्तूबर 1920 में अंबालाा डिविजन की कांफ्रेस भिवानी में आयोजित की गई। नेकीराम शर्मा तथा लाला उग्रसेन की अगुवाई में आयोजित इस कांफ्रेस में मोहम्मद अली, शौकत अली के साथ गांधी जी भी आये। कांफ्रेस में मौलाना अबुल कलाम आजाद तथा दुनीचंद अंबालवी जैसे नेताओं ने भी शिरकत की। इस कांफ्रेंस ने पूरे हरियाणा में जागृति की नई लहर पैदा की। इन्हीं दिनों नागपुर अधिवेशन में मोहम्मद अली जिन्नाह तथा ऐनी बंसेंट ने कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया किंतु लाल लाजपत राय तथा चितरंजन दास ने गांधी जी का समर्थन किया। असहयोग आंदोलन को हरियाणा में 'गांधी की आंधी' संज्ञा से पुकारा गया।

महिलाओं ने लिया बढ़-चढ़कर भाग

असहयोग आंदोलन 1928 तक धीमी गति से चल ही रहा था कि साइमन कमीशन भारत आया। पूरे देश में साइमन 'कमीशन वापस जाओ' को नादा गूंजने लगा। लाहौर में लाला लाजपत राय के नेतृत्व में विशाल जनसमूह ने साइमन कमीशन का विरोध किया। लाला लाजपत राय पर अंग्रेजी सरकार ने लाठियां बरसाई। लाला लाजपत राय के मुंह से निकला 'मेरे बदन पर पड़ी एक एक लाठी, अंग्रेजी सरकार के ताबूत में कील का काम करेंगी'। लाला जी का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। हरियाणा ही नहीं, अपितु पूरे देश में विद्रोह की आग भड़क उठी। दिसंबर 1929 में कांग्रेस ने लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति को अपना लक्ष्य घोषित किया। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का श्री गणेश दांडी मार्च से किया। इस 'नमक आंदोलन' का श्री गणेश दांडी मार्च से किया। इस नमक आंदोलन का हरियाणा में बहुत प्रभाव पड़ा। रोहतक, झज्जर, भिवानी, पानीपत अंबाला, हिसार आदि कस्बों में अनेक सभाएं हुई तथा स्त्रियों ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। स्त्रियों का नेतृत्व अंबाला में दुनीचंद की लड़की विद्यावती, जमना देवी, महादेवी और रोहतक में कस्तूरी बाई ने किया। हरियाणा के लगभग 600 नर-मयी जेल गये।

सभी तबकों के लोगों ने लिया भाग

इस दौरान 28 दिसंबर 1935 को पूरे हरियाणा में कांग्रेस की स्वर्ण जयंती मनाई गई। 1936 के अगस्त महीने में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने हरियाणा का दौरा किया। प्रांतीय एसैम्बली के चुनावों में पं. श्री राम शर्मा देशबंधु गुप्ता तथा चौ. साहब राम विजयी हुये। इस चुनाव में चौ. छोटूराम, टीकाराम, सैम अली तथा हेतराम 'जमीदारा लीग' की ओर से चुने गये। 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में हरियाणा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इस आंदोलन में हरियाणा के सभी तबकों के लोगों ने खूब भाग लिया। लाहौर को छोड़कर पंजाब के किसी भी अन्य जिले से इतने सत्याग्रही जेल नहीं गये जितने रोहतक जिले से जेल गये। हिसार, करनाल, अंबाला तथा गुड़गांव से भी सत्याग्रहियों ने जेलों को भर दिया। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में सुभाष चंद्र बोस तथा आजाद हिंद फौज का अपना ही विशिष्ट योगदान रहा है। आजाद हिंद फौज में हरियाणा के हजारों नौजवनों ने भर्ती होकर मां भारती के चरणों में अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। हरियाणवी मेजर सूरज मल ने मणिपुर की भूमि पर सबसे पहले तिरंगा फहराया। आजाद हिंद फौज में हरियाणा के 2847 जवान थे जिनमें से 346 वीरगति को प्राप्त हुये। दूसरे विश्व युद्ध के पश्चात तो राष्ट्रीय चेतना अपनी चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई। जिसके फलस्वरूप 15 अगस्त, 1947 को राष्ट्र स्वतंत्र हुआ।

इस प्रकार हम देखते है कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में हरियाणा प्रदेश का योगदान वास्तव में स्तुत्य तथा सरहानीय रहा है। आज ली इस प्रदेश का प्रत्येक व्यक्ति अपने देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने का जज्बा रखता है।

मनोहर प्रस्तुति के साथ संपन्न हुआ गीता महोत्सव

राष्ट्रपति महामहिम श्री रामनाथ कोविंद ने किया महोत्सव का आगाज़

मोनिका गौतम

मैटिरियलिज्म और प्रतिस्पर्धा से घिरी डिजिटल युग की युवा पीढ़ी में तनाव, असुरक्षा और दुविधाएं बढ़ रही हैं। ऐसे में गीता उनके लिए आध्यात्मिक औषधि सिद्ध होगी। देश के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने कुरूक्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय विचार गोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में देश-विदेश से आए हुए लोगों को संबोधित करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि गीता का संदेश देश और काल से ऊपर है और प्राचीन कालीन कृषि आधारित समाज से लेकर परवर्ती काल में वाणिज्य और उद्योग पर आधारित समाज तक और उसके भी बाद की नोलेज सोसायटी तक गीता की प्रासंगिकता हर युग में रही है और आगे भी बनी रहेगी। मंत्रोच्चारण और शंखनाद के बीच राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने कुरुक्षेत्र के अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का आगाज किया। इस आगाज के साथ ही ब्रह्मसरोवर के चारों तरफ श्लोकोच्चारण से पूरी फिजा ही गीतामय हो गई। इसके साथ राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने ब्रह्मसरोवर के पवित्र जल का

आचमन कर पवित्र ग्रंथ गीता का पूजन कर विधिवत रूप से अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का शुभारंभ किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद को शॉल भेंट कर तथा राज्यपाल कप्तान सिंह सोलंकी को गीता भेंट कर सम्मानित किया। राष्ट्रपति ने अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव स्मारिका का विमोचन भी किया।

योगशास्त्र गीता अत्यंत उपयोगी

राष्ट्रपति श्री कोविंद ने कहा कि आधुनिक युग में, पश्चिम में अमेरिका से लेकर पूर्व में जापान तक, योग की लोकप्रियता योगशास्त्र गीता की अंतर्राष्ट्रीय और युगातीत प्रासंगिकता को रेखांकित करती है। आज के डिजिटल युग में गीता के संदेश को पूरे विश्व में प्रसारित करना और भी आसान हो गया है। उन्होंने कहा कि पूरी मानवता के लिए योगशास्त्र गीता अत्यंत उपयोगी है। विश्व समुदाय 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का निर्णय सहजता और शीघ्रता के साथ इसीलिए कर पाया कि योग पूरी मानवता के कल्याण के लिए है। गीता पूरे विश्व के लिए आध्यात्मिक दीप स्तंभ है। अध्यात्म भारत की आत्मा है जो पूरे विश्व के लिए भारत का उपहार है। गीता भारतीय अध्यात्म का सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध ग्रंथ है।

हरियाणा की बेटियां देश का गौरव

उन्होंने कहा कि जैसा कि हम सब जानते हैं, हरियाणा की बेटियां राज्य का और देश का गौरव बढाती रही हैं। कल्पना चावला ने अंतरिक्ष तक जाकर हरियाणा की बेटियों की क्षमता का परिचय दिया। संतोष यादव ने एवरेस्ट की चोटी पर दो बार तिरंगा फहराया। कुश्ती में साक्षी मलिक तथा गीता, बबिता और विनेश फोगाट बहनों ने देश का गौरव बढ़ाया है। परिणीती चौपड़ा कला जगत के साथ-साथ पर्यटन की ब्रांड एम्बेस्डर के रूप में सफलता प्राप्त कर रही हैं। हरियाणा की बेटियों की सफलता की यह यात्रा यहीं नहीं रुकी। हाल ही में झज्जर की मानुषी छिल्लर ने विश्वस्तरीय सम्मान अर्जित करके दुनियाभर में हरियाणा और भारत की साख बढाई है।

नैतिकता और न्याय के विजय का संदेश

उन्होंने कहा कि वर्ष 2016 से, बडे पैमाने पर गीता महोत्सव का आयोजन करने की पहल के लिए वे मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल और हरियाणा सरकार की सराहना करते हैं। उनका यह मानना है कि गीता नैतिकता और न्याय के विजय का संदेश देती है, और इस समारोह के द्वारा गीता का यह संदेश प्रसारित

गीता का संदेश जन मानस तक पंहुचाने की आवश्यकता- मुख्यमंत्री

हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने कहा कि गीता जीवन व मन का सार है तथा 21वीं सदी में गीता डिजिटल युग की है। ऑनलाईन व्यवस्था परिवर्तन के माध्यम से गीता का संदेश हम विश्व में पहुंचा सकते हैं और हरियाणा में भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने की हरियाणा सरकार ने आईटी के माध्यम से पहल की है। आज राजनीतिज्ञों के लिए भी राजनीतिक गीता लिखे जाने की आवश्यकता है, जिसे उनके अनुरोध पर महामंडलेश्वर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द महाराज ने पूरा किया है और आज अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव पर इस राजनीतिक गीता का विमोचन किया जा रहा है, जिसे सभी राजनेताओं को पढना चाहिए तभी हम सही मायनों में 21वीं सदी के युग में गीता के संदेश को सार्थक कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि गीता का सिद्धांत जन मानस तक पंहुचाने की आवश्यकता है। युवा पीढ़ी को नवराष्ट्र के निर्माण में आ रही चुनौतियों का समाधान गीता ज्ञान में निहित है।

5145 वर्ष पूर्व गूंजा था गीता का संदेशः आचार्य देवव्रत

समारोह को हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि सबके लिए गीता अभियान चलाकर स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज एक अच्छा कार्य कर रहे हैं। युवा पीढ़ी को हमें उनके इस अभियान से जुडने की सलाह देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि कुरुक्षेत्र की वह धरती हैं, जहां 5145 वर्ष पूर्व गीता का संदेश दिया गया था। उन्होंने कहा कि सिकंदर ने अपने विश्वव्यापी विजय अभियान भारत की ओर मोड़ा तो उसकी सेना ब्यास नदी से आगे नही बढ़ सकी और जब उनके गुरू ने पूछा था कि भारत लौटते समय वे गीता नाम की पुस्तक व एक महान संत को ले आना, जो गीता का ज्ञान मुझे दे, परन्तु सिकंदर महान की तलवार एक संत के सामने झुक गई थी, जिसका उल्लेख ग्रीस के इतिहासकारों ने लिखा है।

परंपरागत वाद्ययंत्रों से राष्ट्रपति का स्वागत

ब्रह्मसरोवर के पुरुषोतमपुरा बाग में राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद का जैसे ही आगमन हुआ, उसी समय हरियाणवी परंपरागत वाद्य यंत्रों के बीच हरियाणा के राज्यपाल प्रोफेसर कप्तान सिंह सोलंकी, हिमाचल के राज्यपाल आचार्य डॉ. देवव्रत, हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल, गीता मुनीषी स्वामी ज्ञानानंद ने परंपरा अनुसार स्वागत किया। इसके पश्चात राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने ब्रह्मसरोवर के पवित्र जल का आचमन कर पूजा अर्चना की और पवित्र ग्रंथ गीता पर पुष्प अर्पित कर पूजन किया। राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने गीता पूजन के बाद 200 विद्यार्थियों और विद्वानों द्वारा श्लोकोच्चारण के बीच गीता यज्ञ में पूर्णाहुति डालकर महोत्सव का शुभारम्भ किया। इस दौरान उन्होंने ज्योतिसर के मॉडल का अवलोकन किया। तत्पश्चात, राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने सरस्वती नदी के मॉडल का अवलोकन किया और सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड के अध्यक्ष मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने सरस्वती नदी के विकास को लेकर राष्ट्रपति को बारीकी से जानकारी दी और अब तक किए गए प्रयासों का भी उल्लेख किया। राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने सरस्वती परियोजना के मॉडल को देखने के बाद सरस्वती पर किए गए शोध कार्यों और इतिहास को लेकर लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

हो रहा है। उन्होंने कहा कि उन्हें बताया गया है कि इस वर्ष के आयोजन में 'मारिशस भागीदार' देश है

और उत्तर प्रदेश 'भागीदार राज्य' है और वे मारिशस और उत्तर प्रदेश के कलाकारों और सहयोगियों की भी सराहना करते हैं।

पहली बार उतर प्रदेश बना सहभागी प्रदेश

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में पहली बार उतर प्रदेश को सहभागी प्रदेश के रुप में चुना गया। इस प्रदेश के पैवेलियन में दूसरी शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी की दुर्लभ मूर्तियां भारत के प्राचीन इतिहास के साथ-साथ उतर प्रदेश के ऐतिहासिक झरोखों को बयां किया। उतर प्रदेश संग्रहालय विभाग की सहायक निदेशक रेणू द्विवेदी ने बताया कि उतर प्रदेश की तरफ से पहली बार अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में सहभागी प्रदेश बनकर प्रदर्शनी लगाने का अवसर मिला है और इस महोत्सव में आने वाले पर्यटकों को यूपी पैवेलियन खुब पंसद आया। इस पैवेलियन की छायाचित्र प्रदर्शनी कला में कृष्ण के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण की जन्म स्थली मथुरा के इतिहास और भगवान श्रीकृष्ण के बचपन से लेकर मथुरा में आवास करने तक की सभी लीलाएं जयपुर, जोधपुर, राजस्थानी सहित विभिन्न प्रकार की शैलियों की 62 पेंटिंग की फोटो के माध्यम से दिखाने का अनोखा प्रयास किया गया।

राज्यपाल ने किया दीपदान

भगवान श्रीकृष्ण की कर्मस्थली कुरुक्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में राज्यपाल प्रोफेसर कप्तान सिंह सोलंकी ने शंखनाद और मंत्रोच्चारण के बीच दीपदान किया। इस दीपदान के साथ ही परंपरा अनुसार अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव भी संपन्न हुआ। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव 2017 में राज्यपाल प्रोफेसर कप्तान सिंह सोलंकी, केन्द्रीय पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री उमा भारती, हरियाणा के स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज, गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज ने मंत्रों का उच्चारण किया और गीता आरती, ब्रहमसरोवर महाआरती में भाग लेकर दीपदान भी किया।

श्रीकृष्ण लीलाओं के रंग में रंगी सांस्कृतिक संध्या

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में मारिशस के नन्हें-नन्हें कलाकारों, मथुरा के कलाकारों की महारास लीला, माउमाला नायक का वृंदावन दशावतार और रासकला मंच की कुरुक्षेत्र गाथा की प्रस्तुतियों ने सांस्कृतिक संध्या में भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं के रंगों में पिरोने का काम किया। यूपी नाईट की शुरुआत में मारिशस की करीब सात से ज्यादा प्रस्तुतियों में कलाकारों ने भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुतकर सबका मन मोह लिया और सभागार भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं के रस से सराबोर कर दिया। इस प्रस्तुति के साथ ही रासकला मंच की कुरुक्षेत्र गाथा से पूरा पंडाल भक्तिरंग में डूब गया।

बंब लहरी लोक नृत्य ने बदली महोत्सव की फिजाः बंब लहरी लोक नृत्य ने अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव की फिजा को हरियाणवी संस्कृति के रंग में रंगने का काम किया। इस प्रस्तुती के अलावा सुन गीता का ज्ञान और हरियाणवी लोक नृत्य के साथ बजने वाली परम्परागत वाद्य यंत्रों की धुनों ने पर्यटकों को झुमने पर मजबूर कर दिया। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में पुरुषोतमपुरा बाग के मंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के युवा एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग की तरफ से हरियाणवी लोक नृत्यों की प्रस्तुति दी।

ओडिशी नृत्य की मनमोहक प्रस्तुतिः कलकत्ता से आये नर्तक दीपांकर ने ज्योतिसर में ओडिशी नृत्य की मधुर प्रस्तुति से दर्शकों का मन मोह लिया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से कालिया दमन तथा दशावतार का चित्रण किया। महोत्सव के अंतर्गत गीता स्थली ज्योतिसर में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके लिए मुख्य रूप से ओडिशी नृत्य की प्रस्तुति दी गई। ओडिशी नर्तक दीपांकर ने मनभावन नृत्य पेश किया।

विदेशों में रेडियो कसूतः अंतरराष्ट्रीय गीता जयंती समारोह के अवसर पर पुरुषोत्तमबागपुरा में आयोजित हरियाणा दर्शन का विश्व के अनेक देशों में रेडियो कसूत एवं बोल हरियाणा फेसबुक व यूट्यूब चैनल के माध्यम से दर्जनों देशों में लाईव प्रसारण किया गया। इन देशों में ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, इंग्लैंड, कनाड़ा, इंडोनेशिया, कोरिया, जापान, बेल्जियम आदि देश शामिल हैं। हरियाणवी संस्कृति से जुड़े दोनों ही चैनलों ने हरियाणा दर्शन को लाईव दिखाकार हरियाणवी संस्कृति को विदेशों तक पहुंचाने का प्रयास किया। इसके अतिरिक्त ग्लोबल हरियाणा के माध्यम से भी हरियाणा दर्शन को विदेशी दर्शकों तक पहुंचा कर हरियाणा की संस्कृति की महक भारत की सीमाओं से बाहर तक फैलाई।

हेमा मालिनी ने प्रस्तुत किया कृष्ण-राधा का प्रेमः प्रसिद्ध अभिनेत्री हेमा मालिनी ने राधा रास बिहारी में भगवान श्रीकृष्ण और राधा के बीच प्रेमभाव को दिखाकर अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव की सांस्कृतिक संध्या को राधा-कृष्ण के प्रेम रस से भर दिया। इस सांस्कृतिक संध्या में अभिनेत्री हेमा मालिनी की झलक पाने के लिए हजारों लोग आतुर थे और जैसे ही हेमा मालिनी राधा रास बिहारी नाटक को लेकर मंच पर पहुंची तो पूरा पंडाल दर्शकों की तालियों से गूंज उठा। महोत्सव की सांस्कृतिक संध्या को यादगार और चार चांद लगाने के लिए अभिनेत्री हेमा मालिनी राधा रास बिहारी नृत्य संगीत नाटिका को लेकर मुख्य मंच पर पहुंची। इस मंच पर अभिनेत्री हेमा मालिनी ने भगवान श्रीकृष्ण, राधा और गोपियों के बीच बाल्यकाल से लेकर राक्षसों का वध करने के तमाम दृश्यों को दिखाने का अद्भुत प्रयास किया। इस नाटक में अभिनेत्री हेमा मालिनी ने छलिया कृष्ण और गोपियों के बीच पनघट पर हठखेलियां करते हुए, श्रीकृष्ण के वियोग में राधा का इंतजार, बांसुरी बजाते कृष्ण और राधा कृष्ण को एक-दूसरे के वियोग में जीने के प्रसंगों को दिखाकर सबको भाव विभोर कर दिया।

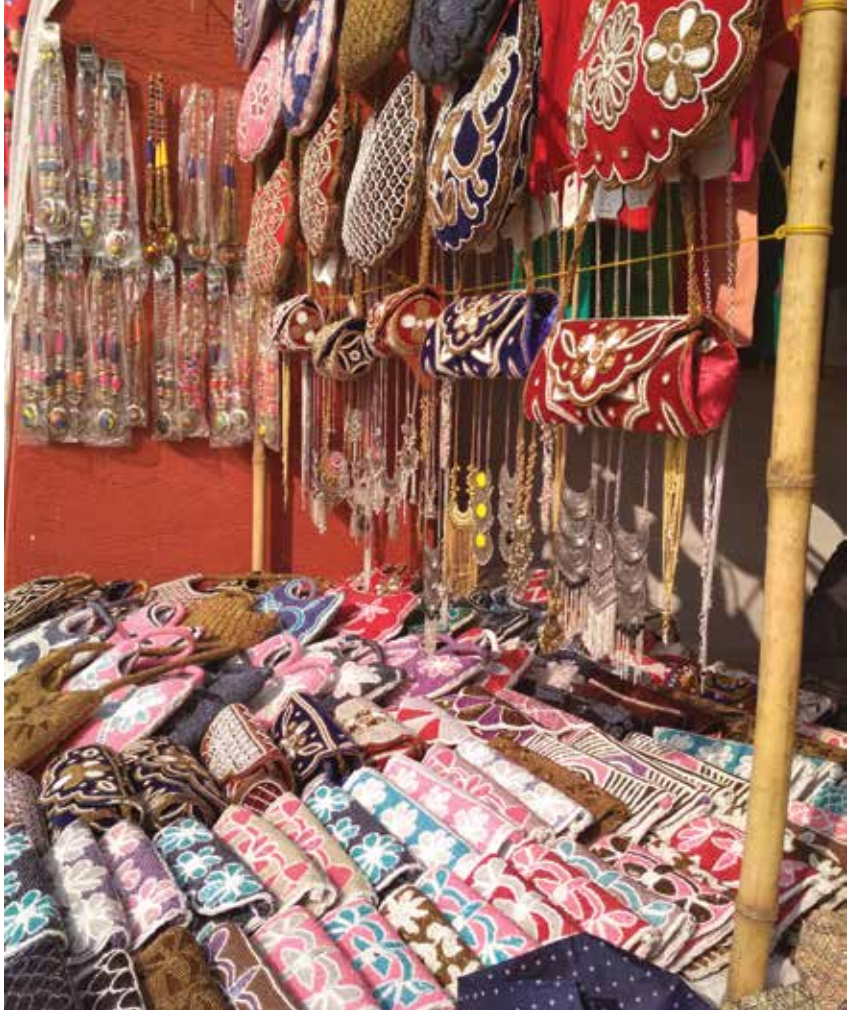

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में प्रदर्शित हुई नायाब कलाकृतियां

क्राफ्ट व सरस मेले में पर्यटकों ने की जमकर खरीददारी

देश-विदेश से आने वाले शिल्पकारों, पर्यटकों और शहरवासियों को 2018 के अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का बेसब्री से इंतजार रहेगा। कई जाने-माने शिल्पकारों ने अभी से ही वर्ष 2018 के महोत्सव के लिए तैयारियां शुरू कर दी हैं। शिल्पकारों के लिए मेले काफी फायदेमंद साबित हुआ और वे अपने उत्पाद की बिक्री से बेहद खुश दिखे। कुरुक्षेत्र के ब्रह्मसरोवर तट के किनारे 17 नवंबर से 3 दिसंबर तक चलने वाले क्राफ्ट व सरस मेले अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव 2017 के क्राफ्ट व सरस मेले में सैलानियों को नायाब कलाकृतियां देखने और खरीदने का मौका मिला।

संगीता शर्मा

कोई शिल्पकार राष्ट्रीय अवार्ड से नवाजा हुआ था तो कोई राज्य स्तरीय अवार्ड से पुरस्कृत था। शिल्पकारों की हुनर व काबिलियत उनके शिल्प में बखूबी दिख रही थी। यही कारण है कि अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव 2017 के दौरान कुरुक्षेत्र के ब्रह्म सरोवर तट के किनारे लगे क्राफ्ट व सरस मेले के सैलानी दाद रहे थे। यह मेला पर्यटकों विश्वस्तरीय पहचान देने में सफल साबित हुआ। इस मेले में देश के 16 राज्यों के 237 शिल्पकारों ने अपनी शिल्पकला को प्रदर्शित किया। महोत्सव में 237 शिल्पकारों में 25 राष्ट्रीय और 33 राज्य अवार्डी शिल्पकार भी पहुंचे थे। अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के पार्टनर राज्य उत्तर प्रदेश से 77 से सबसे ज्यादा शिल्पकार पहुंचे थे।

जमकर हुई खरीददारी

उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ से पीतल की मूर्तियां लेकर पहुंचे दलीप चौरसिया ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में पीतल की मूर्तियों की पर्यटकों ने जमकर खरीददारी की है। अगली बार वे मेले में पीतल की श्रीमद्भागवत गीता लेकर पहुंचेंगे। जयपुर से पहुंची पेंटिंग कलाकार वर्षा का कहना है कि कपड़े की मखमली पेंटिंग को पर्यटकों ने खूब पंसद किया है, अगली बार वे गीता महोत्सव में धर्मनगरी के पर्यटन स्थलों की पेंटिंग लेकर पहुंचेंगी, क्योंकि पर्यटक गीता जयंती पर धार्मिकता से जुड़ी पेंटिंग को खरीदने में ज्यादा दिलचस्पी दिखाते है। पांडेचेरी से प्रीत कुमार रबर वुड, पेंसिल वुड, नीम वुड से बने गणेश, रस्सी व बच्चों के खिलौने लेकर क्राफ्ट मेले में पहुंचे। उन्होंने बताया कि मेले में सात दिनों में ही दो लाख रुपये तक के हस्तशिल्प बिक गये।

ढाई महीने की मेहनत से तैयार किया पशमीना शॉल

कश्मीर के तारीख अहमद कश्मीरी सूट, शॉल व स्टाल लेकर मेले में आए। वह पशमीना, कानी व अंगूरा वूल से बने शॉल व स्टाल लेकर आए। सबसे महंगे पशमीना शॉल की कीमत 40,000 रुपये थी।

मेलों ने बदली महिलाओं की शान-ओ-शौकत

पहले वह घर की चारदीवारी व खेत के काम-काज तक सीमित थी। घर के काम-काज व बच्चों का पालन पोषण करते-करते कब सुबह से रात हो जाती इस बात का उन्हें अहसास नहीं था। लेकिन अब उनकी जीवन की दिनचर्या बदली हुई है। वह घर के काम के साथ-साथ अपना स्वयं रोजगार भी करती हैं। अपने बनाए सामान को मार्केटिंग देने के लिए वह विभिन्न राज्यों में आयोजित क्राफ्ट मेले व सरस मेले में भाग लेने जाती है। उनके पहरावे, बोल-चाल व घर की शान-ओ-शौकत में भी खासा बदलाव आया। कुछ ऐसा ही बयां किया कुरुक्षेत्र के अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में आयोजित सरस मेले में भाग लेने आई गुजरात की स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने। मेले में विभिन्न राज्यों से आई समूहों की महिलाओं ने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए।

पारिवारिक स्थिति में आया सुधार

गुजरात की अलका बहन पहली बार अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में भाग लेने आई थी। वह तोरण, झूम्मर व कुशन बनाकर मेले में आई। मेले में उनके हस्तशिल्प की अधिक मांग रही और बिक्री भी बहुत अच्छी हुई। अलका ने बताया कि मेले के दौरान वह ग्राहकों की मांग पर कुशन बनाकर भी बेचा। अलका ने बताया कि आठ साल से वह कुशन व सजावटी सामान बना रहे हैं, जबकि वह ये काम करने लगे हैं तब से उनकी जिंदगी में काफी बदलाव आ रहे हैं। उनकी पारिवारिक स्थिति में भी काफी सुधार आया है और वह बच्चों को उच्च शिक्षा दे रही हैं। उ

मजदूरी का काम हुआ बंद

गुजरात के जामनगर के हर्षदपुर गांव से आई ईला बहन मेले में फोटो फ्रेम, बंधेज की साड़ी और कुशन लेकर आई। वह भी पहली बार अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में भाग लेने आई थी और मेले में उनके सामान की हुई बिक्री से बेहद खुश थी। उन्होंने बताया कि सात साल से हस्तशिल्प का काम कर रहे हैं और यह काम करने से जीवन शैली में बहुत बदलाव आया है।

महिलाएं आगे बढ़ी

गुजरात के साबरकंठा के बडौली गांव से सरस मेले में अरूणा मेले में नारियल के जूट से बने सजावटी सामान लेकर आई थी। उन्होंने बताया कि दस साल से नारियल के जूट से सजावटी सामान बना रहे हैं और शिव शक्ति मिशन मंगलम संस्था की ओर से बहुत सहयोग मिला है। इस संस्था की मदद से हमारे प्रोडक्ट की मार्केटिंग हो जाती है और समय-समय पर हमें प्रशिक्षण भी मिलता है।

आध्यात्मिक माहौल भाया

सरस मेले में भाग लेने गुजरात की पूनम ने बैगस, कुशन कवर प्रदर्शित किए। पूनम ने बताया कि पहली बार मेले में आई है और मेले में आध्यात्मिक माहौल भी बहुत भाया है। ब्रह्म सरोवर तट पर सुबह व रात के समय आरती का मनोहारी दृश्य होता है। लाइट एंड साउंड प्रोग्राम भी देखने योग्य होता है, जोकि पहली बार किया जा रहा है।

महोत्सव में स्वादिष्ट अचारों का खजाना

हमीरपुर की 55 वर्षीय दीपा शर्मा ने अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के अंतर्गत सरस मेले में अपने अचारों के खजाने को प्रदर्शित किया। वर्ष-2002 ट्रक चालक पति की अकस्मात मृत्यु ने दीपा व उसके चार बच्चों के समक्ष रोजी-रोटी का संकट खड़ा कर दिया। किंतु ग्राम सेविका की सहायता व प्रेरणा से स्वयं सहायता समूह बनाकर उन्होंने अचार उद्योग के सहारे स्वावलंबन की नई कहानी लिखी। उन्होंने 300 से अधिक महिलाओं को स्वावलंबी बनाया।

इस शॉल को बैंबू स्टिक में दो बुनकर ने मिलकर ढ़ाई महीने की मेहनत से तैयार किया। राजस्थान के जयपुर से आए हस्तशिल्पी संतोष द्वारा स्टोन व कांच से तैयार की गई ज्वैलरी युवतियों को अपनी ओर खींच रही थी। संतोष बताया कि उनके घर में ही यह ज्वैलरी तैयार की जाती है और यह कला अपने पिता नाहर सिंह से सीखी है।

सोला आर्ट की पारंपरिक मूर्तियां

कोलकाता से सेमुअल घोष सोला आर्ट की मूर्तियां व उनकी पत्नी संध्या घोष टेराकोटा से बनी मूर्तियां बनाकर लाई। सोला आर्ट कोलकाता की पारंपरिक कला है और यह सोला लकड़ी जंगलों में मिलती है। इससे बनी देवी-देवताओं की मूर्तियों को पूजा स्थल में रखा जाता है। मेले में बनारस के रंग-बिरंगे सूट व दुपट्टे सैलानियों को बहुत भा रहे थे और महिलाएं अपनी पसंद के अनुसार इसे खरीदकर ले जा रही थी। बनारसी सूट लेकर आए अरशद ने बताया कि मेले में बनारसी सूट की मांग अधिक रही और इनकी बिक्री से बेहद खुश हैं। बनारस से हसीन अहमद व गुरशरण भी बनारसी सूट व दुपट्टा लेकर मेले में आए।

महिलाओं के हुनर को मिला बाजार

उत्तराखंड के देहरादून से रीटा शर्मा व मोहित

हैंडमेड मोती से पर्स लेकर मेले में आए और 100 रुपये से 400 रुपये तक के पर्स मेले में प्रदर्शित किए। रीटा ने बताया कि उनके साथ लगभग 12 महिलाएं जुड़ी हुई हैं जो कि ये कलात्मक पर्स बनाती है और मेले के माध्यम से उनकी कला को बेचा जाता है। जो आमदनी होती है उन्हें महिलाओं में बांट दिया जाता है। राजस्थान के लाल सिंह ने टेराकोटा के रंग व बिरंगे पॉट्स, बुद्धा सैट व अन्य सजावटी आइटम्स प्रदर्शित किए। उन्होंने बताया कि मेले में सामान की अच्छी खासी बिक्री हुई है और लोगों ने उनके हुनर की तारीफ की। राजस्थान के अजमेर से सुधीर कुमार मार्बल के चूरे से बनी भगवान की मूर्तियां लेकर मेले में आए। उन्होंने बताया कि दस साल से मेले में आ रहे हैं और प्रतिवर्ष बढ़-चढ़कर रिस्पॉन्स मिलता है।

कला और समाज एक दूसरे के बिना अधूरे

अखिल भारतीय कला साधक संगम में दिखाई पड़ी लघु भारत की तस्वीर

अखिल भारतीय कला साधक संगम में कोई कलाकार श्रेष्ठ भारत की प्रस्तुति दे रहा था तो कोई बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओं का संदेश मंच के माध्यम से दे कर देश की अखण्डता को एक सूत्र में पीरोने का प्रयास कर रहा था। लधु भारत की तस्वीर इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में नजर आ रही थी। हरियाणा सांस्कृतिक दर्शन गैलरी भी प्राचीन यादों को ताजा करने में अहम भूमिका निभा रही थी। तीन दिन तक चले इस कला के संगम में देश भर के मंजे कलाकारों की प्रस्तुति सराहनीय रही।

सुरेन्द्र सिंह मलिक

अखिल भारतीय कला साधक संगम में देश भर के तीन हजार से ज्यादा कलाकारों ने भाग लेकर अपनी बेहतरीन प्रस्तुतियों को पेश किया गया। चाण्क्य जैसे विद्ववान के नाटक का मंचन व हरियाणा सांस्कृतिक दर्शन गैलर लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। जगह-जगह बनाई गई महाभारत काल की रंग-बिरंगी तस्वीर प्राचीन यादों को जिंदा कर रही थी। यह नजारा था अखिल भारतीय कला साधक संगम तीन दिवसीय कार्यक्रम का। हरियाणा प्रदेश के स्वर्ण जयंती वर्ष के समापन पर कुरुक्षेत्र के श्रीमदभगवद गीता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय स्कूल के प्रांगण में संस्कार भारती द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में मौजूद विभिन्न प्रांतों के कलाकारों को उद्घाटन सत्र में संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री राजनाथ

ने कहा कि कला समाज को प्रभावित करती है ओर समाज से प्रभावित भी होती है। कला ओर समाज एक दूसरे के बिना जीवित नहीं रह सकते। कला एक ऐसी विद्या है जो अदर्शय को सदर्शय ओर अनकहे को कह देना संभव करती है। श्री राजनाथ ने कहा कि यहां तीन दिन राष्ट्र संकल्प को साकार करने की दिशा में कला जगत से जुड़े कलाकार बड़ी प्रेरणा देने का कार्य करेंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ हरियाणा के राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी व मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल की उपस्थिति में दीप प्रज्जवलित करके किया गया। इस मौके पर केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ ने हरियाणा सांस्कृतिक दर्शन गैलरी का शुभारंभ किया व कलाकारों से बात की व गैलरी की प्रशंसा की। केंद्रीय गृह मंत्री राजनाथ ने कहा कि इस तीन दिवसीय कला साधक संगम में कलाकार बड़ी प्रेरणा देने का कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि समाज के हर वर्ग ओर विशेष रूप से प्रबुद्ध वर्ग में कलाकारों का विशेष महत्त्व है। नये भारत का नया स्वरूप बने इस पर कलाकारों को अपनी बात करने की जरूरत है।

संस्कार और संस्कृति की अलख

हरियाणा के राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी

ने कहा कि नवीन भारत की कल्पना को साकार करने में कलाकार ही अपना अहम योगदान दे सकते हैं। कलाकारों के माध्यम से समाज में संस्कृति और संस्कारों की जागृति आ सकती है और जब तक समाज में संस्कार और संस्कृति की अलख नहीं जगती तब तक नए समाज का सृजन भी नहीं हो सकता। संस्कारों की समाज में कमी आ रही हैं। भारत को फिर से स्थापित करने की जरुरत हैं और यह केवल संस्कारों के माध्यम से ही संभव हैं। राज्य सरकार युवा पीढ़ी को संस्कारवान बनाने के लिए लोक कला और संस्कृति को बढ़ावा देने का काम कर रही हैं। संस्कार भारती अखिल भारतीय कला साधक संगम जैसे कार्यक्रम करके समाज को संस्कारवान बनाने का काम कर रहा है।

हर विद्यार्थी को हो ललित कला का अभ्यास

अखिल भारतीय कला साधक संगम के समापन पर बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने हरियाणा सांस्कृतिक दर्शन गैलरी का अवलोकन करने के बाद संबोधित करते हुए कहा कि इस तीन दिवसीय अखिल भारतीय कला साधक संगम में अखंडता, लघु भारत की तस्वीर दिखाई पड़ी। ऐसा लग रहा था मानो कला का दर्शन कर रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि हर विद्यार्थी को ललित कला का अभ्यास आना चाहिए। कला जैसी विद्या हर व्यक्ति में होनी चाहिए। हर बुराई का खात्मा करना है ऐसा विचार जब मन में आएगा तभी यह संभव हो पाऐगा। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने संस्कार भारती की वेबसाइट व स्मारिका का विमोचन किया।

गांव स्तर पर कार्यक्रमों का आयोजन

कला एवं संस्कृति मंत्री कविता जैन ने कहा कि राज्य सरकार कला और संस्कृति को बढ़ावा देने का काम कर रही हैं। हरियाणा के स्वर्ण जयंती में लगातार एक साल चले कार्यक्रमों में कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए गांव स्तर पर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया हैं। मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कुरुक्षेत्र की पावन धरा पर लाखों रुपए का पुरस्कार देकर कलाकारों को प्रोत्साहित करने का काम किया हैं। थानेसर विधायक सुभाष सुधा ने कहा कि संस्कार भारती के अखिल भारतीय कला साधक संगम कार्यक्रम से युवा पीढ़ी को प्रेरणा मिलेगी और समाज नई दिशा की ओर आगे बढ़ेगा।

हरियाणा से गहरा नाता

हिंदी फिल्मों के ही मैन सुभाष घई ने कहा कि उनका हरियाणा से गहरा नाता है। उन्होंने कहा कि हरियाणा विद्ववानों का देश है यहां श्री कृष्ण ने गीता का उपदेश दिश था यह भूमि पूजनीय है। उन्होंने बताया कि वे मुंबई में फिल्म स्कूल का संचालन करते हैं जिसमें 32 कोर्स हैं वे सभी कलाओं की जानकारी बच्चों को देते हैं। उन्होंने सरकार से हर नगर में ललित कला अकादमी खेलने की मांग की।

क्या कहते कलाकार

बिहार से कला साधक संगम में पहुंचे अरविंद गुप्ता ने बताया कि वे ड्रामा कलाकार है व इस प्रकार के आयोजन साहस, संस्कार व अनुशासन सीखाते हैं। आसाम से पहुंचे राजीव भट्ट जो निदेशक व एंकर की भूमिका निभाते हैं कहते हैं कि इस प्रकार के कार्यक्रम एक दूसरे के साथ जोड़ने के अलावा अपने आप का बेहतरीन तरीके से प्रस्तुति देने का अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने बताया कि उन्हें इस कार्यक्रम में आना अच्छा लगा व वे इस कार्यक्रम की यादों को अपने साथियों के साथ सांझा करेंगे। कुरुक्षेत्र के विकास शर्मा जो थियेटर कलाकार है कहते हैं कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों की संस्कृति देखने व बहुत कुछ नया करने का मौका मिला। विकास के साथ कला साधक संगम में पहुंची पारूल कौशिक व निकीता ने बताया कि कार्यक्रम में चाण्क्य का नाटक बहुत कुछ कह रहा था। इस नाटक के मंचन ने हम सबको प्रभावित किया। इस प्रकार के कार्यक्रम खुद से खुद का परिचय करवाते हैं। इस प्रकार के कार्यक्र एक प्रकार से छोटी गीता जयंती का स्वरूप हैं। सोनीपत की ज्योति ने बताया कि कार्यक्रम में तीन दिन बहुत कुछ सीखने को मिला रंग-बिरंगी रंगोली देखने को मिली अनेक विद्याओं से परिचय हुआ।

हरियाणा की छोरी मानुषी छिल्लर ने चीन के सनाया शहर में हुई विश्व सुंदरी प्रतियोगिता में खिताब जीतकर हरियाणा का नाम विश्व स्तर तक चमकाया है। 17 साल बाद यह खिताब देश के नाम हुआ है। विश्व सुंदरी मानुषी छिल्लर को राज्य सरकार ने हरियाणा का 'अनिमिया मुक्त अभियान' का ब्रांड एम्बेसडर बनाया है। साथ ही मानुषी के 'शक्ति' प्रोजेक्ट के तहत सभी सरकारी स्कूलों में 18 करोड़ की लागत से सैनेटरी नैपकिन को वितरित किया जाएगा।

जब मानुषी ने जीता विश्व सुंदरी का खिताब

- **17 साल बाद विश्व सुंदरी पर देश का कब्जा**
- **मानुषी छिल्लर बनी हरियाणा की 'अनिमिया मुक्त अभियान' की ब्रांड एम्बेसडर**

किसी की काम के प्रति जनून, लगन व मेहनत हमेशा सफलता के मुकाम तक पहुंचाती है। मैंने भी विश्व सुंदर का सपना देखा था और मैं सपनों के पीछे भागी और उसे पूरा करने के लिए जोर लगाया। परिवार का सहयोग व मां का आशीर्वाद भी मेरे काम आया। यह कहना विश्व सुंदरी का खिताब जीतने वाली हरियाणा की 20 वर्षीय मानुषी छिल्लर का है। उनका मानना है कि कोई भी नया काम करते हुए मुश्किलें अवश्य आती है लेकिन उन मुश्किलों का सामना बहादुरी के साथ करना चाहिए। उसने बताया कि विश्व सुंदरी की तैयारी के दौरान उन्हें अपनी कई मनपसंदीदा चीजों को छोड़ना पड़ा, लेकिन उसने उसको नजरअंदाज करते हुए विश्व सुंदरी प्रतियोगिता पर फोकस रखा। मानुषी छिल्लर कुरुक्षेत्र में आयोजित अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव को भी देखने आई।

मानुषी 'ब्रांड एम्बेसडर'

मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने मानुषी छिल्लर व विश्व सुंदर प्रतियोगिता की चेयरपर्सन जुलिया मारेल को 'गीता ऑन व्हील' पुस्तक भेंट करते हुए मानुषी को हरियाणा प्रदेश की महिलाओं को अनिमिया मुक्त करने के लिए चलाए जाने वाले अभियान के लिए ब्रांड एम्बेसडर बनाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि विश्व सुंदरी द्वारा चलाए जा रहे 'शक्ति' प्रोजेक्ट को बल देने के लिए हरियाणा के सभी सरकारी स्कूलों में 18 करोड़ की लागत से 'शक्ति' प्रोजेक्ट के सैनेटरी नैपकिन को मुफ्त वितरित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि राज्य में 61 प्रतिशत लड़कियों व महिलाओं में अनिमिया की समस्या है, जो आयरन इत्यादि की वजह से होती है और इस समस्या को समाप्त करने के लिए राज्य सरकार द्वारा अनिमिया मुक्त हरियाणा अभियान चलाया जाएगा।

लिंगानुपात में हुआ सुधार

विश्व सुंदरी मानुषी छिल्लर ने कहा कि मैं हरियाणा की साधारण बेटी हूं और हरियाणा की सभी बेटियां एक जैसी हैं और उन्हें भी सपना देखना चाहिए और अपने सपने को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने हरियाणा के मुख्यमंत्री और हरियाणावासियों सहित अन्य लोगों का अभिनंदन करते हुए कहा कि वे आभारी है कि ये सभी लोग उनसे मिलने आए हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान में हरियाणा के खानपुर से वे मेडिकल की शिक्षा ले रही थी, खानपुर महिलाओं के लिए जाना जाता है, जहां पर लिंगानुपात की दर में भी ईजाफा हुआ है।

> प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में 'मां' का अहम योगदान होता है। 'मां' के संघर्ष व प्रोत्साहित करने की भावना को वह हर पल याद रखती है। यही कारण है कि जब विश्व सुंदरी प्रतियोगिता में हरियाणा की मानुषी छिल्लर से सवाल पूछा गया कि दुनिया में किस प्रोफेशन को सबसे अधिक सैलरी मिलनी चाहिए और क्यों? मानुषी ने जवाब दिया- दुनिया में मां को सबसे ज्यादा इज्जत मिलनी चाहिए। जहां तक वेतन की बात है इसका मतलब रुपयों से नहीं, बल्कि प्यार और सम्मान से है। उन्होंने कहा- मेरे जीवन में मां सबसे बड़ी प्रेरणा हैं। उनके इस जवाब ने निर्णायकों का दिल जीत लिया और 17 साल बाद मानुषी ने विश्व सुंदरी का खिताब जीत देश किया।

प्रोजक्ट पर काम

मानुषी छिल्लर ने कहा कि बॉलीवुड की दुनिया में प्रवेश करने के बारे में कहा कि अब तक देश में पांच विश्व सुंदरी बनी हैं, जिनमें से दो विश्व सुंदरी बॉलीवुड में गई हैं और जो देश की सबसे पहली विश्व सुंदरी बनी थी, वे आज भी डॉक्टर हैं और उनका डॉक्टर का जीवन है। मानुषी ने कहा कि एमबीबीएस की सीट के लिए मैंने बहुत मेहनत की है और मैं बॉलीवुड के लिए इसे आसानी से नहीं छोड़ सकती। एमबीबीएस की पढ़ाई मेरी पहली प्राथमिकता है।

लक्ष्य के लिए केंद्रित मानुषी

मानुषी के माता डॉ. नीलम व पिता डॉ. मित्रबसु खुश है कि उनकी बेटी ने 17 साल बाद विश्व सुंदरी का खिताब देश के नाम करके हमें गौरवान्वित किया है। डॉ. नीलम का कहना है कि हरियाणा में रहते हुए न तो उनके अभिभावक ने बेटा-बेटी में अंतर रखा और न ही उन्होंने। डॉ. मित्रबसु मानुषी की खासियत बताते हुए कहते है कि वह अपने लक्ष्य को पाने के लिए केंद्रित रहती है और लगन व मेहनत के बल उसे पा लेती है। इसके लिए अपना संपूर्ण निछावर कर देती है।

संगीता शर्मा

सांस्कृतिक विरासत को संजोता संग्रहालय

संग्रहालय के आकर्षण का केंद्र विश्व का सबसे बड़ा हुक्का

हरियाणा की अनूठी संस्कृति का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। विश्व के पहले ग्रंथ ऋग्वेद की रचना यहीं सरस्वती के किनारे हुई थी। यही वह भूमि है जहां पर महाभारत के युद्ध में गीता का जन्म हुआ। इस प्रदेश में भगवान श्रीकृष्ण की सांस्कृतिक विरासत को कवि सूरदास ने विश्वविख्यात किया। संग्रहालय में हरियाणवी संस्कृति के साक्षात दर्शन होते हैं जो लोग कहते हैं कि हरियाणा में कल्चर नहीं एग्रीकल्चर है उनको अवश्य इस संग्रहालय का अवलोकन करना चाहिए ताकि उन्हें पता चल सके कि हरियाणा की संस्कृति की महत्ता कितनी प्राचीन है।

सांस्कृतिक दृष्टि से हरियाणा प्रदेश अत्यंत समृद्ध रहा है। यहां की सांस्कृतिक विरासत का इतिहास हजारों वर्ष पुराना माना जाता है। प्रदेश की इसी सांस्कृतिक विरासत को संजोने के लिए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में धरोहर हरियाणा संग्रहालय की स्थापना ग्यारह वर्ष पूर्व की गई थी। संग्रहालय में अलग-अलग भाग बना कर उनका बेहतरीन प्रस्तुती की गई है। संग्राहलय में खेती बाड़ी भाग में खेती से जुड़ी हुई विषय-वस्तुओं को जहां दर्शाया गया है, वहीं हरियाणा के लोक-उत्सव भाग में होली, दीवाली तथा तीज से संबंधित सामग्री भी यहां मौजूद है। जल को संकलित करने के लिए प्रयोग की जाने वाली विषय-वस्तुओं को संग्राहलय में बेहतरीन तरीके से प्रदर्शित किया गया है। इस पूरे संग्राहल के दो अलग-अलग भाग में विभाजित किया गया है। संग्राहलय में इतिहास के महानायकों के मुहं बोलते चित्र उनकी उपस्थिति दर्ज कर रहे हैं। इतिहास को समेटता यह संग्रहालय आगंतुको का स्वागत करता नजर आता है।

पनघट की स्थापना

संग्रहालय में पनघट की स्थापना भी की गई है जिसमें हरियाणवी महिलाओं को पानी भरते हुए दर्शाया गया है। लोक जीवन में पनघट की संस्कृति से अनेक परंपराएं एवं संस्कार हरियाणवी संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जो यहां पर दिखाए गए हैं। धरोहर में स्थापित कोल्हू के अंतर्गत गुड़ बनाने की प्रक्रिया तथा उससे जुड़े हुए रीति-रिवाजों को यहां पर दिखाया गया है। **युद्ध नायकों के चित्र**

विश्वविद्यालय के इस संग्रहाल में हरियाणा के महावीर चक्र, परमवीर चक्र, वीर चक्र तथा अशोक चक्र विजेताओं को चित्र सहित प्रस्तुत किया गया है। घेर के माध्यम से ग्रामीण पशु बांधने के स्थान को प्रदर्शित किया गया है। लोक जीवन में पंचों के प्याले के नाम से विख्यात हुक्का भाग में दो दर्जन से अधिक अलग-अलग तरह के हुक्के दर्शाये गए ही हैं इसके साथ-साथ इस भाग में विश्व का सबसे बड़ा हुक्का जिसमें पैंतीस लीटर पानी तथा एक किलो चिलम में तम्बाकू आता है, विशेष रूप से आकर्षण का केंद्र है।

हरियाणा की हस्तक

संग्राहल में घरेलू विषय वस्तुओं के माध्यम से पुराने चरखों तथा कोठी, कुठियालों को सुंदर तरीके से प्रदर्शित किया गया है। **पुराने कांसे के बर्तनों का प्रदर्शन**

संग्रहालय में महिलाओं तथा पुरुषों की वेश भूषाओं को दर्शाया गया है। यहां पर हरियाणवी साहित्य एवं संस्कृति की शोध के लिए एक पुस्तकालय की स्थापना भी की गई जिसमें दस हजार से अधिक पुस्तकों तथा शोध ग्रंथों का संकलन है। जो विशेष रूप से हरियाणा की संस्कृति पर शोध करने वाले

शोधार्थियों के लिए मील का पत्थर साबित हो रहा है।

ग्रामीण संस्कृति का केंद्र

संग्रहलाय का दूसरा भाग विशेष रूप से ग्रामीण संस्कृति का ऐसा केंद्र है, जिसको देखने के पश्चात लाजमी रूप से सम्पूर्ण हरियाणवी संस्कृति के दर्शन होते हैं। इसमें हरियाणवी लोक कला की प्रतीक सांझी को दर्शाया गया ही है इसके साथ ही गांव की स्थापना के समय गांव के देवता दादा खेड़े की क्या महत्ता है का भी सांस्कृतिक इतिहास प्रस्तुत किया गया है। गांव में ठठेरे की संस्कृति के माध्यम से बर्तन बनाने की प्राचीन परंपरा के साथ-साथ कलई करना जैसी विद्या को भी ठठेरे के व्यवसाय के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। गांव में आभूषण बनाने की प्राचीन परंपरा को

सुनार के भाग के माध्यम से दर्शाया गया है।

आभूषणों को प्रदर्शित

हरियाणवी महिला द्वारा पहनी जाने वाली 11 किलो चांदी की 52 आभूषणों को प्रदर्शित किया गया है। इसके साथ ही मनियार के भाग में चूड़ी परंपरा के इतिहास को लोक जीवन से जोड़कर दर्शाया गया है। हरियाणा के पुरातात्विक स्थलों से खुदाई में निकली मिट्टी से बनी 5,000 साल पुरानी चुड़ियों को भी प्रदर्शित किया गया है। गांव में टोकरे बनाने की परंपरा तथा ग्रामीण संस्कृति का हिस्सा हस्त कला के नमूनों के रूप में टोकरे-टोकरी, बोहिया, पालडी आदि विषय वस्तुओं को टोकरे वाले भाग में दिखाया गया है। हरियाणा में बर्तना बनाने की परंपरा तथा कुम्हार संस्कृति के माध्यम से ग्रामीण जीवन की सांस्कृतिक झांकी का वह स्वरूप प्रस्तुत किया गया है ।

हवेलियों तथा चौपालों का निर्माण

हरियाणा के पुरातात्विक स्थलों से खुदाई में निकले मृद भांडों को विशेष रूप से प्रदर्शित किया गया है। पथेरे में हरियाणा में ईंट बनाने की प्रक्रिया तथा उसके इतिहास को संग्रहालय से जोड़कर दर्शाया गया है। इसके अंतर्गत हजारों वर्ष पुरानी खुदाई में निकली हुई ईंटे भी दिखाई गई हैं। जुलाहे की बुनाई की प्रक्रिया को जहां संग्रहालय में प्रस्तुत किया गया है वहीं अहोई माता के दर्शन भी लोक कलात्मक तरीके से यहीं पर होते हैं।

कपड़ों पर छपाई तथा उसकी विविध प्रक्रियाएं

हरियाणा की पत्थर कला तथा कारीगरों द्वारा तैयार किए जाने वाले झरोखे, चबूतरा, स्तभं, गिरड़ी आदि की निर्माण शैली को प्रदर्शित किया गया है। बढ़ई संस्कृति एवं परंपरा को केंद्रित बढ़ई का भाग स्थापित किया गया है। जिसमें बढ़ई की सांस्कृतिक परंपरा एवं उसके द्वारा बनाई जाने वाली वस्तुएं चरखा, पीढ़ा, हल, परांत सभी को इसी भाग में केंद्रित किया गया है। हरियाणा की छापा परंपरा पर केंद्रित कपड़ों पर छपाई तथा उसकी विविध प्रक्रियाओं को प्रदर्शित किया गया है।

संसाधनों की प्रस्तुती

संग्रहालय में पारंपरिक संसाधनों रथ, बैलगाड़ी, मंझौली, पालकी, टमटम, रेड़ा, गड्ढा, घोड़ा-बग्गी आदि को यहां पर दिखाया गया है। लोक कला के स्वरूप को लुगदी के माध्यम से बोहियो, ठाठियों आदि के द्वारा हस्त कला के अजब नमूने को प्रदर्शित किया गया है। तांतिया और तेली के भाग में तेल निकालने व रूई बिनने की परंपरा को संग्रहालय में दिखाया गया है। लोहार की सांस्कृतिक परंपरा तथा लोहे से तैयार की गई ग्रामीण जीवन की विषय वस्तुओं को पर्यटकों के लिए स्थापित किया गया है।

संग्रहालय का खुला मंच

संग्रहालय में पानी सींचने के लिए रहट भी स्थापित किया गया है जिसके माध्यम से पर्यटक ग्रामीण अंचल में खेतों में पानी देने की परंपरा का अवलोकन करते हैं। संग्रहालय में एक खुला मंच भी स्थापित किया गया है जिसको ओपन एयर थियेटर का नाम दिया गया है। इसमें हरियाणवी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए अनेक लोक सांस्कृतिक कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किए जाते हैं।

क्या कहते हरियाणा संग्राहालय के क्यूरेटर

धरोहर हरियाणा संग्राहालय के क्यूरेटर डॉ. महासिंह पूनिया कहते हैं की धरोहर हरियाणा संग्रहालय को हर प्रकार से सुसज्जीत कर किया गया है। आगंतुओं के लिए संग्राहलय में बहुत कुछ है । जो लोग प्राचीन परंपराओं से बेखबर है उनके लिए संग्राहल किसी खजाने से कम नहीं है। संग्रहलय को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग आते हैं व जानकारी जुटाते हैं।

सुरेन्द्र सिंह मलिक

परिवेश की अनूठी पहचान छोड़ते राजकिशन नैन

बेहतर लेखन व छायांकन के लिए मिला सम्मान

समाज में बहुत कम व्यक्ति ऐसे है जो समाज में सृजनशीलता के प्रति समर्पण की भावना से कार्य करते हैं। ऐसे लोग अपने सृजन क्षेत्र में अपना निशा छोड़ते हैं व आगे की पीढ़ी को रचने करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। ऐसे व्यक्ति हमेशा सृजनात्मक दृष्किोण में जीते हैं व जीवन को लोगों के लिए आसान रुचिकर व प्रासंगिक बना देते हैं। ऐसी प्रतिभा के धनी है राजकिशन नैन। खास तौर पर उतरी भारत में जिन्हें समझने वाले लोग आर्ट फोटोग्राफी का पितामह कह करते हैं।

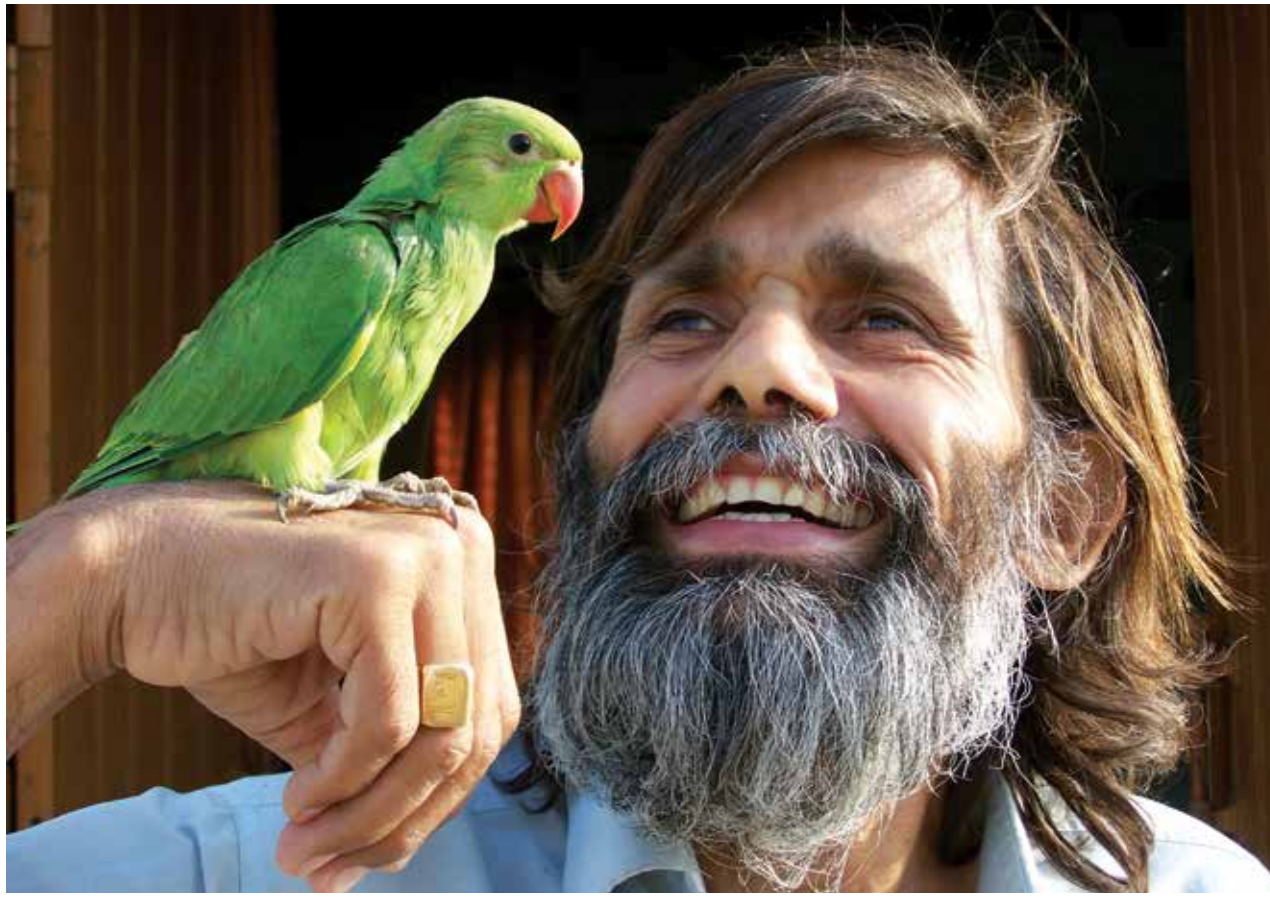

नन्ही चिड़िया की तस्वीर को कैमरे में पिरोने को लेकर एक मुस्तैद फौजी की तरह पिछले तीन घंटे से कैमरे को तैनात करके 61 वर्षीय अधेड़ मगर युवा नैन तल्लीनता पूर्वक कार्य में जुटे थे। उनको सिर्फ अर्जुन की तरह सिर्फ चिड़िया की आंख नजर आ रही थी। उन्हें शायद ही आभास था कि कोई पीछे उनसे मिलने की प्रतिक्षा भी कर रहा है। यह कहानी है एक ऐसे फोटो आर्टिस्ट की जिसने फोटो आर्टिस्ट के करियर में अपने जीवन के बेहतरीन 50 वर्ष दिए। इस बार के संवाद के इस अंक में हम आपको रूबरू करवा रहे हैं ऐसे ही फोटो आर्टिस्ट व साहित्य लेखक राजकिशन नैन से जिन्होंने बीते 50 वर्षों में घुमकड़ी व्यक्ति की पहचान बना कर समाज की तस्वीर को ना केवल उतारने का प्रयास किया है बल्कि बेहतरीन लेखन की शक्ल में लोगों के सम्मुख रखने की भी प्रबल कोशिश की है। जिला रोहतक के गांव अजायब में चौ. रिसाल के घर 27 अक्तूबर 1956 को जन्में श्री राजकिशन नैन अब 61 वर्ष के हो चुके हैं लेकिन जज्बा आज भी बरकरार है। पंजाब विश्वविद्यालय से हिंदी में स्नात्तक राजकिशन नैन को हैल्थ विश्वविद्यालय, रोहतक में 25 वर्ष तक फोटो आर्टिस्ट पद पर बेहतरीन सेवाएं प्रदान करने का मौका मिला। वे मानते हैं कि घुमक्कड़ी उनके जीवन की मूल पूंजी है। उनके द्वारा खींचे गए असंख्य चित्र हमारे देश की अस्मिता को गौरवान्वित करते हैं। श्री नैन आजकल घुमकड़ी फोटो पत्रकारिता के अलावा निर्णायक के रूप में यूथ फैस्टिवलों में अपनी

भूमिका निभाते हैं व पत्रकारिता विषय पर विभिन्न विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों का मार्ग दर्शन करते हैं। राजकिशन नैन को बहुआयामी छायांकन एवं लेखन कार्य में दक्ष व्यक्तित्व पाना वाकई दुर्लभ है। संघर्ष व कला के दम पर अपनी पहचान बनाने वाले व्यक्ति राजकिशन नैन शायराना अंदाज में घुमक्कड़ी पर किसी शयर का शेयर कहते हैं।

''सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहां,
ज़िंदगानी गर रही तो नौजवानी फिर कहां''

वे कहते हैं कि प्रभु हर व्यक्ति को कुछ खास कार्य के लिए सृजते हैं। प्रभु ने मुझे छायांकन के लिए सर्जा है। मैं प्रभु का ऋणी हूं। आर्ट फोटोग्राफी को समझने वाले लोग राजकिशन नैन को उतरी भारत में आर्ट फोटोग्राफी का पितामह कह कर पुकारते हैं। वे एक मात्र ऐसे फोटो आर्टिस्ट है जिनके नाम से कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, एमडी यूनिर्वसिटी, हरियाणा व साहित्य अकादमी,पंचकूला में तीन स्थाई चित्र दीर्घाएं स्थापित हैं।

अनेक बार मिला सम्मान

करीब 50 वर्ष से कैमरा थामें राजकिशन नैन को समय- समय विभिन्न कला साहित्य से जुड़ी संस्थाओं ने उनकी प्रतिभा को जानते हुए उन्हें 1971 में तत्कालिन राष्ट्रपति श्री वी.वी.गिरी द्वारा बेस्ट प्रेजीडेंट स्काउट पुरस्कार, वर्ष 2006-07 के लिए हिफा द्वारा कर्मयोगी सम्मान,2007-08 में हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा बाबू बाल मुकुंद सम्मान(साहित्यिक पत्रकारिता) में दिया गया। वर्ष 2009 में हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला ने हरियाणा के गांवों के इतिहास प्रलेखन के लिए शौध फैलोशिफ दिया। वर्ष 2012 में मनजीत बावा कला सम्मान से नवाजा गया। यही नहीं गत वर्ष उन्हें राजस्थान, अलवर में साहित्य संस्थान ने प्रथम नारायणी सम्मान से नवाज़ा।

फोटो के साथ साहित्य लेखन

फोटो के साथ साहित्य लेखन में भी उनका काई सानी नहीं है। उन्होंने 40 वर्ष के लंबे अर्से में राष्ट्रीय स्तर की धर्मयुग कादंबनी, हरियाणा संवाद, हरियाणा रिव्यू,नवनीत,साप्ताहिक हिंदुस्तान जैसी अनेक पत्रिकाओं में ज्वलंत व सम-सामयिक विषयों पर जहां अनेक लेखों का सर्जन किया है वहीं आकाशवाणी,रोहतक से प्रसारित अनेक कार्यक्रमों में विभिन्न विषयों पर वार्ता करके अच्छा व बेहतर करने करने का संदेश दिया है। उन्होंने इतिहास एवं संस्कृति को कुछ अनूठे प्रकार से ब्यां किया व उस पर फोटोग्राफी की। श्री नैन कहते है कि

''हल का हत्था थामे,लुहार को फाली काढते,
खाती को निमचक घड़ते,जोगी को सारंगी बजाते,
तेली को रूई पिनते,जुलाहे को ताना बुनते,
रंग रेज़ को गलेफ रंगते पाली को बांसुरी बजात,
स्त्रियों को चरखा कातते,चक्की पीसते,
पानी भरते व दूध बिलोते'' हुए देखता हूं तो मेरा माथा स्वतः उनकी प्रशस्ति में झुक जाता है। यही मेरे जीवन का सबल है और यही मेरे छायाःचित्रों के जनक हैं।

छायांकन के साथ लेखन कला

नैन बताते हैं कि उन्होंने सामयिक मुद्दों पर दैनिक हिंदुस्तान,राजस्थान पत्रिका, दैनिक ट्रिब्युन,नवभारत टाईम्स,जनसत्ता, हरिभूमि व साप्ताहिक पिंग में उनके अनेक लेख समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। फोटो आर्टिस्ट राजकिशन नैन कहते हैं कि धुमकड़ी उनके जीवन का धैय्य है। निबंध, कहानी, कविता लेखन मैं भी उनकी गहरी पकड़ है। हरियाणवी कहानियों में उनकी लोक ऋतु पुस्तक काफी चर्चित हुई थी इस पुस्तक में छः ललित निबंध काफी चर्चा में रहे। वे कहते हैं कि बचपन से ही उनकी रुचि अध्ययन में रही है। उन्होंने दसवी पास करते-करते गीता,महाभारत,पंचतंत्र व हितो उपदेश का अध्ययन कर लिया था। वे कुछ साहित्यकारों को याद करते हुए कहते हैं कि आचार्य चतुर सैन शास्त्री,बंकिम चटर्जी, रांगये राधव,अमृतलाल नागर के अलावा दैनिक संपादको में भीष्म साहनी, डॉ चंद्र त्रिखा, प्रभाष जोशी, सुरेंद्र प्रताप सिंह,शीला झुंझुनवाला,सादिया देहलवी,सर्वेश्वर दयाल सक्सैना,धर्मवीर भारती,कन्हैया लाल नंदन, मंगलेश डुबराल,राजेंद्र माथुर, संतोष तिवारी,ओम थानवी,विजय सहगल, नरेश कौशल जैसे तमाम साहित्य सेवियों से बहुत कुछ सीखने को मिला आज जो कुछ भी मैं हूं उनकी बदौलत हूं मैं दिल से उनका आभारी हूं।।

फोटोग्राफी तप से कम नहीं

वे कहते हैं कि फोटोग्राफी तप से कम नहीं है व वे अच्छे चित्र के लिए घंटो पानी में खड़े रह सकते हैं। घुटनों के बल रेंग सकते हैं। वे मानते हैं कि हर खास कार्य समय मांगता है। वे कहते हैं कि मैं नौकरी ना करता तो बेहतर होता क्योंकि मैने जीवन का बहुत समय नौकरी में व्यतीत किया किया जिसका मुझे मलाल है। मैने सेवानिवृति से दस वर्ष पूर्व नौकरी छोड़ दी थी। राजकिशन नैन अपने जीवन के कर्म की दिल से याद कर शकील बदायुनी का शेयर गर्व से कहते हैं कि

''मैं जिंदा हूं मुझे अ ना खुदा तुफान में ले चल,
मेरे ज़ोके अमल की मौत हैं साहिल के पर्दे मे''।

देहाती दुनिया के फाटो आर्टिस्ट के रूप में अपनी अमीट पहचान बनाने वाले राजकिशन नैन में लगन ,कुशलता, एकाग्रता,रग -रग में समाई हुई है। उन्होंने लंबे अर्से में जो मुकाम हासिल किया है उससे उनके समकालीन और पूर्व दिग्गज वंचित रहे।

मुंह बोलते चित्र

फोटो आर्टिस्ट राजकिशन नैन के कैमरे ने सामाजिक परंपराओं को करीब से देखा है। देशज अस्मिता का अक्स उनके द्वारा खैंचे गए चित्रों में मुहं बोलता हुआ दिखाई देता है। बुढ़ी दादी अथवा नानी की झुरियों भरे चेहरे में उनका कैमरा मात्र एक शकल नहीं अपितु हजारों वर्षो का इतिहास तलाशता महसुस होता है। हर क्षण- हर जगह ग्राम समाज के काम धाम समाज की धरोहरे और सामाजिक सरोकार अपनी-अपनी कहानी कहने के लिए उनके कैमरे की बाट जोहते हैं। लोग उनके छाया चित्रों में उनकी आंतरिक छटपटाहट और विचार शीलता की झलक पाकर गदबद हो उठते हैं। वे काम के तौर तरीकों के बारे में बताते हुए विनम्रता पूर्व कहते है कि

''सुर्खरुहोना तो मेरा आप ने देखा ही है
काश मेरा खू पसीना एक करना देखते''

सबसे अलग चलने की फितरत वाले अनन्य एवं अतुलनीय प्रतिष्ठा के धनी राजकिशन कहते हैं कि वह लेखन सर्जन व छायांकन के लिए देश की माटी का मान रखने के लिए लहू की आखिरी बूंद तक कार्य करेंगे।

सुरेद्र सिंह मलिक

विक्रमी 2072-73

पौष-माघ — जनवरी | JANUARY

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
	1 शु.चतुर्दशी	2 पूर्णिमा	3 कृ.प्रतिपदा/द्वितीया	4 कृ.तृतीया	5 कृ.चतुर्थी	6 कृ.पंचमी
7 कृ.षष्ठी	8 कृ.सप्तमी	9 कृ.अष्टमी	10 कृ.नवमी	11 कृ.दशमी	12 कृ.एकादशी	13 कृ.द्वादशी
14 कृ.त्रयोदशी	15 कृ.चतुर्दशी	16 अमावस्या	17 अमावस्या	18 शु.प्रतिपदा	19 शु.द्वितीया	20 शु.तृतीया
21 शु.चतुर्थी	22 शु.पंचमी	23 शु.षष्ठी	24 शु.सप्तमी	25 शु.अष्टमी	26 शु.नवमी	27 शु.दशमी
28 शु.एकादशी	29 शु.द्वादशी/त्रयोदशी	30 शु.चतुर्दशी	31 पूर्णिमा			

माघ-फाल्गुन — फरवरी | FEBRUARY

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
				1 कृ.प्रतिपदा	2 कृ.द्वितीया	3 कृ.तृतीया
4 कृ.चतुर्थी	5 कृ.पंचमी	6 कृ.षष्ठी	7 कृ.सप्तमी	8 कृ.अष्टमी	9 कृ.नवमी	10 कृ.दशमी
11 कृ.एकादशी	12 कृ.द्वादशी	13 कृ.त्रयोदशी	14 कृ.चतुर्दशी	15 अमावस्या	16 शु.प्रतिपदा	17 शु.द्वितीया
18 शु.तृतीया	19 शु.चतुर्थी	20 शु.पंचमी	21 शु.षष्ठी	22 शु.सप्तमी	23 शु.अष्टमी	24 शु.नवमी
25 शु.दशमी	26 शु.एकादशी	27 शु.द्वादशी	28 शु.त्रयोदशी			

वैशाख-ज्येष्ठ — मई | MAY

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
		1 कृ.प्रतिपदा	2 कृ.द्वितीया	3 कृ.तृतीया	4 कृ.चतुर्थी	5 कृ.पंचमी
6 कृ.षष्ठी	7 कृ.सप्तमी	8 कृ.अष्टमी	9 कृ.नवमी	10 कृ.दशमी	11 कृ.एकादशी	12 कृ.द्वादशी
13 कृ.त्रयोदशी	14 कृ.चतुर्दशी	15 अमावस्या	16 शु.प्रतिपदा	17 शु.द्वितीया	18 शु.तृतीया/चतुर्थी	19 शु.पंचमी
20 शु.षष्ठी	21 शु.सप्तमी	22 शु.अष्टमी	23 शु.नवमी	24 शु.दशमी	25 शु.एकादशी	26 शु.द्वादशी
27 शु.त्रयोदशी	28 शु.चतुर्दशी	29 पूर्णिमा	30 कृ.प्रतिपदा	31 कृ.द्वितीया		

ज्येष्ठ-आषाढ़ — जून | JUNE

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
					1 कृ.तृतीया	2 कृ.चतुर्थी
3 कृ.पंचमी	4 कृ.पंचमी	5 कृ.षष्ठी	6 कृ.सप्तमी	7 कृ.अष्टमी	8 कृ.नवमी	9 कृ.दशमी
10 कृ.एकादशी	11 कृ.द्वादशी	12 कृ.त्रयोदशी/चतुर्दशी	13 अमावस्या	14 शु.प्रतिपदा	15 शु.द्वितीया	16 शु.तृतीया
17 शु.चतुर्थी	18 शु.पंचमी	19 शु.षष्ठी/सप्तमी	20 शु.अष्टमी	21 शु.नवमी	22 शु.दशमी	23 शु.एकादशी
24 शु.द्वादशी	25 शु.त्रयोदशी	26 शु.त्रयोदशी	27 शु.चतुर्दशी	28 पूर्णिमा	29 कृ.प्रतिपदा	30 कृ.द्वितीया

भाद्र-आश्विन — सितम्बर | SEPTEMBER

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
30 कृ.पंचमी/षष्ठी						1 कृ.षष्ठी
2 कृ.सप्तमी	3 कृ.अष्टमी	4 कृ.नवमी	5 कृ.दशमी	6 कृ.एकादशी	7 कृ.द्वादशी/त्रयोदशी	8 कृ.चतुर्दशी
9 अमावस्या	10 शु.प्रतिपदा	11 शु.द्वितीया	12 शु.तृतीया	13 शु.चतुर्थी	14 शु.पंचमी	15 शु.षष्ठी
16 शु.सप्तमी	17 शु.अष्टमी	18 शु.नवमी	19 शु.दशमी	20 शु.एकादशी	21 शु.द्वादशी	22 शु.त्रयोदशी
23 शु.चतुर्दशी	24 शु.चतुर्दशी	25 पूर्णिमा	26 कृ.प्रतिपदा	27 कृ.द्वितीया	28 कृ.तृतीया	29 कृ.चतुर्थी

आश्विन-कार्तिक — अक्तूबर | OCTOBER

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
	1 कृ.सप्तमी	2 कृ.अष्टमी	3 कृ.नवमी	4 कृ.नवमी	5 कृ.दशमी	6 कृ.द्वादशी
7 कृ.त्रयोदशी	8 कृ.चतुर्दशी	9 अमावस्या	10 शु.प्रतिपदा/द्वितीया	11 शु.तृतीया	12 शु.चतुर्थी	13 शु.पंचमी
14 शु.षष्ठी	15 शु.षष्ठी	16 शु.सप्तमी	17 शु.अष्टमी	18 शु.नवमी	19 शु.दशमी	20 शु.एकादशी
21 शु.द्वादशी	22 शु.त्रयोदशी	23 शु.चतुर्दशी	24 पूर्णिमा	25 कृ.प्रतिपदा	26 कृ.द्वितीया	27 कृ.तृतीया
28 कृ.चतुर्थी	29 कृ.पंचमी	30 कृ.षष्ठी	31 कृ.सप्तमी			

गणतंत्र दिवस	26 जनवरी
सर छोटू राम जयंती/बसंत पंचमी	12 फरवरी
गुरु रविदास जयंती	22 फरवरी
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयंती	4 मार्च
महाशिवरात्रि	7 मार्च
भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव शहीदी दिवस	23 मार्च
होली	24 मार्च
गुड फ्राइडे (वैकल्पिक)	25 मार्च
वैसाखी	13 अप्रैल
डॉ. भीम राव अम्बेडकर जयंती	14 अप्रैल
राम नवमी	15 अप्रैल
महावीर जयंती	20 अप्रैल
भगवान परशुराम जयंती	9 मई
बुद्ध पूर्णिमा	21 मई
महाराणा प्रताप जयंती	7 जून
गुरु अर्जन देव शहीदी दिवस (वैकल्पिक)	8 जून
संत कबीर जयंती	20 जून
ईद-उल-फितर	6 जुलाई

2018

फाल्गुन-चैत्र मार्च | MARCH

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
				1 शु.चतुर्दशी/पूर्णिमा	2 कृ.प्रतिपदा	3 कृ.द्वितीया
4 कृ.तृतीया	5 कृ.चतुर्थी	6 कृ.पंचमी	7 कृ.षष्ठी	8 कृ.सप्तमी	9 कृ.अष्टमी	10 कृ.नवमी
11 कृ.नवमी	12 कृ.दशमी	13 कृ.एकादशी	14 कृ.द्वादशी	15 कृ.त्रयोदशी	16 कृ.चतुर्दशी	17 अमावस्या
18 शु.प्रतिपदा	19 शु.द्वितीया	20 शु.तृतीया	21 शु.चतुर्थी	22 शु.पंचमी	23 शु.षष्ठी	24 शु.सप्तमी
25 शु.अष्टमी/नवमी	26 शु.दशमी	27 शु.एकादशी	28 शु.द्वादशी	29 शु.त्रयोदशी	30 शु.चतुर्दशी	31 पूर्णिमा

चैत्र-वैशाख अप्रैल | APRIL

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
1 कृ.प्रतिपदा	2 कृ.द्वितीया	3 कृ.तृतीया	4 कृ.चतुर्थी	5 कृ.पंचमी	6 कृ.षष्ठी	7 कृ.सप्तमी
8 कृ.अष्टमी	9 कृ.नवमी	10 कृ.दशमी	11 कृ.दशमी	12 कृ.एकादशी	13 कृ.द्वादशी	14 कृ.त्रयोदशी
15 कृ.चतुर्दशी	16 अमावस्या/शु.प्रतिपदा	17 शु.द्वितीया	18 शु.तृतीया	19 शु.चतुर्थी	20 शु.पंचमी	21 शु.षष्ठी
22 शु.सप्तमी	23 शु.अष्टमी	24 शु.नवमी	25 शु.दशमी	26 शु.एकादशी	27 शु.द्वादशी	28 शु.त्रयोदशी
29 शु.चतुर्दशी	30 पूर्णिमा					

आषाढ़-श्रावण जुलाई | JULY

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
1 कृ.तृतीया	2 कृ.चतुर्थी	3 कृ.पंचमी	4 कृ.षष्ठी	5 कृ.सप्तमी	6 कृ.अष्टमी	7 कृ.नवमी
8 कृ.दशमी	9 कृ.एकादशी	10 कृ.द्वादशी	11 कृ.त्रयोदशी	12 कृ.चतुर्दशी	13 अमावस्या/शु.प्रतिपदा	14 शु.द्वितीया
15 शु.तृतीया	16 शु.चतुर्थी	17 शु.पंचमी	18 शु.षष्ठी	19 शु.सप्तमी	20 शु.अष्टमी	21 शु.नवमी
22 शु.दशमी	23 शु.एकादशी	24 शु.द्वादशी	25 शु.त्रयोदशी	26 शु.चतुर्दशी	27 पूर्णिमा	28 कृ.प्रतिपदा
29 कृ.द्वितीया	30 कृ.द्वितीया	31 कृ.तृतीया				

श्रावण-भाद्र अगस्त | AUGUST

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
			1 कृ.चतुर्थी	2 कृ.पंचमी	3 कृ.षष्ठी	4 कृ.सप्तमी
5 कृ.अष्टमी	6 कृ.नवमी	7 कृ.दशमी/एकादशी	8 कृ.द्वादशी	9 कृ.त्रयोदशी	10 कृ.चतुर्दशी	11 अमावस्या
12 शु.प्रतिपदा	13 शु.द्वितीया/तृतीया	14 शु.चतुर्थी	15 शु.पंचमी	16 शु.षष्ठी	17 शु.सप्तमी	18 शु.अष्टमी
19 शु.नवमी	20 शु.दशमी	21 शु.एकादशी	22 शु.एकादशी	23 शु.द्वादशी	24 शु.त्रयोदशी	25 शु.चतुर्दशी
26 पूर्णिमा	27 कृ.प्रतिपदा	28 कृ.द्वितीया	29 कृ.तृतीया	30 कृ.चतुर्थी	31 कृ.पंचमी	

कार्तिक-अग्रहायण नवम्बर | NOVEMBER

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
				1 कृ.अष्टमी	2 कृ.नवमी/दशमी	3 कृ.एकादशी
4 कृ.द्वादशी	5 कृ.त्रयोदशी	6 कृ.चतुर्दशी	7 अमावस्या	8 शु.प्रतिपदा	9 शु.द्वितीया	10 शु.तृतीया
11 शु.चतुर्थी	12 शु.पंचमी	13 शु.षष्ठी	14 शु.सप्तमी	15 शु.सप्तमी	16 शु.अष्टमी	17 शु.नवमी
18 शु.दशमी	19 शु.एकादशी	20 शु.द्वादशी	21 शु.त्रयोदशी	22 शु.चतुर्दशी	23 पूर्णिमा	24 कृ.प्रतिपदा/द्वितीया
25 कृ.तृतीया	26 कृ.चतुर्थी	27 कृ.पंचमी	28 कृ.षष्ठी	29 कृ.सप्तमी	30 कृ.अष्टमी	

अग्रहायण-पौष दिसम्बर | DECEMBER

रवि	सोम	मंगल	बुध	वीर	शुक्र	शनि
30 कृ.नवमी	31 कृ.दशमी					1 कृ.नवमी
2 कृ.दशमी	3 कृ.एकादशी	4 कृ.द्वादशी	5 कृ.त्रयोदशी	6 कृ.चतुर्दशी	7 अमावस्या	8 शु.प्रतिपदा
9 शु.द्वितीया	10 शु.तृतीया	11 शु.चतुर्थी	12 शु.पंचमी	13 शु.षष्ठी	14 शु.सप्तमी	15 शु.अष्टमी
16 शु.नवमी	17 शु.नवमी	18 शु.दशमी	19 शु.एकादशी/द्वादशी	20 शु.त्रयोदशी	21 शु.चतुर्दशी	22 पूर्णिमा
23 कृ.प्रतिपदा	24 कृ.द्वितीया	25 कृ.तृतीया	26 कृ.चतुर्थी	27 कृ.पंचमी/षष्ठी	28 कृ.सप्तमी	29 कृ.अष्टमी

शहीद उधम सिंह शहीदी दिवस (वैकल्पिक)	31 जुलाई	हरियाणा वीर एवं शहीदी दिवस	23 सितम्बर	करवा चौथ (वैकल्पिक)	19 अक्तूबर	गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस (वैकल्पिक)	24 नवम्बर
स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त	महाराजा अग्रसेन जयंती	1 अक्तूबर	दीवाली	30 अक्तूबर	मिलाद-उल-नबी/ईद-ए-मिलाद	13 दिसम्बर
रक्षा बंधन (वैकल्पिक)	18 अगस्त	महात्मा गांधी जयंती	2 अक्तूबर	गोवर्धन पूजा (वैकल्पिक)	31 अक्तूबर	क्रिसमस	25 दिसम्बर
जन्माष्टमी	25 अगस्त	दशहरा	11 अक्तूबर	हरियाणा दिवस/विश्वकर्मा दिवस	1 नवम्बर	शहीद उधम सिंह जयंती	26 दिसम्बर
तीज	4 सितम्बर	मुहर्रम	12 अक्तूबर	छठ पूजा (वैकल्पिक)	6 नवम्बर		
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	12 सितम्बर	महर्षि वाल्मीकि जयंती	16 अक्तूबर	गुरु नानक देव जयंती	14 नवम्बर	राजपत्रित अवकाश ■ वैकल्पिक अवकाश	

शख्सियतें जो जुदा हो गई- श्रंद्धाजलि

सृजन एक दैवीय अनुभूति है। प्रकृति में भी सृजन एक आह्लादकारी प्रक्रिया है जिसमें संपूर्ण प्रकृति भासमान होती है। मानव सभ्यता के आरंभिक काल में सृजन का माध्यम काव्य था। कविता थी। इसीलिए कवि का स्थान रवि से भी ऊंचा कहा गया है। प्रत्येक मनुष्य में सृजन की अजस्र धरा रहती है। यह वही पावन सृजन धरा है जो महर्षि वाल्मीकि, वेद व्यास, महाकवि सूरदास, तुलसी दास, मीराबाई, पं. लखमीचंद से होती हुई समकालीन रचनाशीलता तक पहुंचती है। साहित्य सेवा विशेषकर सृजनात्मक साहित्य सेवा इसी पावन सृजन धरा का एक रूप है। हिंदी साहित्य में साधना की समृद्ध व गौरवशाली परंपरा रही है। साधना में स्वाभिमान का विशेष महत्त्व रहता है। कहा जाता है कि साहित्यकार जितना बड़ा होता है वह व्यक्ति भी उतना ही बड़ा होता है। इसी पावन सृजन धरा की स्मृति में प्रस्तुत है यह विनम्र श्रद्धाजंलि

डॉ जयनारायण कौशिक

4 नवम्बर, 1935 को जिला झज्जर के गांव जहांगीरपुर में जन्मे वरिष्ठ साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं चिंतक डॉ. जयनारायण कौशिक अब हमारे बीच नहीं हैं। भारतीय साहित्य के मर्मज्ञ अध्येयता एवं हरियाणा के लोकसाहित्य व संस्कृति के अधिकारी विद्वान डॉ.कौशिक को हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा प्रतिष्ठित पं. लखमीचंद सम्मान तथा हरियाणा गौरव सम्मान से अलंकृत किया गया। उन्हें दिल्ली हिन्दी अकादमी द्वारा 1996-97 में साहित्यकार सम्मान प्रदान किया गया। भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा उन्हें 2004 में राहुल सांस्कृत्यायन सम्मान भी प्रदान किया गया। डॉ. कौशिक ने भर्तृहरि के शतकत्राय तथा महात्मा बुद्ध के धमपद का हरियाणवी में पद्यानुवाद भी किया। कोश साहित्य में भी डॉ.कौशिक का उल्लेखनीय योगदान रहा। उन्होंने हरियाणवी-हिन्दी कोश, वैदिक हरियाणवी कोश, लोक नाट्य-कथा कोश हरियाणवी प्रत्यय कोश आदि का सपफल संपादन भी किया। हरियाणवी लोकसंस्कृति पर आधारित उनकी माटी का मोल गांव के चलचित्रा तथा अपना-अपना राग रचनाएं विशेष रूप से चर्चित तथा पुरस्कृत रहीं। राइन नदी से सिन्धु तक, एक पंथ-दो काज तथा मेरी कैलाश मानसरोवर यात्रा संस्मरण की पुस्तकें हिंदी साहित्य में विशेष चर्चित रहीं। डॉ. कौशिक 1988-90 तक हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक भी रहे। उनके कार्यकाल में हरियाणवी भाषा, साहित्य व संस्कृति पर अकादमी द्वारा उल्लेखनीय कार्य किया गया। डॉ.कौशिक हरियाणवी भाषा एवं साहित्य के विकास एवं उत्थान के लिए निरन्तर चिन्तनशील रहते थे। उन्होंने हिंदी तथा हरियाणवी की सभी विधओं में एकाध्किार रूप से लिखा तथा 80 से अधिक पुस्तकों की रचना की। उनके कृतित्व व व्यक्तित्व पर कई विद्यालयों के अन्तर्गत शोध कार्य सम्पन्न हो चुका है। हरियाणवी के नये लेखकों के लिए डॉ.कौशिक का साहित्य एक सन्दर्भ साहित्य के रूप प्ररेणा का कार्य करेगा। डॉ.कौशिक की कर्मस्थली चाहे दिल्ली रही हो लेकिन वे मन व आत्मा से सदा हरियाणवी रहे। अपनी भाषा, साहित्य व संस्कृति के प्रति निष्काप भाव से समर्पित ऐसे साध्क पर हरियाणा को सदा गर्व रहेगा तथा हरियाणवी की रचनाधर्मिता उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

डॉ हरिशचन्द्र वर्मा

बहुआयामी प्रतिभा के साहित्यकार एवं संस्कृति चेता आचार्य डॉ. हरिशचन्द्र वर्मा अपने सौम्य एवं सादगी पूर्ण व्यक्तित्व एवं विलक्षण प्रतिभा के लिए सदैव याद किये जायेंगे। उन्होंने एक सर्जक, समालोचक, साहित्येहास लेखक और शिक्षा विद आदि विभिन्न रूपों में हरियाणा के हिन्दी व हरियाणवी साहित्य की बहुमूल्य सेवा की। साहित्य में अप्रतिम योगदान के दृष्टिगत उन्हें हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा सूर पुरस्कार-2000, हरियाणा साहित्य रत्न सम्मान-2008 तथा आजीवन साहित्य साधना सम्मान-वर्ष 2014 से अलंकृत किया गया। डॉ.वर्मा ने हिन्दी साहित्य को लगभग 30 उत्कृष्ठ कृतियां प्रदान कीं। इनमें 16 पुस्तकें शोध एवं समालोचना की, दो पुस्तकें साहित्येतिहास की सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त छह कविता संगह तथा व्यंग्य संग्रह व उपन्यास भी उनके विशेष रूप से चर्चित रहे। डॉ.वर्मा महर्षिदयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के हिन्दी विभाग से प्रोपफेसर व अध्यक्ष के पद पर रहते हुए हिन्दी साहित्य की बहुमूल्य सेवा की। संस्कृत कविता में रोमांटिक प्रवृत्ति, नयी कविता के नाट्य काव्य जलसी साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन आदि उनके विशिष्ट शोधपरक ग्रंथ हैं। इन ग्रंथों में उनकी विद्वता, शोधदृष्टि, वादमुक्त विवेचना तथा विलक्षण भाषिक अभिव्यक्ति के दर्शन होते हैं। हिन्दी साहित्य का इतिहास तथा हिन्दी साहित्य का आदिकाल उनकी साहित्येतिहास संबंधी उल्लेखनीय पुस्तकें हैं। डॉ.वर्मा के कविता संग्रह सूरज नहीं बुझेगा, छक्के पर छक्के तथा संस्कृति के आलोक शिखर आधुनिक भाव बोध की कृतियां हैं। डॉ.वर्मा भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों के प्रबल पक्षधर रहे हैं। डॉ.वर्मा एक सौम्य व सरल व्यक्तित्व के धनी मर्मज्ञ विद्वान, समालोचक एवं कवि के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगे। आने वाली युवा पीढ़ियों के लिए उनका साहित्य सदैव प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता रहेगा।

साहित्यसंगीतकला विहीनः साक्षात पशुः पुच्छविषाणहीनः।
(साहित्य संगीत और कला से हीन पुरूष साक्षात पशु ही है जिसके पूंछ और सींग नहीं हैं।)

-भर्तृहरि

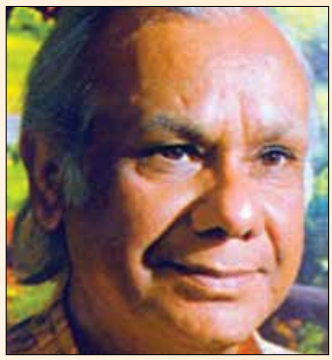

डॉ.बलदेव वंशी

वरिष्ठ साहित्यकार, कवि, समालोचक एवं संत साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डॉ. बलदेव वंशी के आकस्मिक निधन से साहित्य जगत शोक संतप्त है। अभी लगभग एक सप्ताह पहले ही उनका फोन आया था। उन्होंने अकादमी की नये वर्ष की योजनाओं के संबन्ध में जानकारी लेनी चाही थी। उन्हें संभवत् मेरी सेवानिवृत्ति की जानकारी नहीं रही होगी। डॉ. बलदेव वंशी ने 14 कविता संग्रह, 12 आलोचना ग्रंथ, नाटक, कहानियां और भारत के संतों पर कई पुस्तकें हिन्दी साहित्य को दी। डॉ.वंशी का कृतित्त्व भी बहु विविधता पूर्ण रहा। उन्होंने छंद में कविताएं लिखीं, गीत लिखे तो छंद युक्त कविताएं भी लिखी। डॉ.वंशी ने चार दशक पूर्व विचार कविता पत्रिका के माध्यम से हिन्दी कविता धरा को एक नयी दिशा दी ओर नयी प्रतिभाओं को एक मंच प्रदान किया। मध्यकालीन संत परंपरा पर शोध करते हुए कबीर, दादू, सूरदास, मीराबाई, सहजोवाई, गरीबदास सहित अनेक संतों पर शोधपरक ग्रंथों की रचना की। भारतीय संत परंपरा, भारत के महान संत, भारतीय नारी संत परंपरा आदि उनकी विशेष चर्चित शोधपरक कृतियां हैं। हिंदी साहित्य के प्रति उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ.बलदेव वंशी को साहित्य भूषण सम्मान, उत्तर प्रदेश सरकार, शिरोमणि साहित्यकार सम्मान, पंजाब सरकार, साहित्यकार सम्मान, दिल्ली सरकार आदि सम्मानों से विभूषित किया गया। अपने विविध आयामी योगदान के लिए डॉ.बलदेव वंशी के प्रति हिंदी साहित्य जगत् ऋणी रहेगा।

डॉ.विजेन्द्र कुमार,
मकान नं.1909, सेक्टर-26, पंचकूला

डॉ. रमेश कुंतल मेघ को साहित्य अकादमी पुरस्कार

हिंदी के वयोवृद्ध आलोचक एवं सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. रमेश कुंतल मेघ की 'विश्व मिथक सरित सागर' को हिंदी का साहित्य पुरस्कार प्रदान करने के लिए चयनित किया गया है। पहली बार हरियाणा को लेखक को इस पुरस्कार से नवाजा जा रहा है, जोकि हरियाणा के लिए गौरव की बात है। उनकी इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र, समाजशास्त्र, सौंदर्यबोधशास्त्र, समाजविज्ञानों के हाशियों पर भी मिथकों के नाना 'पाठरूपों' (भरतपाठ से लेकर उत्तर-आधुनिक पाठ) और 'सामाजिक पंचांगों' के बारे में चर्चा की गई है। इसमें विश्व के लगभग 35 देशों की मिथक-गाथा, विश्व धरोहर की नौ संस्कृतियों की मिथक-चित्र-आलेखकारी, विश्व के मिथक-भौगोलिक मानचित्रों का लेखा-जोखा और दुर्लभ चित्रफलकों की कूची से उकेरती विश्वमिथक गाथाओं को शामिल किया गया है। यह पुरस्कार 12 फरवरी को दिल्ली में होने वाले साहित्योत्सव में प्रदान किया जाएगा। यह पुरस्कार एक जनवरी 2011 से 31 दिसंबर 2015 के दौरान प्रकाशित पुस्तकों के लिए दिए गए।

ओलाचना व चितंन का समेकित रूप

87 वर्षीय डॉ. रमेश कुंतल मेघ के लिए आलोचना एक वैश्विक चिंतन है। इन्होंने प्रगतिवादी आलोचना के क्षेत्र विस्तार किया। मेघ ने आलोचना में अंतरानुशासन को विशेष महत्त्व दिया है। उनके अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र आधुनिकता, सौंदर्यशास्त्र और समाजशास्त्र हैं। मेघ आलोचकों और विचारकों की उस परंपरा से आते हैं जिन्होंने कभी भी अपने आप को किसी विचारधारा या वाद में समेटकर नहीं रखा। चाहे सैद्धांतिकी हो, चाहे सौंदर्यशास्त्र हो या फिर मिथक शास्त्र इन सभी विषयों को उन्होंने अपनी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक और समाज वैज्ञानिक दृष्टि से एक वैश्विक ऊंचाई प्रदान की है। उनके व्यक्तित्व में एक और संश्लिष्टता है। वे अपने आप को कार्ल मार्क्स का ध्यान शिष्य और आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का अकिंचन शिष्य मानते है।

जाति-धर्म-प्रांत से मुक्त

डॉ. रमेश कुंतल मेघ का जन्म 1 जून, 1931 को हुआ। उन्होंने देश-विदेश के चौदह-सोलह शहरों में भ्रमण किया। उन्होंने भौतिक-गणित-रसायन शास्त्र में बी.एससी.(इलाहाबाद) की और उसके बाद फिर साहित्य में पीएचडी (बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी) की। उन्होंने बिहार यूनिवर्सिटी (आरा), पंजाब यूनिवर्सिटी (चंडीगढ़), गुरुनानकदेव यूनिवर्सिटी (अमृतसर), यूनिवर्सिटी ऑफ आरकंसास पाइनब्लक (अमेरिका) में अध्यापन किया। उनकी प्रमुख कृतियां मिथक और स्वप्न, कामायनी की मनस्सौंदर्य सामाजिक भूमिका, तुलसीः आधुनिक वातायन से, आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण, मध्ययुगीन रस दर्शन और समकालीन सौंदर्य बोध, क्योंकि समय एक शब्द है, कला शास्त्र और मध्ययुगीन भाषिकी क्रांतियां, सौंदर्य-मूल्य और मूल्यांकन, अथातो सौंदर्य जिज्ञासा, साक्षी है सौंदर्य प्राश्निक, वाग्मी हो लो !, मन खंजन किनके?, कामायनी पर नई किताब, खिड़कियों पर आकाशदीप कलाकृति शामिल हैं।

तीन साल में हुए क्रांतिकारी बदलाव

अधिकारियों के लिए हुआ मोटिवेशन सेशन

सरकार जनहित में बेहतर कार्य कर रही है और करती रहेगी। यह बात हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने हिमाचल प्रदेश के टिंबर ट्रेल में आयोजित तीन दिवसीय चिंतन शिविर के समापन अवसर पर पिंजौर में हुए एक पत्रकार सम्मेलन को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि शिविर में इस विषय पर खुलकर चर्चा हुई कि हरियाणा और अधिक समृद्ध और खुशहाल कैसे हो और वर्ष 2019, 2022 व 2030 में हरियाणा का स्वरूप क्या हो, इस पर भी मंत्रियों की अध्यक्षता में गठित पांच समूहों ने खुलकर चर्चा की। उल्लेखनीय है कि इस शिविर में राजनीतिज्ञों के अलावा मीडिया से जुड़े लोगों व हरियाणा के यंग अचीवर को भी बुलाया गया था। मेरे सपनों का हरियाणा सत्र में युवाओं ने अपने विचार व्यक्त किए। शिविर में जाति-पाति के संबंध में लोगों की मानसिकता में बदलाव कैसे लाया जाए, इस पर भी गहन चिंतन हुआ।

> हरियाणा सरकार का पहला चिंतन शिविर न केवल एक अभूतपूर्व आयोजन था वरन इसके उत्साहबर्धक परिणाम भी अत्यंत उत्साहजनक रहे हैं और इससे नव हरियाणा निर्माण के मार्ग पर चलने के लिए एक नई ऊर्जा उत्पन्न हुई है। अब राज्य के अंतिम व्यक्ति तक विकास की धारा पहुंचाने और उसके जीवन में खुशियां भरने के लिए हरियाणा के सभी वरिष्ठ अधिकारी एक टीम के रूप में काम करेंगें।
>
> मनोहर लाल, मुख्यमंत्री हरियाणा

गैर कर राजस्व जुटाने का प्रयास

मुख्यमंत्री ने बताया कि हरियाणा में संसाधनों की कोई कमी नहीं है, लेकिन सरकार जनता पर भार डाले बिना गैर कर राजस्व जुटाने के लिए प्रयास करेगी। सरकार द्वारा पं. दीनदयाल उपाध्याय के अन्त्योदय को हासिल करने के लिए अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति के सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं।

हरियाणा में क्रांतिकारी बदलाव

मुख्यमंत्री ने कहा कि हरियाणा में क्रांतिकारी बदलाव लाए गए हैं, जिसके दृष्टिगत अधिकारियों को निर्भय होकर स्वतंत्र रूप से कार्य करने की छूट दी गई है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार की कार्य प्रणाली व शैली में पारदर्शिता और भ्रष्टाचार पर जीरो टोलरैंस की नीति के परिणामस्वरूप लोगों का प्रशासन में विश्वास बढ़ा है।

विकास की एक नई दिशा निर्धारित

अगले दो वर्षों के विकास रोडमैप के संबंध में मुख्यमंत्री ने कहा कि विकास की हमने एक नई दिशा निर्धारित की है। उन्होंने कहा कि हम अगले दो वर्षों के दौरान प्रदेश में विकास कार्यों में और अधिक गति लाने के लिए संकल्पित हैं। उन्होंने कहा कि वर्ष

2022 तक हर व्यक्ति को आवास सुविधा उपलब्ध करवाना उनकी सरकार का लक्ष्य है।

अल्पकाल में अधिक विकास कार्य

प्रदेश में लोगों को 51 वर्षों तक शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल आदि जैसी मूलभूत सुविधाएं न मिलने के संबंध में उन्होंने कहा कि इस कार्यकाल को 48+3 वर्षों के रूप में देखना होगा। उन्होंने कहा कि वे पहली बार विधायक बने और पहली बार ही मुख्यमंत्री बन गए। किसी भी नई सरकार को राज्य की कार्य प्रणाली समझने और उसे ठीक करने में एक वर्ष लग जाता है, फिर भी हमने अपने इस अल्पकाल में इतने अधिक विकास कार्य करवाए हैं कि पिछली सरकार ने अपने 10 वर्षों के कार्यकाल में भी नहीं करवाए हैं।

स्वैच्छा से कलेक्टर रेट पर भूमि अधिग्रहण

उन्होंने कहा कि पिछली सरकारें केवल भ्रष्टाचार करने के लिए जमीन का अधिग्रहण करती थी, लेकिन हमारी सरकार ने एक इंच जमीन का अधिग्रहण नहीं किया, बल्कि लोगों ने स्वैच्छा से कलैक्टर दर पर भूमि बेचने के लिए ई-भूमि पोर्टल पर अपनी जमीन बेचने पर सहमति व्यक्त की है।

व्यवस्था ठीक करने का कार्य

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने व्यवस्था ठीक करने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि सरकार ने स्वैच्छिक शक्तियों को काफी हद तक कम किया है। सीएलयू करने व लाइसैंस देने के अधिकार नगर एवं ग्राम आयोजना विभाग का होता है, जबकि वर्ष 1991 से मुख्यमंत्री की इच्छानुसार अर्थात इंटरनल कंक्रैंस के लिए फाईल मुख्यमंत्री के पास जाती थी अर्थात मुख्यमंत्री ही सीएलयू प्रदान करते थे, जो भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा जरिया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने पिछले वर्ष एक नवंबर 2016 को इस

शिविर में क्या रहे चिंतन के विषय

कौशल विकास और औद्योगिक प्रशिक्षण

हरियाणा के शिक्षामंत्री श्री राम बिलास शर्मा की अध्यक्षता और उद्योग मंत्री श्री विपुल गोयल की सह-अध्यक्षता में ग्रुप तीन की सिफारिशों को कौशल विकास और औद्योगिक प्रशिक्षण के बारे में बताया गया कि सक्षम युवा योजना पहले ही क्रियान्वित की जा चुकी है, ताकि युवाओं को कौशल सिखाकर उन्हें रोजगारपरक व रोजगार सृजक बनाया जा सके। उन्होंने ग्रुप के सदस्यों द्वारा सुधार योजनाओं की सिफारिशों के बारे में बताया कि आईटीआई में औद्योगिक प्रशिक्षण की ओवरहोलिंग, कौशल में एजेंसियों के मूल्यांकन और सर्टिफिकेशन में सुदृढीकरण, कौशल के लिए बेरोजगार युवकों को प्रशिक्षण और नौकरी के लिए अभियान करना शामिल है।

शहरी कायाकल्प

शहरी स्थानीय निकाय मंत्री कविता जैन की अध्यक्षता और सहकारिता राज्य मंत्री श्री मनीष कुमार ग्रोवर की सह-अध्यक्षता में ग्रुप चार में शहरी कायाकल्प से सम्बन्धित चर्चा की गई, जिसमें बताया गया कि शहरी क्षेत्रों में आवास की समस्या तेजी से बढ़ रही है। हालांकि शहरी क्षेत्रों में रेंटल हाउसिंग पर जोर दिया जाना चाहिए और इसके तहत निजी क्षेत्र को शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने सुझाव देते हुए बताया कि स्टेट टेंनसी एक्ट में मॉडल टेंनसी एक्ट के प्रावधान को जोड़ा जाना चाहिए ताकि रेंटल हाउसिंग बनाने की प्रक्रिया में तेजी आए। शहरी क्षेत्रों में इन्क्लूसिव स्लम डिवेलपमेंट और औद्योगिक आवास पर भी ध्यान देना चाहिए।

ग्रामीण विकास

श्रीमती कविता जैन ने ग्रामीण क्षेत्रों में सामान्य सुविधाओं की आवश्यकताओं पर जोर देते हुए कहा कि हमें शहरों की तर्ज पर गांवों में भी सुविधा देनी चाहिए ताकि उनका जीवन भी बेहतर हो सकें तथा वे ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की तरफ पलायन न करें। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार शहरीकरण के साथ साथ सभी क्षेत्रों मे बदलाव कर रही है।

पानी की हर बूंद का सदुपयोग

हरियाणा के सभी तालाबों की सफाई करवाई जाएंगी ताकि कुदरती पानी का संरक्षण करके उसकी बचत की जा सकें। इसके अलावा, राज्य में जलघरों के ऊपर सोलर सिस्टम को स्थापित करके पानी के वाष्पीकरण को रोका जाएगा। इससे जहां पानी की बचत होगी वहीं दूसरी ओर ऊर्जा के स्रोतों को भी बढाया जाएगा। यह जानकारी हरियाणा के लोक निर्माण मंत्री राव नरवीर सिंह की अध्यक्षता में आयोजित पानी की हर बूंद का सदुपयोग विषय पर आयोजित सत्र में दी गई। उन्होंने कहा कि राज्य के पास पानी के सीमित स्रोत हैं परंतु हमारे पास जो स्रोत हैं उनका सदुयोग होना चाहिए ताकि पानी की बचत करके उसे अन्य कार्यों में भी उपयोग किया जा सकें।

अधिकारियों को मुख्यमंत्री ने किया मोटिवेट

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को कहा कि 'इस चिंतन शिविर में प्रथम सत्र में हमने जो फिल्म देखी उसमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सभी सिविल सेवा अधिकारियों को एक मूलमंत्र दिया था कि आप मेरे कुछ भी कहे को न मानना, अपने से सीनियर की न मानना, सिर्फ एक बात याद रखना कि जिस दिन आपका सिविल सेवा परिक्षा का परिणाम आया था और आपको पहली बार यह पता चला था कि आपका चयन आईएएस व आईपीएस के लिए हो गया है, बस उस क्षण के एहसास को न भूलना। सिस्टम को बदलने का जो संकल्प उस क्षण आप में था उसे जीवित रखें। उन्होंने एक बात और कही थी कि अगर आप उसे भूल गए हैं तो निश्चित है कि आप सेवाकाल में पटरी से उतर गए हैं।'

उन्होंने कहा कि वे मनन करें कि कहीं आप पटरी से तो नहीं उतर गए हैं। अगर हुए हैं तो कितना उतरे हैं और यदि कोई एकाध ज्यादा भी पटरी से उतर गया है तो उसे चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है, गलती हो गई, परंतु इस चिंतन शिविर के गीत को याद करें, उसे गाएं, आप में वो शक्ति है कि आप सिस्टम को बदलने के ओर जन सेवा करने के उस पहले क्षण के भाव को पुनः जागृत कर लेंगे ऐसा मुझे विश्वास है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस चिंतन शिविर में बहुत अच्छी टीम की भावना बनी हैं और राज्य के सरोकारों के प्रति हम सरकारी लोगों में ओनरशिप का भाव सुदृढ करने की आवश्यकता को हम सबने माना है।

व्यवस्था को खत्म करके सीएलयू व लाईसेंस देने के अधिकार नगर एवं ग्राम आयोजना विभाग को दे दिए।

ब्लॉक स्तर पर काम करेंगे अधिकारी

उन्होंने बताया कि सरकार ने सभी प्रशासनिक सचिव स्तर के अधिकारियों को एक-एक ब्लॉक चुनने के लिए कहा गया है और अधिकारी किसी भी विभाग में आज हैं या कल हो या न हो परंतु चयनित ब्लॉक वहीं रहेगा। अधिकारी विजन से पांच-दस पैरामीटर छांटकर उस ब्लॉक की नई योजना तैयार करेंगे। उन्होंने बताया कि अधिकारी उस ब्लॉक को एक निर्धारित स्तर पर लाने के लिए काम करेंगें और उस ब्लॉक में किसी भी विशेष प्रोजैक्ट या स्कीम के लिए आवश्यक फंड उपलब्ध करवाया जाएगा।

यंग एचीवर्स सेशन

शिविर में विशेष रूप से उपस्थित दी ट्रिब्यून के एडिटर-इन-चीफ श्री हरीश खरे ने कहा कि सुशासन अच्छी राजनीति का हिस्सा है और यह पहली बार हुआ है कि मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) ने अपनी शक्तियों का विकेन्द्रीकरण किया है। उन्होंने सुझाव दिया कि सरकार लोगों को मूल सुविधाएं प्रदान करने के लिए दक्ष और प्रभावी प्रणाली विकसित करे।

गणतंत्र दिवस परेड, 2015 के दौरान नेवी दस्ते का नेतृत्व करने वाली लेफ्टिनेंट कमांडर संध्या चौहान जो रेवाड़ी से हैं, ने राज्य सरकार के प्रत्येक 20 किलोमीटर की परिधि में राजकीय कन्या महाविद्यालय खोलने के फैसले की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि हरियाणा प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है और लोग राज्य सरकार की पहलों की प्रशंसा कर रहे हैं।

मोनिका गौतम

सहयोग एवं समर्पण भाव से हो कार्यः राज्यपाल

धरती की शान तू भारत की संतान,
तेरी मुट्ठियों में बंद तूफान है रे,
मनुष्य तू बडा महान है भूल मत,
मनुष्य तू बडा महान है

शिविर के इस गीत की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए हरियाणा के राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि यही चिंतन शिविर का निचोड है। उन्होंने कहा कि जनप्रतिधियों व नौकरशाह को सेवा के साथ-साथ संवेदनशैलता, संपर्क, सहयोग एवं समर्पण भाव से कार्य करना चाहिए। तभी हम नए विजन के साथ आगे बढ़ सकते है। राज्यपाल हरियाणा सरकार द्वारा आयोजित तीन दिवसीय चिंतन शिविर के समापन अवसर पर बोल रहे थे।

सामूहिक रूप से दिशा देने वाले निर्णयः उन्होंने कहा कि मुझे खुशी है कि इस चिंतन शिविर में हरियाणा के मुख्यमंत्री सहित मंत्रिमंडल के अन्य सदस्यों व वरिष्ठ नौकरशाह ने तीन दिन तक मिल बैठकर सामूहिक रूप से दिशा देने वाले निर्णय लिए हैं। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों से कहा कि आप नीतियां क्रियान्वित करने में हरियाणा के भाग्य विधाता हों। आप जैसा सोचोगे वैसा ही हरियाणा बनेगा।

संस्कृति के अनुरुप संविधानः उन्होंने कहा कि किसी भी देश का संविधान उसकी प्रकृति एवं संस्कृति के अनुरूप बनता हैं न कि किसी विशेष विचारधारा के। विश्व में भारतीय संविधान का महत्त्व उसकी प्रकृति और संस्कृति के कारण हैं। कोई भी राष्ट्र अपनी प्रकृति के विपरित अपना संविधान नहीं बना सकता।

हरियाणा की खुशहाली से देश परिचित

हिंदी के बिना संभव नहीं हिन्दुस्तान का विकास:उप राष्ट्रपति एम.वेंकैया नायड

हरियाणा की साक्षरता दर बढ़कर 76.6 प्रतिशत तक पहुँच गई है। विभिन्न सेवाओं और सुविधाओं का कंप्यूटरीकरण किया गया है। परंपरागत रूप से हरियाणा को कृषि तथा दूध उत्पादों के लिए जाना जाता है। राज्य सरकार इस पारंपरिक व्यवसाय को वैज्ञानिक तथा आधुनिक रूप से प्रोत्साहित कर रही है। इन प्रयासों से हरियाणा का खाद्यान उत्पादन 1966 की तुलना में लगभग सात गुना बढ़ा है। हरियाणा के लिए यह गौरव की बात है कि देश की भूमि का मात्र 1.5 प्रतिशत होने के बावजूद वह देश के अन्न भंडार में 15 प्रतिशत का वार्षिक योगदान देता है

हिसार के महावीर खेल स्टेडियम में हरियाणा स्वर्ण जयंती समारोह के समापन पर बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे उप राष्ट्रपति एम.वेंकैया नायडू ने मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल के तीन वर्ष के सफल कार्यकाल की प्रशंसा करते हुए कहा कि हरियाणा सरकार सफल प्रयासों द्वारा राज्य के सभी गांवों तथा शहरों को खुले में शौच से मुक्त घोषित कर दिया गया है यह किसी बड़ी सफलता से कम नहीं है। हरियाणा के आई टी संबंधित निर्यात ने भारत के आईटी महाशक्ति के रूप में उभरने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान को हरियाणा सरकार और हरियाणावासी पूर्ण रूप से अपने जीवन का अभियान बनाएंगे ऐसी उम्मीद है ताकि स्वच्छ हरियाणा देश के दूसरे राज्यों के लिए प्रेरणा स्रोत बन सके। वे हरियाणा स्वर्ण जयंती समारोह के समापन समारोह के अवसर पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार ने गीता की धरोहर को संजो कर रखा है। गीता पर आधारित जो आयोजन सरकार करने जा रही है उससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति बढ़ी है व सरकार का यह एक सराहनीय कदम है। इसमौके पर हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल व राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने भी सरकार के तीन वर्शें की उपलब्धियों को लोगों के सामने रखा।

हरियाणा खाद्यान उत्पादन में सात गुना बढ़ा

उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू ने कहा कि गत 50 वर्षों में हरियाणा के कर्मयोगी नागरिकों, किसानों, और उद्यमियों ने राज्य के बहुधान्यक नाम को साकार किया है। हरियाणा केंद्रीय अन्न भंडार में योगदान देने वाला दूसरा बड़ा राज्य है। हरियाणा की साक्षरता दर बढ़कर 76.6 प्रतिशत जहां है वहीं प्रति व्यक्ति की आय में भी बढ़ोतरी कि गई है। देश की भूमि का मात्र 1.5 प्रतिशत होने के बावजूद वह देश के अन्न भंडार में 15 प्रतिशत का वार्षिक योगदान देता है। राज्य सरकार पारंपरिक व्यवसाय को वैज्ञानिक तथा आधुनिक रूप से प्रोत्साहित कर रही है। हरियाणा का खाद्यान उत्पादन 1966 की तुलना में लगभग सात गुना बढ़ा है।

ई- मार्किट की सुविधा

उपराष्ट्रपति ने कहा कि सरकार ने किसानों को उनके उत्पाद की बिक्री के लिए ई- मार्किट की सुविधा प्रदान की है । आई टी के क्षेत्र में हरियाणा की उपलब्धियों से पूरा देश परिचित है। हरियाणा में पंचायत स्तर पर भी आई टी का प्रयोग बढ़ रहा है। प्रदेश ने बड़े पैमाने पर डिजिटल इंडिया कार्यक्रम को लागू किया है। लगभग 200 सेवाएं सेवा के अधिकार अधिनियम के तहत लाई गई हैं। 100 से भी अधिक ई-सेवाए प्रारंभ की गई हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न सेवाओं और सुविधाओं का कंप्यूटरीकरण किया गया है।

शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा के लिए सराहनीय प्रयास

उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू ने कहा कि राज्य के दो जिलों करनाल तथा फरीदाबाद को केंद्र सरकार ने स्मार्ट सिटी योजना के तहत चुना है। इसके अतिरिक्त राज्य सरकार अपने संसाधनों से गुरुग्राम को भी स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित कर रही है। इन जिलों का स्मार्ट सिटी योजना के अंतर्गत विकास हरियाणा के अन्य जिलों को भी इस योजना का लाभ उठाने के लिए प्रेरित करेगा। राज्य में शिक्षा विशेषकर महिलाओं की शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा के लिए सराहनीय प्रयास किये जा रहे हैं। स्कूली शिक्षा को व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ा जा रहा है। मेक इन हरियाणा-मेक इन इंडिया कार्यक्रम के तहत स्कूलों में व्यवसायिक शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इसके तहत कौशल विकास और उच्च व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करने के लिए विश्व स्तरीय शिक्षण संस्थानों की स्थापना प्रशंसनीय कदम है ।

सरलता सूची में पांचवें स्थान

उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू ने कहा कि राज्य सरकार ने सक्षम युवा योजना के तहत लगभग 20 हजार स्नात्तक युवाओं को विभिन्न विभागों से जोड़ा है। प्रति माह 100 घंटों का रोजगार इन युवाओं को उपलब्ध कराया जाता है। वर्ष 2016 में हरियाणा व्यवसाय करने की सरलता सूची में पांचवें स्थान पर था। जिसको इस वर्ष दूसरे स्थान तक पहुंचने का लक्ष्य है।

महिला सशक्तिकरण का प्रयास अनुसरणीय

उप राष्ट्रपति ने कहा कि महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में हरियाणा का प्रयास अनुसरणीय रहा है। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत शिक्षण संस्थाओं में स्नात्तक की शिक्षा निःशुल्क कर दी जा रही है। महिलाओं के कौशल विकास के लिए यूएनडीपी के साथ भी समझौता किया गया है। महिलाओं की सुरक्षा की दृष्टि से महिला बस सेवा तथा महिला पुलिस थानों जैसे कदमों से समाज में महिलाओं की सुरक्षा के प्रति नई जागरूकता पैदा हुई है।

गरीबों के जीवन में सुधार

उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू ने कहा कि मेरी आकांक्षा है कि हरियाणा में हरियाली आए व आम जन जीवन में खुशहाली बढ़े। गरीबों के जीवन में सुधार लाए। स्वच्छ वायु, स्वच्छ जल सबको मिले। हरियाणा सरकार प्राकृतिक संपदा को परिरक्षित करे। स्वच्छ हरियाणा, समद्ध हरियाणा का सपना साकार हो।

सतत् और गौरवपूर्ण इतिहास

उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू ने कहा कि हरियाणा की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा भौतिक खुशहाली से पूरा देश परिचित है। प्राचीन युग से लेकर वर्तमान तक इस भूमि का एक सतत् और गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। यह धर्म क्षेत्र है, कर्म क्षेत्र है। उपराष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू ने कहा कि हिंदी के बिना हिन्दुस्तान का विकास नहीं हो सकता है। हरियाणा अभूतपूर्व तरक्की व विकास कर रहा है और हरियाणा के खिलाड़ियों ने देश का नाम अंतरराष्ट्रीय खेलों में रोशन किया है।

क्या कहते राज्यपाल

हरियाणा के राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा कि हरियाणा एक-हरियाणावी एक की अवधारणा के तहत हमें आगे बढ़ना चाहिए ताकि हरियाणा राज्य को और अधिक विकास की दृष्टि से चमकाया जा सके। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार से हम नव-भारत बनाएंगें, ठीक उसी प्रकार से नव-हरियाणा का निर्माण भी किया जाएगा। उन्होंने युवाओं आह्वान करते हुए कहा कि वे यहां से संकल्प लेकर जाएं कि वर्ष 2047 तक भारत को जगत गुरू के रूप में चमकाने का काम करेंगें।

बढ़ाया मान-सम्मान

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि 47 वर्ष में जो काम न हो सका वो वर्तमान सरकार ने तीन साल में करके दिखाए जो किसी कीर्तिमान से कम नहीं है। मुख्यमंत्री ने सत्याग्रहियों की विधवाओं तथा आपातकाल के दौरान जेल में बंद रहे लोगों को जीवनभर और मृत्युपरांत उनकी विधवाओं को आजीवन दस हजार रुपये प्रतिमाह पेंशन देने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार वृद्धों, विधवाओं व दिव्यांगों को देश में सर्वाधिक 1,800 रुपये मासिक की पेंशन दे रही है जो किसी उपलब्धि से कम नहीं है। सरकार ने द्वितीय महायुद्ध की विधवाओं का मान बढ़ाते हुए प्रतिमाह की वित्तीय सहायता को बढ़ाकर दस हजार रूपए प्रतिमाह करने की घोषणा की।

जनता हित में निर्णय

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने तीन वर्षों में जितने जनहित में कार्य किये हैं उतने प्रदेश के गठन के पहले 47 वर्षों में नहीं हुए। अगले दो सालों में विकास कार्यो की झड़ी लगेगी। मुख्यमंत्री ने कहा

कि स्वर्ण जयंती वर्ष में 12 हजार से भी अधिक सरकारी नौकरियां योग्यता के आधार पर दी गई हैं जिनमें एचसीएस और गुरुप बी और गुरूप सी के पद शमिल हैं। गुरुप सी व डी में साक्षात्कार को खत्म करने का फैसला किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने प्रदेश को क्रोसिनमुक्त करने में जहां सफलता मिली है वहीं 12,00 से अधिक गांवों को 24 घंटे बिजली सरकार प्रदान कर रही है। अकुशल श्रमिकों की दैनिक न्यूनतम मजदूरी 318 रुपये तय की गई है। किसानों को देश में गन्ने का सर्वाधिक 330 रुपये प्रति क्विंटल का भाव दिया जा रहा है। धान तो 32,00 रुपये प्रति क्विंटल बिक रहा है। प्रदेश में लिंगानुपात को तीन दशकों पश्चात 900 के पार 937 तक पहुंचाकर सरकार ने कन्या भ्रुण हत्या के कलंक को धो दिया।

कई योजनाओं की हुई शुरूआत

मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने कहा कि हरियाणा देश का एकमात्र राज्य है जिसकी पंचायते साक्षर होने के साथ-साथ बैंक व बिजली बिलों का डिफाल्टर नहीं है। शिक्षित युवकों को हर महीने 100 घंटे काम की गारंटी देने वाला भी, हरियाणा देश का पहला राज्य बना है। स्वर्ण जयंती वर्ष के दौरान समाज के हर वर्ग के उत्थान-सम्मान तथा अंत्योदय के दर्शन को साकार करने के लिए सरकार ने अनेक योजनाएं शुरू की हैं।

सरकार ने 156 शहीदों के आश्रितों को विभिन्न विभागों में सरकारी नौकरियां प्रदान की हैं जिनमें सेना के 130, बीएसएफ के 12, सीआरपीएफ के 14 शहीदों के आश्रित शामिल हैं ।1971 के युद्ध के दो शहीदों के आश्रितों को भी नौकरी प्रदान की है। नौकरी प्राप्त करने वालों में शहीदों की 31 युद्ध विधवाएं, 27 पुत्रियां, 89 पुत्र, एक पुत्रवधू और आठ भाई प्रमुख रूप से शामिल हैं।

प्रस्तुती ने मोहा लोगों का मन

हिसार का महावीर खेल स्टेडियम सरकार की उपलब्धियों के पोस्टरों में अपनी उपलब्धियों को बता रहा था। मौका था स्वर्ण जयंती समारोह का। समारोह में कलाकरों की बेहतरीन प्रस्तुती सबका ध्यान अपनी और आकर्षित कर रही थी। वंदेमातरम की बेहतरीन प्रस्तुती ने देश की संस्कृति को मैदान में उभारने का जोरदार प्रयास किया। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, पटियाला व हरियाणा कला एवं संस्कृति विभाग के हजारों कलाकारों द्वारा रंगा-रंग सांस्कृतिक कार्यक्रम सबसे प्यारा म्हारा हरियाणा, दुनिया में रहेगा नाम हमारे हरियाणा का, हरियाणा एक-हरियाणवी एक ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। हरियाणा पुलिस के

कमांडों द्वारा मोटरसाइकिलों पर हैरत अंगेज प्रस्तुति व वायु सेना के एमआई-8 हेलिकॉप्टर द्वारा फूलों की वर्षा से पूरा स्टेडियम आश्चर्य चकित हुए बगैर नहीं रह सका।

कला में दिखी हरियाणा की झलक

हवाई जहाज से स्टेडियम में मौजूद लोगों पर फूलों की वर्षा की जा रही थी। इस क्षेत्र में हजारों की संख्या में कलाकार अपनी बेहतरीन प्रस्तुती दे रहे थे। रंग बिरंगी प्राचीन वेश भूषा के साथ हरियाणा की लड़कियां व धौती कुर्ता के साथ खंडका पहने युवा संस्कृति की प्रस्तुतियां दे रहे थे जिसमें हरियाणवी संस्कृति की झालक साफ दिखाई पड़ रही थी। कलाकारों ने तुंबी की तान के साथ सांरगी व नगाड़े की धुन ऐसी निकाली की लोग देखने को मजबुर थे। बड़वा की बीन की आवाज अपने स्वर बिखेर रही थी। बड़ी संख्या में कलाकार नगाड़ों के साथ कार्यक्रम स्थल पर उपस्थित थे।

वंदेमातरम की की प्रस्तुती

वंदेमातरम की बेहतरीन प्रस्तुती ने देश की संस्कृति को मैदान में उभारने का जोरदार प्रयास किया। हरियाणा की संस्कृति का उदाहरण जनता के समक्ष था। न्यारों से न्यारा हरियाणा की झालक साफ कार्यक्रम में साफ नजर आ रही थी। कलाकारों ने गली से लेकर खेत तक की कहानी की प्रस्तुत बता रही थी कि हरियाणा कैसा है कैसा बन रहा है। इन गानों में सरकार की उपलब्धियां भी नजर आ रही थी। कमांडो पुलिस के जवानों ने मोटर साईकिल पर बेहतरीन तरीके से अपनी कला का जोरदार प्रदर्शन किया। पुलिस के कमाण्डों द्वारा प्रस्तुत किए गए आग की लपटों के कारनामें सभी का ध्यान अपनी और आकर्षित कर रहे थे। पुलिस के इन रंगरूटों की प्रस्तुती समारोह को चार चांद लगा रही थी।

जीत सीली चाल्ये पुरवाइ

समारोह में सांस्कृति कार्यक्रमों को बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत किया गया था। कलाकारों ने इस प्रकार से संस्कृति को प्रस्तुत किया की पूरा भारत एक मंच पर समाया हुआ नजर आ रहा था। फिल्मी कलाकार रणदीप हुड्डा ने समारोह में अपनी उपस्थिति को बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत किया व हरियाणा से जुड़े हिन्दी फिल्म के गीत को गुनगनाया जिसका वहां मौजूद लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका अभिनंदन किया।

देश भक्ति का संदेश

हिंदी फिल्मों के गायक सोनू निगम ने गीत के माध्यम से देश भक्ति का संदेश देने का प्रयास किया उन्होंने गीत के माध्यम से लोगों का ध्यान अपनी और आकर्षित करने का प्रयास किया। उन्होंने मेरा रंग दे बसंती चौला को बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत करके लोगों में देशभक्ति की भावना भरने का कार्य किया। निगम के इस गाने पर समारोह में मौजूद लोग झुम उठे व देश भक्ति का रंग पूरे स्टेडियम में घोलने में वे कामयाब रहे। इस मौके पर आयोजित की गई मैराथन में बड़ी संख्या में बड़े, बुढ़े व युवा जज्बे के साथ दौड़ते हुए नजर आए।

सुरेन्द्र सिंह मलिक

एशिया कप में महिला व पुरुष वर्ग की शानदार जीत

खिलाड़ी बोले अब लक्ष्य कॉमनवेल्थ व वर्ल्ड कप

भारतीय हॉकी के इतिहास में 14 साल बाद ये खुशी का मौका आया है जब पुरुष और महिला एशिया कप भारत की झोली में आए हैं। कई बार हाकी में नजदीक पहुंक कर खिताब से वंचित रही भारतीय टीम ने वर्ष 2003 में दोनों खिताब भारत की महिला और पुरुष टीम ने जीते थे। भारत की यह जीत निश्चित रूप से हॉकी में भाग्य आजमा रहे अनेक युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा बनेगी।

जापान के काकमिगहारा शहर में खेले गए इस रोमांचक फाइनल मुकाबले में भारत ने पेनल्टी शूट आउट के जरिए जीत दर्ज करके 36 वर्ष के वनवास को समाप्त कर दिया। इस जीत से जहां महिला हाकी टीम का समाप्त हुआ है वहीं यह जीत हॉकी खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा बन गई है। एशिया कप में ये भारत की दूसरी जीत है। इससे पहले साल 2004 में भारत ने एशिया कप महिला हॉकी का खिताब जीता था। पिछली बार के चैंपियन जापान को सेमी-फाइनल में हराकर भारतीय हॉकी टीम फाइनल में पहुंची थी। भारतीय हॉकी टीम की विदित रहे कि जीत का यह जज्बा महिला हॉकी खिलाड़ियों में सेमीफाइनल में ही दिखाई दे रहा था। भारतीय महिला हॉकी टीम ने एशिया कप के सेमीफइनल में जोरदार प्रदर्शन करके जापान को 4-2 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। किया व फाइनल मुकाबले में चीन को 5-4 से हरा कर एशिया कप महिला हॉकी का खिताब अपने नाम कर लिया।

ऐसे चले मुकाबले

भारत की ओर से सातवें मिनट में गुरजीत कौर ने पहला गोल किया जिससे सेमीफाइनल मुकाबले में भारत को बढ़त देने का कार्य किया इसके बाद नवजोत कौर ने फॉरवर्ड वंदना कटारिया की मदद से नवें मिनट में एक और गोल दागा। नवें मिनट में ही गुरजीत कौर ने भी एक और गोल दागकर भारत के गोल की संख्या तीन तक पहुंचा दी। शुरुआती 15 मिनट का खेल भारत के नाम रहा। खेल के आधा समय गुजरने पर भारत की ओर से जल्दबाजी वाला खेल दिखाई पड़ा। लेकिन भारत की ओर से सविता ने तीसरे क्वार्टर की शुरुआत में जापान को पेनाल्टी कॉर्नर लेने से रोक दिया। इसके बाद लालरेमसियामी ने 38 मिनट में दनदनाता हुआ गोल दागकर भारत को 4-2 से बढ़त दिला दी।

हरियाणवी छोरी जो करती है आठ विदेशी लहजों में बात

आखिरी 15 मिनट का खेल काफी तनावपूर्ण रहा लेकिन भारत की ओर से सविता ने किसी भी मौके पर गोल नहीं होने दिया। वहीं, एशिया कप का दूसरा सेमीफाइनल चीन और कोरिया के बीच खेला गया।

इस सेमीफाइनल मुकाबले में चीन ने जापान को हराकर फाइनल में प्रवेश कर लिया है।

कैसे चला फाइनल मुकाबला

मैच की समाप्ती तक दोनों टीमें एक-एक की बराबरी पर थी। जिसके बाद मैच का फैसला

शूटआउट से हुआ। इंडियन टीम ने चीन को 5-4 से मात दे दी। इस टूर्नामेंट को जीतने के साथ ही टीम इंडिया ने अगले साल इंग्लैंड में होने वाले वर्ल्ड कप के लिए भी क्वालिफाई कर लिया है। गौरतलब है कि टीम इंडिया दूसरी बार एशिया कप जीतने में कामयाब हुई है। इससे पहले टीम इंडिया टीम ने 2004 में जापान को हराकर पहली बार ये खिताब जीता था, जबकि 1999 और 2009 में वो उपविजेता रही थी।

नवजौत की अहम भूमिका

फाइनल मैच के पहले हाफ में नवजोत कौर ने चीन पर गोल दागकर भारत को लीड दिलाई थी। इसके बाद चीन की ओर से 47वें मिनट में गोल हुआ व मैच बराबरी पर जा पहुंचा। दोनों टीमें मैच खत्म होने तक 1-1 की बराबरी पर रहीं। बेस्ट महिला खिलाड़ी नवजौत कौर का कहना है कि उनका लक्ष्य अब कामनवैल्थ व व हॉकी वर्ल्ड कप में भारत को जीत दिलाना है इसको लेकर वो तैयारियां कर रही है। वो कहती है कि उन्हें गोल करने की भूख है व वे अटैकिंग हॉकी के प्रदर्शन में विश्वास रखती है। अब तक के 108 नेशनल हॉकी मैच खेल चुकी नवजौत कौर कहती है कि वे देश के लिए बेहतरीन करने की तैयारी कर रही हैं।

क्या कहती टीम कप्तान

टीम कप्तान रानी रामपाल कहती है कि शिक्षा के अधिकार की तरह खेल का अधिकार भी लागू होना चाहिए। प्रदेश में खेलों पर सरकार काफी पैसा खच कर रही है अगर प्रदेश में साम आठ एस्ट्रोट्रफ और हो तो परिणाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ओर बेहतर होंगें। उनका कहना है कि वर्ष2018 में अप्रैल में आस्ट्रेलिया में होने जा रहे कामनवैल्थ व जुलाई में होने वाले वर्ल्ड कप वे इतिहास रचेंगी। उनका कहना है कि हाकी को ओर बेहतर बनाने के लिए डिफैंस लाइन पर ओर बेहतर कार्य करने की आवश्यकता है।कड़ी

चुनौती के बीच रचा इतिहास

भारत ने एशिया कप में शानदार जीत हासिल करके इतिहास रचा है। पुरुष वर्ग की 10 वर्ष बाद की यह जीत किसी भी तरह से कम नहीं है।भारत ने जिस प्रकार से जीत का परचम लहराया है उससे पूरे देश में खुशी की लहर है। गौरतलबहै कि इससे पूर्व भारत ने वर्ष2007 में चेन्नई में ऐशिया कप जीता था।2003 में भी भारत ने कुआलालंपुर में पहली बार यह प्रतियोगिता जीती थी।

फाइनल में बनाई जगह

भारत की हाकी टीम का सेमीफाइनल में प्रदर्शन में प्रदर्शन एक तरह से एक तरफ ही नजर आ रहा था। इस दंशवे पुरुष एशिया कप में भार तपे अपने प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को 4-0 से हर कर कामयाबी हासिल की ।

शानदार गोल

मलेशिया के खिलाफ खेल रहे मेच में रमन दीप ने तीसरे मिनट में और ललित उपाध्याय ने 29वें मिनट में गोल करके तीसरी बार खिताब अपने नाम कर लिया। भारतभ्राले ही इस मुकाबले में जीत हासिल कर गया हो लेकिन उसे अंत समय तक मलेशिया के खिलाड़ियों की कड़ी चुनौती का समाना करना पड़ा है।

बड़े खिताब जीतने वाला देश

विदित रहे भारत हाकी खेल की उस श्रेणी में गिना जाने लगा है जिस श्रेणी में वे देश आते हैं जिन्होंने हाकी में लंबे समय तक अपनी पहचान बनाये रखी है। भारत ने एशियाई खेलों में स्वर्ण, ऐशियन चैंपियनशिप में जीत व एशियन कप का खिताब जीतने में सफलता हासिल की है।

सुरेन्द्र सिंह मलिक

डब्ल्यूडब्ल्यूई में दाव-पेंच दिखाएगी म्हारी छोरी

डब्ल्यूडब्ल्यूई में प्रतिनिधित्व करने वाली देश की पहली महिला

वर्ल्ड रेसलिंग इंटरटेनमेंट में अब हरियाणा की छोरी कविता दलाल अपना दमखम दिखाएगी। डब्ल्यूडब्ल्यूई में भारत की पहली महिला रेसलर शामिल होकर कविता ने नया इतिहास रचा है। इससे पहले सूट-सलवार में कविता ने गत वर्ष अमेरिका के फ्लोरिडा में 'डब्ल्यूडब्ल्यूई माय यंग क्लासिक चैंपियनशिप' में शानदार प्रदर्शन किया था। वह जनवरी 2018 के अंतिम सप्ताह से डब्ल्यूडब्ल्यूई पर्फोरेंस सेटर ओर्लांडो, फ्लोरिडा में ट्रेनिंग शुरू करेंगी। कविता को डब्ल्यूडब्ल्यूई का तीन साल का कॉन्ट्रेक्ट मिला है।

महिलाएं पुरुषों से कम नहीं हैं। उन्हें अपने ऊपर पूरा विश्वास होना चाहिए तभी वह किसी भी क्षेत्र में अपना मुकाम हासिल कर सकती है। परिवार स्वयं उनके हक के लिए खड़ा हो जाता है और उसका हर पग पर साथ देता है। इन वाक्यों को डब्ल्यूडब्ल्यूई में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली हरियाणा की रेसलर कविता दलाल जीवन में विशेष अहमियत देती है। कविता का डब्ल्यूडब्ल्यूई से तीन साल के लिए कॉन्ट्रेक्ट साइन हुआ है। इसके लिए वह काफी उत्साहित है और जी-जान से मेहनत कर रही है। अब मैं डब्ल्यूडब्ल्यूई में चैंपियन व नंबर वन बनना चाहती हूं।

कविता की इस उपलब्धि के लिए नई दिल्ली के अशोका होटल में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उन्हें फर्स्ट लेडीज अवॉर्ड से सम्मानित भी किया। इससे पूरे परिवार में खुशी का माहौल है।

खली की अकेडमी से सीखी रेस्लिंग

कविता दलाल 'द ग्रेट खली या दलीप सिंह राणा' की जालंधर स्थित एकेडमी में नेशनल रेसलर बुलबुल को सूट-सलवार पहनकर चित कर देने से प्रसिद्ध हुई थीं। राष्ट्रीय स्तर पर नौ साल तक वेट लिफ्टिंग में स्वर्ण पदक जीतने वाली कविता ने जालंधर स्थित खली की एकेडमी से ट्रेनिंग ली थी। उन्होंने साउथ एशियन गेम्स 2016 में पावर लिफ्टर के तौर स्वर्ण पदक जीता था। कविता ने बताया कि खली सर की अकडेमी में पूरी मेहनत से रोजाना आठ घंटे अभ्यास करती रही हूं, हालांकि अकेडमी में अन्य लड़कियां भी अभ्यास करती हैं, लेकिन खली सर को मेरी मेहनत बहुत अच्छी लगी और उन्होंने मेरा नाम 'हार्ड केडी' रख दिया। कविता का कहना है कि खली सर की अकेडमी में हमें उच्च दर्जे का प्रशिक्षण व अन्य सुविधाएं दी जाती हैं यही कारण है कि डब्ल्यूडब्ल्यूई की टीम भारतीय रेसलर के चयन के लिए अकेडमी आती हैं। यहां पर उन्हें वैसा हुनर मिलता है जिसकी वह तलाश कर रहे हैं।

सुसराल पक्ष से मिला सहयोग

जींद के मालवी गांव की रहने वाली कविता जुलाना के सीनियर सेकेंडरी स्कूल से 12वीं तक पढ़ी हैं। इसके बाद 2004 में उन्होंने लखनऊ में अपनी रेसलिंग की ट्रेनिंग शुरू की। ट्रेनिंग के दौरान उन्होंने पढ़ाई भी जारी रखी और साल 2005 में बीए कर लिया। साल 2009 में कविता ने बड़ौत के रहने वाले गौरव से शादी की। गौरव वॉलीबॉल के खिलाड़ी हैं। कविता ने बताया कि उनके पति व सुसराल पक्ष से हमेशा उसे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया, यही कारण है कि वह रेसलिंग की दुनिया में अपनी पहचान बना रही है।

कुछ अलग करने की चाहत

कविता ने शादी के बाद भी कभी रेसलिंग के लिए अपने जुनून को पीछे नहीं छोड़ा। वह लगातार इसमें एक्टिव रहीं और इसमें आगे बढ़ने व कुछ अलग करने का सपना देख रही है। उन्होंने बताया कि अमेरिका का अनुभव बहुत अलग था और वह गर्व महसूस कर रही थी कि डब्ल्यूडब्ल्यूई में अपने देश व हरियाणा का प्रतिनिधित्व कर रही हूं। डब्ल्यूडब्ल्यूई में देश की पहली रेसलर होने के कारण हर तरफ से तालियां की गूंज थी। कविता किसान परिवार से संबंध रखती है और उनके पांच भाई-बहन हैं और उनके बड़े भाई संजय दलाल ने हमेशा उनका हौसला बढ़ाया है। कई बार उन्हें जीवन में हार भी मिली, लेकिन उनके भाई ने हर पग पर उनका साथ दिया। कुछ अलग करने की चाहत में उसने रेसलिंग की दुनिया में सूट-सलवार की वेशभूषा में कदम रखा। कविता ने बताया कि स्कूल के दौरान वह कबड्डी भी खेलती थी और जब उनके भाई ने उन्हें वेट लिफ्टिंग की ट्रेनिंग देने की बात कही तो उस समय तक उसे इस खेल के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी, मगर खेल होने के कारण उसने हां कर दी।

संगीता शर्मा

लाखों की नौकरी छोड़, लगाया ठेला

महिला आंत्रप्रन्योर की कहानी, बांट रही है 'मां का प्यार'

कई बार बचपन की यादों से जुड़े कुछ अहसास और जज्बात ऐसे होते है, कि व्यक्ति चाहते हुए भी उनसे अलग नहीं हो पाता और जब बात हो मां के हाथ से बने खाने की तो उससे हर बच्चा रूहानी रूप से भी जुड़ा होता है। मां के हाथ का खाना ऐसे में तब और अधिक याद आता है जब बच्चे युवा अवस्था में कैरियर के लिए घर से बाहर निकलते हैं। ऐसा ही कुछ अहसास हुआ अंबाला की रहने वाली राधिका अरोड़ा को। इसका नतीजा यह हुआ कि राधिका अपनी जमी-जमाई नौकरी को छोड़ कर चंडीगढ़ में खाने की ठेली लगा रही हैं। जहां पर उनकी कोशिश लोगों को घर जैसे स्वाद का खाना देना होती हैं। घर जैसे स्वाद का अहसास दिलाने के लिए उन्होंने अपने इस ठेले को 'मां का प्यार' का नाम दिया है।

मां के हाथ के खाने की कमी

बचपन से ही पढ़ाई में रूचि रखने वाली राधिका को मां के हाथ के खाने की कमी खली जब उन्हें घर से दूर रहकर एमबीए किया। उन्होंने बताया कि उसके बाद उन्होंने बहुत सी कंपनियों में काम किया, बावजूद इसके उन्हें इसी समस्या का सामना करना पड़ा। यही वजह है कि उन्होंने लगी-लगाई नौकरी छोड़ कर अपना खुद का व्यवसाय करने की सोची।

बाहर के खाने से हुआ मोह भंग

26 वर्षीया राधिका बताती है कि उसने अपनी स्कूली पढ़ाई भी मोहाली से की और चंडीगढ़ से ही एमबीए किया। एमबीए करने के पश्चात उन्हें अलग-अलग जगहों पर नौकरी मिली, इन तीन वर्षों की नौकरी के दौरान उन्हें खाने की समस्या का सामना करना पड़ा। खाने की शौकिन राधिका को इसी कारण बाहर भी खाने जाना पड़ता था, लेकिन रोज-रोज वह बाहर भी नहीं खा सकती थी।

सहेलियों के छेड़ने से बना नाम

राधिका कहती है कि वह घर के खाने को बहुत अधिक याद करती थी और अपनी खाने की इस इच्छा को घर जाकर ही पूरा कर पाती थी। उन्होंने बताया कि अपनी इसी इच्छा को पूरा करने वह हर सप्ताह घर पहुंच जाती थी और लौटते वक्त अपनी मां से बहुत सारा खाना पैक करवाकर लाती थी। उनको यह सब करता देख उनके साथ रहने वाली उनकी सहेलियां उन्हें छेड़ती थी और कहती थी 'मां का प्यार' लाई है।

नौकरी छोड़, लगाया ठेला

राधिका बताती है कि मोहाली में उन्होंने रिलांयस के जियो ऑफिस में भी काम किया। इसी सब समस्याओं के चलते उन्हें अपना खुद का कुछ कारोबार करने का ख्याल आया। इसी उद्देश्य को देखते हुए उन्होंने ना केवल अपनी नौकरी छोड़ी बल्कि मोहाली में ही खाने का एक ठेला लगा लिया। अपने इस ठेले को उन्होंने नाम दिया 'मां का प्यार'।

कम दाम, बेहतर खाना

राधिका का कहना है कि ठेला लगाते समय उन्होंने सबसे पहले खाने की शुद्धता के साथ-साथ इसके दाम पर ध्यान दिया। क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि बाहर से खाना खरीद कर खाने में जो असंतुष्टि मुझे मिलती थी वह ही मेरे ग्राहकों को मिले। इसलिए मेरा प्रयास था कि मैं अपने जैसे इन लोगों को बेहतर खाना कम से कम दामों में उपलब्ध करवा सकूं।

घर के खाने जैसा मैन्यू

अपने ठेले पर खाने के लिए आने वाले ग्राहकों को घर के खाने जैसा अहसास करवाने के लिए राधिका अपने खाने का मैन्यू भी आम तौर पर घर में बनने वाले खाने के समान ही रखती हैं। वह बताती है कि उनके ठेले पर चावल, राजमा, छोले, कढ़ी, मौसमी सब्जियां, रोटी, परांठा, सलाद और अचार जैसे व्यंजन परोसे जाते हैं। क्योंकि अधिकतर घर से बाहर रहकर नौकरी या पढ़ाई करने वाले युवाओं व लोगों की यहीं मांग होती है कि उन्हें घर में बननग वाला खाना बाहर भी मिल सकें।

चंडीगढ़ में भी लगाती है ठेला

उनके द्वारा परोसे गए खाने को लोगों ने बहुत अधिक पंसद किया और यहीं कारण है कि आज उनके आज दो ठेले हो गए हैं। एक ठेला वह मोहाली के औद्योगिक क्षेत्र में तो दूसरा वह चंडीगढ़ से सटे जीरकपुर के वीआईपी रोड़ पर लगाती हैं। इसके लिए उन्होंने चार लोगों को रोजगार भी दिया है।

घरवालों ने किया जमकर विरोध

राधिका के इस तरह से ठेला लगाने के फैसले का उनके घर पर जमकर विरोध हुआ। कोई भी अभिभावक नहीं चाहेगा कि उनकी बेटी इतना पढ़-लिखने के बाद अच्छी-खासी नौकरी को छोड़ सड़क किनारे खाने का ठेला लगाये। बावजूद इसके राधिका अपने निर्णय पर अडिग थी। अंततः उनके पिता को उनके इस निर्णय को मानना पड़ा।

परेशानियों का किया सामना

हर काम के शुरूआती दिनों में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। तो यह परेशानियां राधिका के सामने भी आई। यही कहीं खाने का ठेला खड़ा करने के कारण म्यूनिसिपल कार्पोरेशन वालों ने उन्हें मना किया। राधिका बताती है कि अभी उनकी कमाई 80 हजार रुपये महिना तक हो जाती है। अभी उनकी योजना कोई जगह खरीद कर स्थायी रुप से अपना काम जमाने और अपना इवेंट मैनेजमेंट का काम करना चाहती है।

मोनिका गौतम

भनकपुर गांव में राष्ट्रीय गान की गूंज

चौपाल में महिलाओं ने रखे कदम

'जन-गण-मन' की तरंगे सुबह फरीदाबाद के भनकपुर गांव में गूंजती है। गांव का बच्चा, युवा, बुजुर्ग व महिलाएं जिस स्थल पर होती है वहीं सावधान मुद्रा में खड़े होकर राष्ट्रीय गान गाती हैं। देश को सम्मान देने व आमजन में देश प्रेम की भावना जागृत करने की इस पहल की हरियाणा में ही नहीं, बल्कि देश में चर्चा हो रही है। तेलंगाना राज्य के गांव जमीकुटा की ग्राम पंचायत ने सबसे पहले राष्ट्रीय गान की शुरुआत की थी। अब हरियाणा के जिला फरीदाबाद की ग्राम पंचायत भनकपुर को ग्रामवासियों के लिए राष्ट्रगान करने वाला देश का दूसरा गांव तथा हरियाणा का पहला गांव होने का गौरव हासिल हुआ है।

पढ़ा-लिखा सरपंच केवल गांव की गलियों, नालियों व सड़कों के विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि वह लीक से हटकर कुछ नया करना चाहता है। ऐसे काम जिसकी तारीफ हर जगह हो। ऐसा ही कुछ कर दिखाया है फरीदाबाद के भनकपुर गांव के 24 वर्षीय सरपंच सचिन मंडोतिया ने। सचिन ने निजि समाचार चैनल में तेलंगाना के जमीकुटा गांव में दिखाए गए राष्ट्रगान सामूहिक तकनीकी सिस्टम की झलक से प्रेरित होकर अपने गांव में सुबह राष्ट्रीय गान बजाने व गाने की पहल 4 जनवरी से शुरू की है। इसके साथ ही इसी दिन से गांव की चौपाल में 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान के अंतर्गत गांव की चौपाल पर महिलाओं के आगमन की अनूठी पहल की है, जिससे महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ गया है और वे जोश में हैं।

राष्ट्रीय गान के प्रति सम्मान

भनकपुर की ग्राम पंचायत की ओर से गांव में 22 सीसीटीवी कैमरे तथा 20 लाऊडस्पीकरों को लगवाया गया है। इन्हें लगाने पर लगभग आठ लाख की राशि खर्च की गई है। इसका नियंत्रण कक्ष सरपंच के निवास पर बनाया गया है। जहां सुबह निर्धारित समय पर राष्ट्रगान बजते ही सभी ग्रामवासी 52 सैकेंड तक सावधान की मुद्रा में खड़े होकर राष्ट्र प्रेम से जुड़ जाते हैं, वहीं दूसरी ओर सीसीटीवी सिस्टम से पूरे गांव की सुरक्षा भी चाक-चौबंद हो गई है। गांववासियों में राष्ट्रीय गान के प्रति इतना सम्मान व जोश है कि लोग सरपंच के घर आ रहे हैं और अधिक लाउंडस्पीकर लगाने की गुजारिश कर रहे हैं ताकि उनके घर में ऊंची आवाज में राष्ट्रीय गान की धुनें पहुंच सकें। इस मांग को सरपंच सचिन सकारात्मक मानते हैं और खुश है कि लोगों में राष्ट्रीय गान के प्रति सम्मान व देश प्रेम की भावना आज भी जिंदा हैं।

समाज के लिए कुछ करने की चाहत

दूरस्थ शिक्षा से स्नात्तकोतर (राजनीतिक विज्ञान) की पढ़ाई कर रहे सरपंच सचिन ने बताया कि 31 दिसंबर 2015 को जब मैं अपनी परीक्षा देकर घर लौटा तो घर में गांव के बड़े-बुजुर्ग थे और मैंने आदर सत्कार भाव से नमस्कार किया। उन लोगों ने एससी की सीट आरक्षित होने के कारण मुझे सरपंच के लिए चुनाव में खड़े होने के लिए कहा तो उस समय मैं चकित रह गया। मैंने कहा कि अभी तो मैं पढ़ाई कर रहा हूं तो चुनाव में कैसे खड़ा हूं। तो लोगों ने कहा कि सरपंच बनने के बाद उसे समाज के लिए कुछ करने का मौका मिलेगा। इस बात को उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया और मात्र दस दिन के प्रचार के बाद वह सरपंच चुने गए। उन्होंने बताया कि परिवार

के कोई भी सदस्य राजनीति से जुड़ा नहीं है और सरकारी नौकरी से संबंध रखते हैं। वह परिवार के पहले सदस्य हैं जो कि सरपंच बने है। वह कहते है कि सरपंच बनने के बाद में उनकी दिनचर्या बहुत बदल चुकी है और अपने लिए कम समय निकाल पाते हैं। मात्र रविवार के दिन इग्नू में अपनी कक्षा लगाकर अपने कॉलेज दिनों को याद कर लेते हैं।

पानी की समस्या से निजात पाना

सचिन का कहना है कि उनका अगला प्रयास गांव के पानी को पीने योग्य बनाना है और इसके लिए जी जान से जुट गए है। उन्होंने बताया कि 5,000 से अधिक की आबादी वाले गांव में पानी नमकीन है और पानी को घरेलू प्रयोग भी नहीं कर सकते। इसके लिए पानी दूसरे गांवों से मंगवाकर खरीदा जाता है, गांव में बूस्टर भी लगाए गए हैं। खेतों में प्रयोग होने वाला इंडस्ट्री का पानी भी नुकसानदेह है। वह कहते है कि गांववासियों को पानी के लिए अधिक रुपये खर्च करने पड़ते हैं और इस समस्या से निजात पाने के लिए वह कार्य कर रहे हैं। इसके लिए अतिरिक्त अन्य कई कार्य भी उनके दिमाग में है, जिसके लिए वह प्रयास कर रहे है।

महिला सशक्तिकरण की ओर कदम

इस गांव की महिला पंच सीमा का कहना है कि हमारे लिए वह भावुक पल था जब हम गांव की चौपाल में कदम रख रही थी और हमें महसूस हो रहा था कि पुरुष के साथ कंधा से कंधा मिलाकर

चल रही हैं। उन्होंने बताया कि मेरी शादी को लगभग 16 साल हो चुकें है और जब भी गांव की चौपाल के आगे से गुजरती थी तो सिर पर पल्ला रखकर और सिर झुकाकर चलती थी। अब हम उस जगह में महिलाएं भी बैठ सकेंगी और यह महिला सशक्तिकरण की दिशा में सरहनीय कदम है। पंच मीनू का कहना है कि पढ़े-लिखे होने के बावजूद हम वर्षों से चौपाल को लेकर चली आ रही कुप्रथा को सहज रूप से स्वीकार करते आ रहे थे। अब इस प्रथा में बदलाव होने से हम बहुत खुश हैं। महिलाएं भी हक से चौपाल में बैठेंगी और वह भी आपस में मिलकर अपने सुख-दुख सांझा कर सकेंगी व अपने निर्णय ले सकेंगी।

गांव में नई शुरुआत

श्रीचंद पहलवान का कहना है कि युवा सरपंच सचिन ने गांव में राष्ट्रीय गान की धुने बजाकर नई शुरुआत की है और पुरानी धरोहर को जीवित रखने का अच्छा प्रयास किया है। हम लोग अपने स्थल पर खड़े होकर ही राष्ट्रीय गीत गाते हैं। मास्टर रामपाल का कहना है कि जब मैं स्कूल में पढ़ाता था तो प्रतिदिन सुबह प्रार्थना में राष्ट्रीय गीत गाता था और अब गांव में राष्ट्रीय गान होने से यादें ताजा हो गई है। जैसे ही गांव में राष्ट्रीय गान बजता है हम अपने स्थल में सावधान मुद्रा में खड़े हो जाते हैं और मर्यादा स्वरूप राष्ट्र गान गाते हैं।

संगीता शर्मा

प्रेम की भावना से जुड़ता है राष्ट्रीय गान

पृथला हलके के विधायक टेकचंद शर्मा ने 4 जनवरी को जिला के गांव भनकपुर में ग्राम पंचायत द्वारा सरपंच सचिन मंडोतिया के विचार एवं पहल पर शुरू किए गए सिस्टम का बतौर मुख्य अतिथि उद्घाटन करने के बाद गांव की चैपाल पर आयोजित सम्मान एवं उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए प्रकट किए। विधायक टेकचंद शर्मा ने कहा कि परस्पर प्रेम व सहयोग से समाज जुड़ता है और बैर रखने से टूटता है। उन्होंने गांववासियों से अपील की कि राष्ट्रगान के समय सावधान खड़े होने की गरिमा का विशेष ध्यान रखें। श्री शर्मा ने कहा कि वे अपने हलके के सभी 102 गांवों में हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल के आशीर्वाद से सभी प्रकार के अनूठे विकास कार्यों को पूरा करवाने में स्वयं को सक्षम महसूस कर रहे हैं। उनके क्षेत्र में दूधौला कौशल विश्वविद्यालय की स्थापना होने से भी क्षेत्र के युवाओं को अपना उज्जवल भविष्य बनाने में सहज ही कामयाबी मिलेगी।

पर्यटन विकास में हरियाणा को अवार्ड

इंडिया टुडे स्टेट ऑफ स्टेट्स कन्क्लेव-2017

हरियाणा के मख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने कहा कि राज्य सरकार ने प्रदेश में किसानों को उनके उत्पाद के लाभप्रद मूल्य सुनिश्चित करने के लिए सब्जियों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) शुरू करने की योजना बनाई है। मुख्यमंत्री ने यह बात नई दिल्ली में इंडिया टुडे स्टेट ऑफ स्टेट्स कन्क्लेव-2017 समारोह में केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी से समावेशी विकास और पर्यटन विकास के क्षेत्र में इंडिया टुडे स्टेट ऑफ स्टेट्स अवार्ड प्राप्त करने के उपरांत समारोह को संबोधित करते हुए कही।

अन्त्योदय दर्शन विकास का आदर्श

उन्होंने अपने अभिभाषण के दौरान विकास के विभिन्न पहलुओं पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा, 'हम पंडित दीन दयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित अन्त्योदय दर्शन को एक समावेशी विकास के आदर्श के रूप में अपना रहे हैं, क्योंकि उनका उद्देश्य समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्ति तक समाज कल्याण की योजनाओं का लाभ पहुंचाना है।'

हरियाणा का युवा आशावादी बना है

रोजगार से भ्रष्टाचार को समाप्त करने और केवल योग्यता के आधार पर नौकरियां सुनिश्चित करने के लिए उठाए गये कदमों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इससे हरियाणा का युवा आशावादी बना है और वह प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए शिक्षा ग्रहण करने व सीखने की तरफ प्रोत्साहित हुआ है।

सरकार की अनेक उपलब्धियां

'प्रदेश में पहली बार सत्ता में आने वाली पार्टी के एक नये मुख्यमंत्री का अभी केवल तीन वर्ष का कार्यकाल हुआ है। पहले दो वर्षों के दौरान पिछली सरकारों के गड्ढे भरे गये। इस प्रकार, वास्तविक रूप से मेरी सरकार ने केवल एक वर्ष कार्य किया है और अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं। उन्होंने कहा, आप कल्पना कर सकते हैं कि अगले दो वर्षों के बाद हरियाणा कैसा होगा।'

लिंगानुपात में उल्लेखनीय सुधार

प्रदेश का चहुंमुखी विकास सुनिश्चित करने के लिए पिछले राजनैतिक मतभेद से ऊपर उठने की आवश्यकता पर बल देते हए मुख्यमंत्री ने कहा कि मैंने हरियाणा के प्रत्येक हिस्से का एक समान विकास सुनिश्चित करने के लिए प्रदेश के सभी 90 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों का दौरा किया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के ठोस प्रयासों और लोगों के सक्रिय सहयोग के परिणामस्वरूप प्रदेश के लिंगानुपात में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

हमारा संविधान : क्या, क्यों और कैसे

सुभाष काश्यप

आज से 71 साल पहले 14-15 अगस्त 1947 की आधी रात को, हमारा देश आजाद हुआ। अब हम अपने आप यह तय कर सकते थे कि हमारी सरकार कैसी हो, कैसे चुनी जाए और देश का शासन कैसे चले।

किसी देश की शासन व्यवस्था के बुनियादी सांचे-ढांचे को संविधान कहते हैं। हमारे देश का एक लिखित संविधान है। यह हमारे लंबे स्वाधीनता-संघर्ष की उपज है। इसे हमने अपनी संविधान सभा में 1946-1948 के बीच बनाया। यह संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। इसी दिन से हम एक लोकतंत्रात्मक गणराज्य बन गए अर्थात ऐसा राज्य जिसमें जनता के अपने चुने हुए प्रतिनिधियों का राज हो।

संविधान राज्य के प्रमुख अंगों की स्थापना करता है। विधानपालिका यानी संघ की संसद तथा राज्यों की विधान सभाएं कानून बनाती हैं। कार्यपालिका यानी मंत्रिमंडल कानूनों के अनुसार सरकार चलाती है। न्यायपालिका अर्थात अदालतें विवादों का निपटारा और न्याय करती हैं। संविधान इन प्रमुख अंगों के अलग-अलग अधिकार क्षेत्रों और आपस के तथा जनता के साथ संबंधों की व्याख्या करता है। राज यों और भारत संघ के बीच संबंधों का स्पष्टीकरण करता है। उनके बीच शक्तियों का बंटवारा करता है तथा परस्पर अधिकारों के दायरे में बांधता है। 1992 में हुए ताजा संविधान संशोधनों के बाद स्थानीय निकायों अर्थात ग्राम पंचायतों, जिला परिषदों तथा नगरपालिकाओं के अधिकार और कार्य क्षेत्र भी संविधान में ही दे दिए गए हैं।

पंचायतों से लेकर पार्लियामेंट अथवा संसद तक और पंचायत अध्यक्ष से लेकर राष्ट्रपति तक सभी संविधान से बंधे हैं। संविधान के अनुसार ही देश का सारा शासन तंत्र चलता है। इसलिए प्रत्येक भारतवासी के लिए जरूरी है कि वह अपने संविधान के बारे में जाने। यह क्या है, क्यों है, कैसे चलता है? इसके अनुसार हमें क्या अधिकार मिलते हैं? हमारे क्या कर्त्तव्य बनते हैं? हर संविधान की सफलता उसे चलाने वाले लोगों के आचरण पर निर्भर होती है।

संविधान को समझने के लिए, उसके अतीत को जानना जरूरी है। भारत के संविधान की कहानी बड़ी रोचक है। प्राचीन भारत में शासक 'धर्म' से बंधे हुए

थे। प्रजा को भी 'धर्म' का पालन करना होता था। 'धर्म' किसी मजहब, संप्रदाय या पंथ से जुड़ा हुआ नहीं था। आजकल जिसे कानून का या विधि का शासन कहते हैं वही धर्म के शासन की भावना थी। राजधर्म ही संविधान था।

लोकतंत्र की परंपरा

भारत में शासन तंत्र और संविधान के प्रथम सूत्र मिलते हैं वेद, स्मृति, पुराण, महाभारत, रामायण और फिर बौद्ध और जैन साहित्य में, कौटिल्य के अर्थशास्त्र और शुक्रनीति में। प्राचीन भारत में 'सभा', 'समिति' और 'संसद' के अनेक उल्लेख मिलते हैं। कितने ही गणतंत्रों के होने के प्रमाण मिलते हैं। संसार के सबसे पुराने गणतंत्र भारत में ही जन्मे-पनपे।

सन् 1757 में प्लासी की लड़ाई में विजय के साथ भारत में अंग्रेजी राज की नींव पड़ी। 1857 का व्यापक सिपाही विद्रोह अंग्रेजी राज के विरुद्ध भारतीयों का प्रथम स्वाधीनता संग्राम था। विद्रोह को निर्ममता के साथ दबा दिया गया किंतु इसके साथ ही भारत में कंपनी शासन समाप्त हो गया। कंपनी के अधीन क्षेत्रों पर सीधे ब्रिटिश सरकार का शासन लागू हो गया।

संवैधानिक सुधारों पर विचार करने के लिए अंग्रेजों का साइमन कमीशन भारत में आया। ब्रिटिश शासकों ने कहा कि भारतीयों में अपने लिए संविधान बनाने की क्षमता नहीं है। इस चुनौती के जवाब में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में बनी समिति ने एक संविधान का प्रारूप तैयार किया जो 'नेहरू रिपोर्ट' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 31 दिसंबर 1929 को जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य का लक्ष्य अपनाया। 1930 से हर वर्ष 26 जनवरी को स्वाधीनता का प्रण दोहराया जाने लगा। 26 जनवरी तब तक स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाई जाती रही जब तक देश स्वाधीन न हो गया। संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर 1946 को ही हो गई थी। 15 अगस्त 1947 से संविधान सभा स्वाधीन भारत की पूर्ण प्रभुसत्ता-संपन्न संविधान सभा बन गई। डा. राजेन्द्र प्रसाद इसके अध्यक्ष थे और डा. भीमराव आंबेडकर संविधान की प्रारूप समिति के सभापति। यह कोई मामूली बात नहीं थी कि संविधान सभा एक ऐसा संविधान बना सकी जो इस विशाल देश के एक छोर से दूसरे छोर तक लागू हो तथा कितनी ही विविधताओं के बीच एकता पुष्ट करने में सफल हो। डॉ.आंबेडकर ने 25 नवंबर 1949 को संविधान सभा में बोलते हुए बड़े महत्वपूर्ण शब्दों में कहा था, ''मैं महसूस करता हूं कि संविधान चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, यदि वे लोग जिन्हें संविधान को चलाने का काम सौंपा जाएगा, खराब निकले तो निश्चित रूप से संविधान भी खराब सिद्ध होगा। दूसरी ओर, संविधान चाहे कितना ही खराब क्यों न हो, यदि उसे चलाने वाले अच्छे लोग हुए तो संविधान अच्छा सिद्ध होगा।''

26 नवंबर 1949 को डा. राजेन्द्र प्रसाद ने अपने समापन भाषण में स्मरणीय शब्दों में देशवासियों को चेतावनी देते हुए कहा था कि कुल मिलाकर संविधान सभा एक अच्छा संविधान बनाने में सफल हुई थी और उन्हें विश्वास था कि यह संविधान देश की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेगा। संविधान पर सदस्यों द्वारा 24 जनवरी 1950 को हस्ताक्षर किए गए। इसके बाद राष्ट्रगान के साथ अनिश्चित काल के लिए संविधान सभा स्थगित कर दी गई। किंतु, इसके साथ संविधान की यात्रा समाप्त नहीं हुई। यह तो कहानी का आरंभ था। इसके बाद संविधान का कार्यकरण शुरू हुआ। अदालतों द्वारा इसकी व्याख्या हुई। विधानपालिका द्वारा इसके अंतर्गत कानून बने। सांविधानिक संशोधन हुए। इन सबके द्वारा संविधान निर्माण की प्रक्रिया जारी रही। संविधान विकसित होता रहा, बदलता रहा। समय-समय पर जिस-जिस प्रकार और जैसे-जैसे लोगों ने संविधान को चलाया, वैसे ही वैसे नए-नए अर्थ इसे मिलते गए।

(नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'भारत का संविधान' से साभार)

वह बूढ़ा देवता

सुधा मूर्ति

कुछ साल पहले मैं तमिलनाडू के तंजावूर जिले से होकर गुजर रही थी। आसमान में बादल छाने लगे, अंधेरा गहराने लगा था। देखते-देखते तेज बारिश शुरू हो गयी। सड़क पर पानी भरने लगा। ड्राइवर ने गाड़ी एक गांव में सड़क के किनारे रोक दी। इस बारिश में आगे बढ़ना मुश्किल होगा, उसने कहा। गाड़ी में बैठने से बेहतर होगा हम आस-पास कोई ठीक जगह तलाश लें। अनजान जगह, अपरिचित लोग, ऐसी परिस्थिति में मेरी चिंता बढ़ती जा रही थी। फिर भी मैंने छतरी खोली और बारिश के बीच गांव की ओर बढ़ने लगी, जिसका नाम तक मुझे नहीं पता था। बिजली गुल हो चुकी थी, बारिश व अंधेरे के बीच संभल-संभल कर कदम बढ़ाना था। कुछ दूर चलने पर धुंध के बीच एक छोटा-सा मंदिर उभरने लगा। मुझे लगा ठहरने की यह ठीक जगह हो सकती है। मैं उस ओर आधे रास्ते थी कि बारिश और तेज हो गई। तेज हवा के कारण छतरी उड़ गई, मैं पूरी तरह नहा उठी। पानी पोंछते हुए मैंने मंदिर में प्रवेश किया। मंदिर में कदम रखा ही था कि एक बूढ़ी आवाज़ कानों में टकराई। तमिल भाषा मुझे नहीं आती, लेकिन उस आवाज का अर्थ स्पष्ट हो रहा था। वह आवाज़ मुझे बुला रही थी। अपनी तमाम यात्राओं के दौरान मैंने महसूस किया है कि हृदय से निकली आवाज का अर्थ भाषा के बगैर भी समझा जा सकता है। मंदिर में अंधेरे के बीच लगभग 80 साल का एक बूढ़ा बैठा था। उस बूढ़े ने कुछ कहा और मेरी तरफ एक पुराना परंतु साफ-सुथरा तौलिया बढ़ा दिया। चेहरे और सिर का पानी पोछते समय मैंने पाया कि बूढ़ा अंधा है। आस-पास की चीज़ों से या कई चीजों के अभाव से उनकी गरीबी साफ दिख रही थी। मंदिर भी साधारण था। साज-स'ाा का कोई सामान नहीं, शिवलिंग पर एक बेल पत्र के अलावा कुछ नहीं था। रोशनी के नाम पर एक तेल का दिया टिमटिमा रहा था।

उस मद्धिम रोशनी के बीच मेरे भीतर एक अद्भुत तरंग उठी। यह पहला अनुभव था जब मैंने खुद को ईश्वर के इतने पास पाया हो। कुछ देर बाद उस बूढ़े ने संध्याकालीन मंगला आरती शुरू की। टूटी-फूटी भाषा में मैंने भी साथ दिया। आरती संपन्न होने के बाद सौ रुपये का नोट दक्षिणा के रूप में थाल में डाल दिया। रुपया स्पर्श करते ही बूढ़े ने हाथ खींच लिया। उसके चेहरे का रंग उड़ गया। बड़ी विनम्रता के साथ उसने कहा, अम्मा आमतौर पर मुझे यहां दस रुपये का नोट मिलता है,

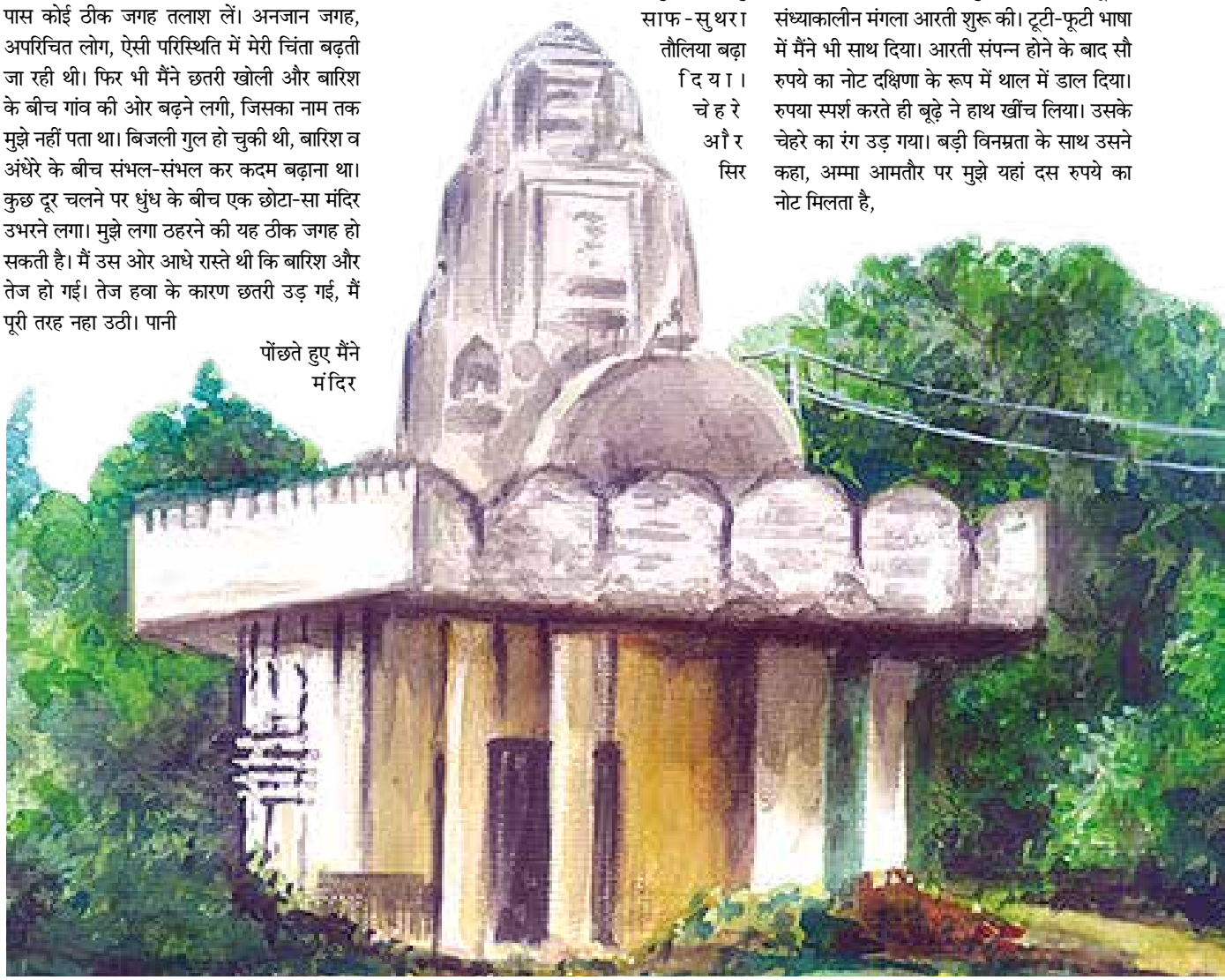

लेकिन यह नोट...! आप कोई भी हों, मंदिर में पैसा नहीं, श्रद्धा बड़ी होती है। आप कौन हैं, मुझे पता नहीं लेकिन मेरे लिए आप यहां आने वाले तमाम शिव-भक्तों की तरह ही हैं। कृपया यह नोट वापस ले लीजिए। मैंने नोट तो वापस ले लिया। परंतु मैं समझ नहीं पा रही थी कि आखिर अब क्या करूं। फिर मैंने उसकी पत्नी से विनती की कि वह उसे समझाए और यह पैसा रख लें। लेकिन वह चुपचाप खड़ी रही। आमतौर पर पत्नियां ऐसे मामलों में पुरुषों को उकसाती हैं। लेकिन यहां स्थिति ठीक विपरीत थी। वह तो अपने पति की ही तरफदारी करने लगी। मैं हार कर वहीं बैठ गई। बाहर हवा और बारिश का खेल जारी था और यहां हम अपनी बातों में लग गए। मैंने उनके बारे में पूरी जानकारी ली। पता चला कि उस मंदिर के अलावा उनके पास कोई आश्रय नहीं है। उनकी देखभाल करने वाला भी कोई नहीं है।

सब कुछ जान लेने के बाद मैंने उनसे कहा, तुम दोनों बूढ़े हो। आगे पीछे तुम्हारी देखभाल के लिए भी कोई नहीं है। बुढ़ापे में कभी-कभी दवा की भी जरूरत पड़ती है। यह गांव कस्बे के काफी दूर है। इसलिए मैं तुम्हारे लिए कुछ करना चाहती हूं। उन दिनों हमने एक वृद्धावस्था पेंशन योजना शुरू की थी। मुझे लगा कि आरती की थाली से सौ रुपया लौटा देने वाले दोनों उस योजना के लिए उपयुक्त पात्र हैं। इस बार बूढ़ी महिला बोली, कृपया सुझाव बताएं। आप क्या सोचते हैं हमारे बारे में। मैंने कहा मैं कुछ पैसे भेजूंगी। इसे पास के डाकघर या किसी बैंक में जमा करा देना। हर महीने मिलने वाले उसके ब्याज से तुम्हारी ज़रूरतें पूरी होती रहेंगी। यदि कभी बीमार पड़ जाओ तो मूल भी निकाल कर खर्च कर सकते हो। मेरी बातें सुनकर बूढ़ा मुस्कराया। अब उसका चेतरा बल्ब की रोशनी से भी अधिक दमक उठा। कहा, तुम उम्र में हमसे बहुत छोटी हो, शायद अनुभव भी कम है। भला इस उम्र में हमें पैसे की क्या जरूरत? भगवान शिव तो बैद्यनाथ भी हैं। महावैद्य हैं, सबसे बड़े डॉक्टर। इस गांव में वैसे भी तरह-तरह के लोग रहते हैं। हम पूजा करते हैं, बदले में लोग चावल दे जाते हैं। यदि हम बीमार पड़ते हैं तो यहां के स्थानीय डॉक्टर दवा दे जाते हैं। हमारी जरूरतें बहुत कम हैं। एक अनजान व्यक्ति से पैसे भला क्यों लूं? इन पैसों को लेकर बैंक में रख दूं तो बहुत से लोग परेशान करने आने लगेंगे। नई मुसीबतें मोल क्यों लूं? तुमने दो अपरिचित बूढ़ों की मदद की बात सोची, निश्चित रूप से तुम बहुत दयालु हो। लेकिन हमारे भीतर संतोष है। हम अपने तरीके से जीते हैं। हमें और कुछ नहीं चाहिए। ठीक उसी समय बिजली आ गयी और पूरा मंदिर उजाले से भर गया। अब पहली बार मैंने दोनों को ठीक से देखा। उनके चेहरे पर शांति व प्रसन्नता का अद्‌भुत भाव था। मेरे जीवन में यह पहला अनुभव था कि किसी व्यक्ति ने मदद लेने से मना किया। मैं उनकी हर बात से सहमत तो नहीं हूं, लेकिन इतना स्पष्ट है कि उनके भीतर के संतोष के कारण उनके चेहरे पर शांति थी। यह संतोष किसी को भौतिक विकास की ऊंचाई तो नहीं दे सकता, परंतु जीवन में एक-न-एक दिन हर किसी को इसकी जरूरत महसूस होती ही है। दुनिया के तमाम रंग हैं, फिर भी उस सुनसान रास्ते के एक कोने में एक छोटे से मंदिर में रहने वाले इस बूढ़े का रंग निराला है। इस देवता से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

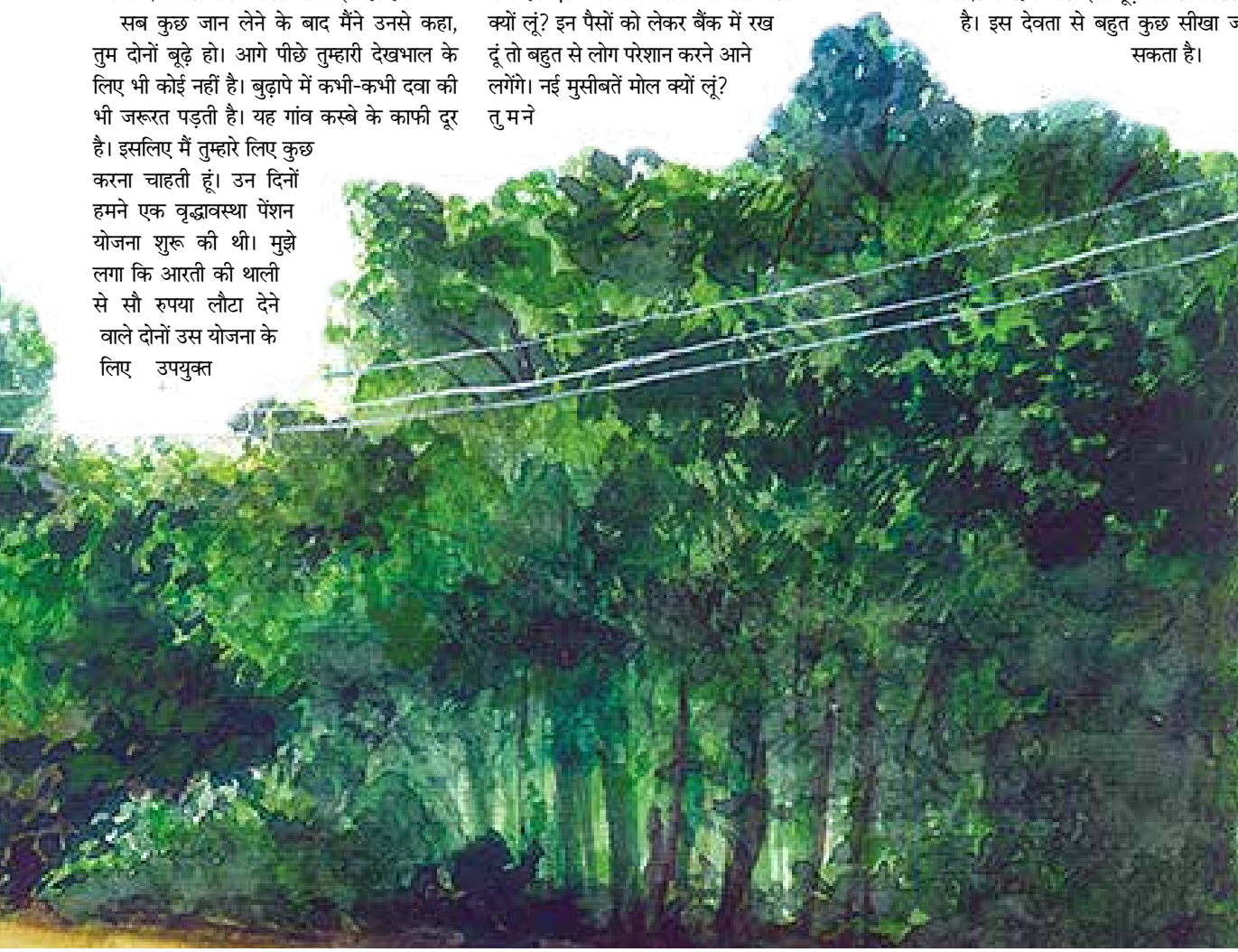

हरियाणा में प्राथमिक शिक्षा होगी और मजबूत

हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री राम बिलास शर्मा ने कहा कि हरियाणा में प्राथमिक शिक्षा प्रणाली को और अधिक मजबूत करना राज्य सरकार की प्राथमिकता है और इस दिशा में सतत रूप से प्रयास जारी हैं। श्री शर्मा नई दिल्ली में केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री व केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड के अध्यक्ष श्री प्रकाश जावडेकर की अध्यक्षता में हुई 65 वीं केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड की बैठक को संबोधित कर रहे थे।

शिक्षा का विकास व विस्तार

उन्होंने हरियाणा में शिक्षा के विकास एवं विस्तार के लिए राज्य सरकार द्वारा क्रियान्वित की गई योजनाओं का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि हरियाणा सरकार शिक्षा के साथ-साथ को खेलों के हब के रूप में विकसित करने के लिए योजनाबद्ध रूप से कार्य कर रही है। खेलों के विकास के साथ सामानांतर रूप से कला एवं संस्कृति के विकास के लिए भी हरियाणा में सूर्यकवि पंडित लख्मीचंद के नाम पर एक विश्वविद्यालय भी स्थापित किया जाएगा।

वित्तीय सहायता होगी उपलब्ध

शिक्षा मंत्री ने कहा कि वे स्वयं व शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारी सप्ताह में एक घंटा किसी विद्यालय या शिक्षण संस्थान में कक्षाओं का अवलोकन करते हैं। आगामी समय में वे प्रतिदिन एक घंटा कक्षाओं का अवलोकन करेंगे। हरियाणा के शिक्षा मंत्री द्वारा हरियाणा में शिक्षा के गुणवत्तापरक विकास की दिशा में केंद्र से वित्तीय सहायता के संदर्भ में दिए गए वक्तव्य पर प्रतिक्रिया करते हुए केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री ने कहा कि शिक्षा की गुणवत्ता के लिए उल्लेखनीय कार्य करने वाले राज्यों के लिए केंद्र सरकार द्वारा योजना बनाई जा रही है जिसके तहत राज्यों को वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी।

केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड की बैठक को केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती मेनका संजय गांधी, केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री थावर चंद गहलौत, केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री श्री मुख्तार अब्बास नकवी, केंद्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री सत्यपाल सिंह व केंद्रीय युवा मामले एवं खेल राज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौर ने भी संबोधित किया।

कनाडा ने दिखाई हरियाणा में निवेश में रूचि

राज्य सरकार की सक्रिय व निवेशक-मैत्री अप्रोच की सराहना करते हुए कनाडा ने हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में निवेश करने में गहरी रुचि दिखाई है। ई.सी.सी.सी के अध्यक्ष श्री कंवर धंजल के नेतृत्व में इंडो कनाडा चेंबर ऑफ कार्मस (ई.सी.सी.सी.) के एक शिष्टमंडल ने यहां मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल से भेंट की और उन्हें व राज्य सरकार के अधिकारियों को परस्पर सम्बंधो को मजबूत बनाने और निवेश अवसरों की संभावनाओं की तलाश करने के लिए कनाडा आने के लिए आमंत्रित किया।

युवाओं को मिलेगा रोजगार

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य निवेशकों को हर संभव सहायता उपलब्ध करवाएगा। उन्होंने ऐसी परियोजनाओं और क्षेत्रों पर बल दिया जो न केवल निवेश सृजित करेंगे बल्कि युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित करने के साथ-साथ प्रदेशभर का संतुलित विकास भी करेंगी। उन्होंने कहा कि एक मैकेनिजम स्थापित किया जाएगा जो दोनो पक्षों के बीच लगातार बातचीत को सुनिश्चित करेगा। प्राथमिकता के क्षेत्र होने के नाते प्रदेश में कौशल विकास और कृषि व खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में व्यापक संभावनाएं हैं। उन्होंने कहा कि राज्य मूल्य आश्वस्त करके और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को विकसित कर कृषि क्षेत्र की सहायता करने और उसे बढ़ावा देने में रूचि रखता है।

भारत व कनाडा के बीच व्यापार को बढ़ावा देना

श्री कंवर धंजल ने कहा कि चार दशक पहले स्थापित ई.सी.सी.सी. एक नॉन-प्रोफिट, नॉन पारटिशन संगठन है। इसके मिशन में बिजनेस, व्यवसाय और इंडो-कैनेडियन की सामान्य भलाई को बढ़ावा देना, इंडो-कैनेडियन बिजनेस और व्यावसायिक समुदाय के अत्यधिक सहयोग के लिए सकारात्मक जागरूकता उत्पन्न करना, कनाडा और भारत के बीच बिजनेस व व्यापार अवसरों में सहायता करना तथा विश्वभर में इंडियन डाइसपोरा को बढ़ावा देना शामिल है। बैठक में विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने खाद्य प्रसंस्करण, सूचना प्रौद्योगिकी, आतिथ्य सत्कार, विधिक सेवाएं, कौशल विकास पर विचार-विमर्श किया और निवेश और संयुक्त व्यापार के अवसरों के संबंध में अपने विचारों का आदान-प्रदान किया। शिष्टमंडल ने कहा कि कनाडा के कुछ विशेषज्ञ क्षेत्रों का राज्य में प्रभावी रूप से उपयोग किया जा सकता है। इसमें कौशल विकास, अर्बन फार्मिंग और कृषि व खाद्य प्रसंस्करण शामिल हैं।

निवेश करने की व्यापक संभावनाएं

उद्योग विभाग के प्रधान सचिव श्री सुधीर राजपाल ने शिष्टमंडल को राज्य सरकार द्वारा उठाए गए विभिन्न कदमों की जानकारी दी और बल दिया कि हरियाणा में एमएसएमई में निवेश करने की व्यापक संभावनाएं हैं क्योंकि ये रोजगार का प्रमुख स्रोत हैं।

ऐतिहासिक धरोहरों को मूलरूप देकर पर्यटन के तौर पर किया जाएगा विकसित

हरियाणा के जिला महेंद्रगढ़ व रेवाड़ी की ऐतिहासिक धरोहरों को मूलरूप देकर पर्यटन के तौर पर विकसित किया जाएगा और राजस्थान की सीमा से सटे इन जिलों की ऐतिहासिक धरोहरों की पहचान को कायम रखने हेतु कुल अुनमानित 147 करोड़ रुपए की राशि खर्च की जाएगी। यह जानकारी हरियाणा पर्यटन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव विजयवर्धन ने महेंद्रगढ़ किला व माधोगढ़ फोर्ट का निरीक्षण करने उपरांत महेंद्रगढ़ में दी।

आकर्षण का केंद्रः उन्होंने कहा कि महेंद्रगढ़ व रेवाड़ी जिलों की कई ऐतिहासिक धरोहरों को उनका मूलस्वरूप प्रदान करने के लिए केंद्र सरकार की ओर से 99 करोड़ रूपये तथा हरियाणा सरकार की ओर से 48 करोड़ रुपये की अनुमानित राशि खर्च की जाएगी ताकि ये धरोहरें पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र भी बन सकें।

पर्यटन के तौर पर विकसितः उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल एवं पर्यटन मंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा का प्रयास है कि समूचे प्रदेश को पर्यटन के तौर पर विकसित किया जाए। इसी कड़ी में राजस्थान की सीमा के साथ लगते महेंद्रगढ़ व रेवाड़ी जिलों की ऐतिहासिक धरोहरों को उनका मूलस्वरूप प्रदान करके इन क्षेत्रों को पर्यटन के तौर पर विकसित किया जाएगा।

टूरिज्म इन्फ्रास्ट्रक्चर हेरिटेज सर्किटः उन्होंने कहा कि इसी उद्देश्य स्वरूप महेंद्रगढ़, नारनौल व रेवाड़ी की इन धरोहरों की फिजिकल वेरीफिकेशन की जा रही है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के अंतिम छोर पर बसे एवं राजस्थान की सीमा से सटे महेंद्रगढ़ व रेवाड़ी जिलों की आठ धरोहरों की कायापल्ट करके टूरिज्म इन्फ्रास्ट्रक्चर हेरिटेज सर्किट के तौर पर विकसित किया जाएगा जिनमें महेंदगढ़ फोर्ट, माधोगढ़ फोर्ट, नारनौल का रायमुकंद का छत्ता, तख्त बओली, ढ़ोसी की पहाड़ी, रेवाड़ी का बड़ा तालाब, सोला राही शिव धरोहर तथा सिटी वाईड इन्फ्रास्ट्रक्चर का जीर्णोद्धार शामिल हैं।

उपभोक्ताओं को मिलेगा दो किलोवाट लोड तक का नया घरेलू कनैक्शन

हरियाणा सरकार ने सौभाग्य योजना के अंतर्गत सार्वभौमिक विद्युतीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में दो सौ रुपये की राशि जमा करवाने पर उपभोक्ता को दो किलोवाट लोड तक का नया घरेलू कनैक्शन देने का निर्णय लिया है। इस संबंध में जानकारी देते हुए बिजली निगमों के प्रवक्ता ने बताया कि बिजली का कनैक्शन जारी होने के पश्चात कनैक्शन की शेष राशि दो महीने में आने वाले बिजली के बिल के साथ ली जाएगी। उन्होंने बताया इस योजना को राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में लागू करने के लिए हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने घोषणा की है।

उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री के निर्देशों के तहत यह निर्णय लिया गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में दो किलोवाट लोड तक के नए घरेलू कनैक्शन को दो सौ रुपये की राशि के भुगतान पर जारी किया जाएगा और शेष राशि दो महीने में आने वाले बिजली के बिल के साथ 12 समान किस्तों के माध्यम से ली जाएगी। उन्होंने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों का तात्पर्य यहां पर ग्राम पंचायत के अंतर्गत आने वाले ग्रामीण क्षेत्र से हैं।

प्रवक्ता ने बताया कि ग्राम पंचायतों के अंतर्गत आने वाले ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार के नए घरेलू कनैक्शनों को जारी करने के लिए विशेष कैंप भी आयोजित किए जाएंगें ताकि ज्यादा से ज्यादा से संख्या में ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को दो किलोवाट तक के बिजली के नए घरेलू कनैक्शन जारी किए जा सकें।

लेखकों से निवेदन

- हरियाणा सरकार की मासिक पत्रिका हरियाणा संवाद/ कृषि संवाद के लिए रचनाएं आमंत्रित हैं।
- साफ़ लिखी हुई अथवा शुद्ध टाइप की हुई मौलिक रचनाएं ही भेजें।
- रचनाएं हिंदी के कृतिदेव 10, चाणक्य फॉण्ट में या यूनिकोड में ही टाइप करके भेजें।
- मौलिकता स्वयं रचनाकार की विश्वसनीयता है। इसके अनुपालन के लिए वे स्वयं ख्याल रखें।
- सामग्री चयन ,सम्पादन और प्रकाशन का अंतिम निर्णय संपादक मंडल का होगा।
- रचना के साथ चित्र केवल डिजिटल फॉर्म में ही भेजें। वर्ड की फाइल पर चित्र चिपका कर मत भेजें।
- पुस्तक समीक्षा के लिए दो पुस्तकें भेजना अनिवार्य है।

रचनाएं निम्न पते पर प्रेषित करें

सम्पादक
संवाद
एस सी ओ - 23 पहली मंज़िल
सेक्टर -7 सी
मध्य मार्ग - चंडीगढ़

निरोगी रहना है तो पीएं गरम पानी

हम सभी जानते हैं कि हमारे शरीर के लिये गरम पानी पीना जरूरी है। सलाह दी जाती है कि दिन में कम से कम इंसान को सात से आठ गिलास पानी तो पीना ही चाहिये। ज्यादातर लोग दिन भर सादा पानी ही पीना पसंद करते हैं, लेकिन रिसर्च के अनुसार हमें गरम पानी ही पीना चाहिये।

- गरम पानी से निकलने वाले भाप से साइनस से पैदा होने वाले सिरदर्द में आराम मिलता है। गरम पानी पीने से म्यूकस नहीं जमता और नाक खुल जाती है।
- गर्म पानी पीने से पाचन क्रिया अच्छी रहती है और यह गैस की समस्या में भी राहत देता है। खाना खाने के बाद एक कप गर्म पानी पीने का आदत जरूर डालें। ऐसा करने से खाना जल्दी पच जाता है और पेट हल्का रहता है।
- गरम पानी पीने से नसों को आराम मिलता है। जब आपका नर्वस सिस्टम शांत रहता है तो शरीर में दर्द नहीं होता और आपका पूरा दिन अच्छा बीतता है। जिन लोंगो को गठिया है, उन्हें तो गरम पानी जरूर पीना चाहिये।
- कब्ज दूर करे शरीर में पानी की कमी हो जाने की वजह से कब्ज की समस्याा पैदा हो जाती है।
- अगर आपका वेट लगातार बढ़ रहा है तो गर्म पानी में शहद और नींबू मिलाकर लगातार तीन महीने तक पीएं। आपको फर्क जरूर महसूस होगा।
- शरीर को सुचारू रूप से चलाने के लिए खून का संचार पूरी बॉडी में सही से होना बहुत जरूरी है और इसमें गर्म पानी पीना बहुत फायदेमंद रहता है। अगर शरीर में सही तरह से ब्लड सर्कुलेशन होगा तो हृदय की बीमारी कभी नहीं होगी।
- जब आप रोज गरम पानी पीएंगे तो आपके शरीर का एंडोक्राइन सिस्टडम एक्टिवेट हो जाएगा और आपको पसीना आना शुरू हो जाएगा।
- गरम पानी पीने से टिशू तक ब्लड फ्लो होने लगता है, जिससे शरीर की मासपेशियां रिलैक्स हो जाती हैं। इससे शरीर का कहीं का भी दर्द क्योल ना हो, वह दूर हो जाता है। हमारी मांसपेशियों का 80 प्रतिशत भाग पानी से बना हुआ है इसलिए गर्म पानी से मांसपेशियों की ऐंठन भी दूर होती है।
- अगर आपको ऑफिस के काम की वजह से या फिर किसी अन्य कारण से स्ट्रेनस होता है, तो गरम पानी पिएं। गरम पानी के प्रभाव से स्ट्रेस लेवल कम हो जाता है।

बढ़ाइए अपना सामान्य ज्ञान

1. 9 जनवरी 2018 को जारी प्रसारण के अनुसार भारत का सबसे तेज कंपयूटर कौन सा है।
2. तुंगभ्रदा स्टील प्रोडक्ट लिमिटेड किस भारतीय राज्य में स्थित है।
3. भारतीय रेल संग्राहलय किस राज्य में स्थापित है।
4. जगद्गुरु रामभ्रदाचार्य विकलांग विश्वविद्यालय किस राज्य में है।
5. देश का प्रथम उच्च जोखिम वाले गर्भवस्था पोर्टल की सेवा का प्रांरभ किस राज्य से हुआ।
6. विश्व का प्रथम देश कौन सा है जहां महिलाओं और पुरुषों के लिए समान वेतन अधिकार नियम लागू किए गए हैं।
7. कौन से राज्य में भवन निर्माण पर सोलर फोटोवोल्टेइक पावर पांइट लगाना आवश्यक है।
8. कौन से राज्य में ग्रामीण सेवा हेतु प्रथम एटीएम डेस्कटॉप सेवा आरंभ की गई है।
9. कौन से देश में हाल ही में विश्व के सबसे बड़े बर्फ त्यौहार का आयोजन किया गया।
10. देश के दूसरे भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान की स्थापना किस राज्य में की जा रही हैं।
11. आजाद पट्टन जल विद्युत योजना कौन से देश में है।
12. आदि शंकरा संदेश वाहिनी मोबाइल सेवा कौन से राज्य से संचालित की जा रही है।

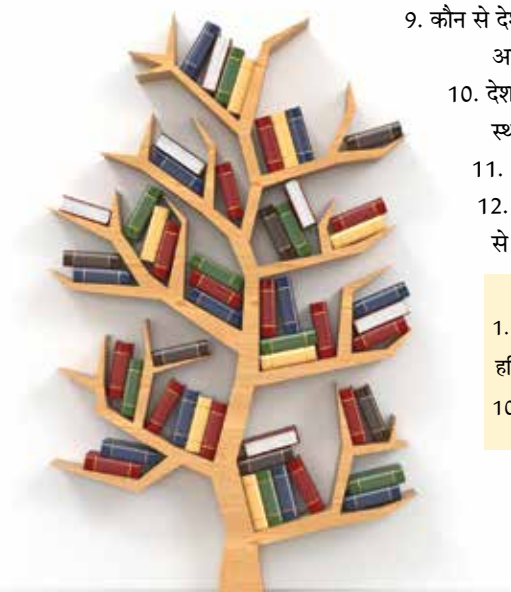

उत्तर

1. प्रत्यूष 2. कर्नाटक 3. दिल्ली 4. चित्रकुट, उत्तर प्रदेश 5. हरियाणा 6. आइसलैंड 7. हरियाणा 8. आंध्र प्रदेश 9. चीन 10. अरूणाचल प्रदेश 11. पाकिस्तान 12. केरल

पाठकों से संवाद

बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र हमें मिल रहे हैं, **हरियाणा संवाद** को नया रूप देने और ज्यादा उपयोगी बनाने में पाठकों की इस मदद के लिए हम आभारी हैं। हरियाणा के विकास एवं चेतना की पत्रिका **हरियाणा संवाद** व इसका परिशिष्ट **कृषि संवाद** राज्य के आम आदमी तथा उसकी सरकार के बीच संपर्क और संवाद का सूत्र है। समाज और उसके प्रतिनिधियों के बीच संवाद के इस सूत्र की उपयोगिता बढ़ाने के लिए पत्रिका के पाठकों का मार्गदर्शन हमें मिलता रहे यह जरूरी है। पत्रिका में शामिल सामग्री आपको कैसी लगती है और आप उसे कितना उपयोगी पाते हैं यह सिर्फ आप ही हमें बता सकते हैं। यदि आप चाहें तो पत्रिका में किसी विषय के संबंध में जानकारी शामिल करने की सलाह भी दें। कृपया संलग्न पत्र का प्रयोग कर हमें अपनी राय बताएं ताकि हम आपकी पत्रिका को आपके लिए और ज्यादा उपयोगी बना सकें। आपकी राय और सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

सूचनाः जिन पाठकों का पत्र व्यवहार का पता बदल गया है वे कृपया अपने नए पते की सूचना अवश्य दें जिससे उनके नए पते पर पत्रिका भेजी जा सके। संपर्क के लिए फोन न. 0172-5055971, 5055979

पाठकों की प्रतिक्रिया

1. क्या आपको हर महीने हरियाणा संवाद पत्रिका मिलती है?

हां ☐ नहीं ☐

2. क्या आपको हरियाणा संवाद/कृषि संवाद के लेख पसंद आते हैं ?

बहुत ज्यादा ☐ संतोषजनक ☐ असंतोषजनक ☐

3. क्या हरियाणा संवाद पाठकों को राज्य के विकास की समुचित सूचनाएं उपलब्ध करवा रहा है ?

हां ☐ नहीं ☐ कह नहीं सकते ☐

4. पत्रिका में किस तरह के लेख आपको ज्यादा पसंद आते हैं?

ऐतिहासिक व सांस्कृतिक ☐ सूचनात्मक ☐

विश्लेषणात्मक ☐ विकासात्मक ☐

5.आपको हरियाणा संवाद/कृषि संवाद का प्रस्तुतिकरण, ले-आउट, डिजाइन और प्रिंटिंग कैसी लगती है?

बहुत अच्छी ☐ अच्छी ☐ ठीक-ठीक ☐ अच्छी नहीं ☐

6. पत्रिका को और उपयोगी बनाने के लिए आपका कोई सुझाव

....
....
....
....
....

नोट : इस पेज को काट कर अपनी टिप्पणी सहित बगैर टिकट लगाएं पीछे लिखे पते पर भेजें।

भेजने वाले का नाम:...

पताः...
....

मोबाइल नंबर/दूरभाष नंबरः ....
....

ई-मेल...

प्रति

मुख्य सम्पादक
हरियाणा संवाद
एस.सी.ओ. 23 (प्रथम मंजिल)
सैक्टर-7 सी, मध्य मार्ग,
चण्डीगढ़

देखो 26 जनवरी आयी

देखो 26 जनवरी है आयी, गणतंत्र की सौगात है लायी।
अधिकार दिये हैं इसने अनमोल, जीवन में बढ़ सके बिन अवरोध।
हर साल 26 जनवरी को होता है वार्षिक आयोजन,
लाला किले पर होता है जब प्रधानमंत्री का भाषण,
नयी उम्मीद और नये पैगाम से, करते है देश का अभिभादन,
अमर जवान ज्योति, इंडिया गेट पर अर्पित करते श्रद्धा सुमन,
दो मिनट के मौन धारण से होता शहीदों को शत-शत नमन।
सौगातों की सौगात है, गणतंत्र हमारा महान है,
आकार में विशाल है, हर सवाल का जवाब है,
संविधान इसका संचालक है, हम सब का वो पालक है,
लोकतंत्र जिसकी पहचान है, हम सबकी ये शान है,
गणतंत्र हमारा महान है, गणतंत्र हमारा महान है।

Date of Posting: 25 To 29 of every month
Monthly Magazine Posted: MBU Chd.
Postal Registration No. CHD/0036/2015-2017
RNI No. 16190/69

अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव में कलाकृति बनाती छात्रा

If undelivered Please return to Director General Information, Public Relations and Languages Department
Haryana, SCO-29, IInd Floor,Sector-7C, Madhya Marg Chandigarh-160019